यातना पर विजय

रिचर्ड वूमरेंड

यातना पर विजय

लेखक
रिचर्ड वूमरेंड

अनुवादक
आलोकशील

THE LOVE IN ACTION SOCIETY
POST BOX 4532. NEW DELHI, 110016

TORTURED FOR CHRIST

Richard Wurmbrand

Hindi

Hindi Version of "Tortured For Christ"
by Richard Wurmbrand

1986
5 000 Copies
©Richard Wurmbrand

Printed and Puolished by Dr.P.P. Job for the Love in Action Society, P.B. 4532, New Delhi-16 at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, 121005. INDIA.

लेखक का परिचय

रूमानियां का प्रचारक, रिचर्ड वूमरेंड मसीह में विश्वास रखने के कारण चौदह वर्ष तक कम्युनिस्ट जेल में अमानुषिक यातनाएं सहता रहा। १९६४ में, रिहाई के बाद वह ब्रिटेन आया और यह पुस्तक लिखी।

मसीही होने से पहिले वह एक नास्तिक था। यीशु मसीह में उसको प्रसन्नता का रहस्य ज्ञात हुआ और उसने बड़े उत्साह से रूमानियां में मसीह का शुभ समाचार फैलाया।

१९४५ में, रूसी कम्युनिस्टों ने रूमानियां को भयंकर अत्याचारों के साथ कब्जे में कर लिया और नास्तिकवाद के आतक का युग आरम्भ हुआ। वूमरेंड ने गुप्तचर्च द्वारा प्रचार जारी रखा।

धार्मिक आजादी का दम भरते हुए कम्युनिस्टों ने वूमरेंड को उत्साही मसीही होने के अपराध में पकड़कर यातना कक्ष में डाला और भयंकर यातनाएं दीं। वह उस मृत्यु कक्ष में दो वर्ष तक पडा रहा जिसमें से कोई जीवित नहीं लौटा है। परन्तु वूमरेंड के मसीही दिल पर कम्युनिस्ट विजय नहीं प्राप्त कर सके। सब जानते हैं, सहनशीलता का दूसरा नाम वूमरेंड है।

कम्युनिस्टवाद से नफरत करते हुए भी वूमरेंड कम्युनिस्टों से प्रेम करता है। उसने देखा है कि कम्युनिस्ट, मसीही प्रेम के द्वारा नम्र बन जाते हैं। वे अपने पापों का अंगीकार कर यीशु मसीह को अपना उद्धार-कर्त्ता स्वीकार करते हैं।

विशेष रूप से कम्युनिस्टों में मसीही प्रचार के लिए वूमरेंड जीवित हैं।

—आलोकशील

अनुवादक द्वारा प्रस्तावना

यातना पर विजय, इस बात की घोषणा है कि मसीही प्रचार को संसार की कोई शक्ति नहीं रोक सकती। कितना भी शक्तिशाली देश एक उत्साही मसीही के सामने कुछ नहीं है। विश्व का इतिहास गवाह है—प्राचीन समय में रोम ने मसीहियत को समाप्त करने के लिये अपनी पूरी शक्ति लगा दी। लेकिन अन्त में थोड़े से मसीहियों ने रोमी शासकों के कठोर दिलों को जीतकर मसीहियत को रोम राज्य का धर्म बनाया।

मसीहियत के इतिहास में कई उतार-चढ़ाव आये परन्तु हमेशा सच्चे विश्वासी यातनाओं और परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर आतंक करने वालों को मसीह के पास लाये; मसीह के प्रेम के प्रभाव से अत्याचारी पापी स्वभाव को तज कर नये हो गये। संत पौलुस का जीवन इस कथन की पुष्टि करता है।

आज, कम्युनिस्ट देशों का लक्ष्य सारे धर्मों को उखाड़कर परमेश्वर रहित समाज बनाने का है। इसलिये, हम सब विश्वासियों को चाहिये कि कम्युनिस्टवाद की चुनौती का बुद्धिमानी और विश्वास से सामना करें।

वूमरेंड ने भी वर्तमान समय में यह सिद्ध कर दिया कि विश्वास में शक्ति है जो सारी सांसारिक शक्तियों से बढ़कर है। उसने सिद्ध कर दिया कि दुनियां के सारे ज्ञान, मसीही ज्ञान के तुल्य नहीं हैं। उसने अपने जीवन के माध्यम से समझा दिया कि मसीह में प्रसन्नता सबसे महान प्रसन्नता है। केवल वूमरेंड ही नहीं, ऐसे सैकड़ों मसीही हैं जो कम्युनिस्ट यातनाओं पर विजय प्राप्त कर अपने आदर्श आचरण तथा पूर्ण विश्वास के साथ कम्युनिस्टों के बीच प्रचार कर रहे हैं।

वूमरेंड की अन्य पुस्तकें भी, मेरा विश्वास है, दुनियां के विश्वासियों को चुनौती दे रही हैं।

—आलोकशील

लेखक का परिचय

रूमानियां का प्रचारक, रिचर्ड वूमरेंड मसीह में विश्वास रखने के कारण चौदह वर्ष तक कम्युनिस्ट जेल में अमानुषिक यातनाएं सहता रहा। १९६४ में, रिहाई के बाद वह ब्रिटेन आया और यह पुस्तक लिखी।

मसीही होने से पहिले वह एक नास्तिक था। यीशु मसीह में उसको प्रसन्नता का रहस्य ज्ञात हुआ और उसने बड़े उत्साह से रूमानियां में मसीह का शुभ समाचार फैलाया।

१९४५ में, रूसी कम्युनिस्टों ने रूमानियां को भयंकर अत्याचारों के साथ कब्जे में कर लिया और नास्तिकवाद के आतक का युग आरम्भ हुआ। वूमरेंड ने गुप्तचर्च द्वारा प्रचार जारी रखा।

धार्मिक आजादी का दम भरते हुए कम्युनिस्टों ने वूमरेंड को उत्साही मसीही होने के अपराध में पकड़कर यातना कक्ष में डाला और भयंकर यातनाएं दीं। वह उस मृत्यु कक्ष में दो वर्ष तक पडा रहा जिसमें से कोई जीवित नहीं लौटा है। परन्तु वूमरेंड के मसीही दिल पर कम्युनिस्ट विजय नहीं प्राप्त कर सके। सब जानते हैं, सहनशीलता का दूसरा नाम वूमरेंड है।

कम्युनिस्टवाद से नफरत करते हुए भी वूमरेंड कम्युनिस्टों से प्रेम करता है। उसने देखा है कि कम्युनिस्ट, मसीही प्रेम के द्वारा नम्र बन जाते हैं। वे अपने पापों का अंगीकार कर यीशु मसीह को अपना उद्धार-कर्त्ता स्वीकार करते हैं।

विशेष रूप से कम्युनिस्टों में मसीही प्रचार के लिए वूमरेंड जीवित हैं।

—आलोकशील

१

एक नास्तिक ने मसीह यीशु पर विश्वास किया

मेरा पालन पोषण ऐसे परिवार में हुआ जिसमें किसी धर्म को मान्यता नहीं थी। बचपन में मुझे धार्मिक शिक्षा नहीं मिली। मैं आरम्भ में ही अनाथ हो गया और प्रथम महायुद्ध के समय गरीबी ने आ घेरा। मैं चौदह वर्ष की अवस्था में इतना दृढ़ नास्तिक बन चुका था जितने आज के कम्युनिस्ट हैं। मैंने नास्तिकवाद की पुस्तकों का अध्ययन किया इसलिए नहीं कि मैं केवल परमेश्वर और मसीह पर विश्वास नहीं करता था परन्तु इन धारणाओं से भी नफरत करता था। इन विचारों को मनुष्य के लिए हानिकारक समझता था। मैं धर्म से घृणा रखते हुए बड़ा हुआ।

मैंने बाद में जाना कि परमेश्वर की कृपा से मैं उसका चुना हुआ आदमी हूं। मैं इसका कारण नहीं जानता था। मेरे चरित्र में ऐसा कोई गुण नहीं था जिस कारण मैं चुना जाता। मेरा चरित्र दूषित था।

मैं नास्तिक था, फिर भी न जाने क्यों चर्च की ओर आकर्षित हो जाता था। मेरे लिए चर्च में बिना प्रवेश हुए समीप से निकल जाना बड़ा कठिन था। मुझे समझ नहीं आता था, आखिर चर्च में होता क्या है। मैंने उपदेश सुने लेकिन पसन्द नही आये। मुझे यकीन था कि परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर को स्वामी मानने से मुझे घृणा थी क्योंकि उसकी मुझे आज्ञा माननी पड़ती। परमेश्वर की ग़लत धारणा जो मेरे मन में थी उससे मुझे नफ़रत थी। कहीं इस जगत में मेरे लिए भी प्रेम भरा दिल धड़कता हो, उसे पाने के लिए मैं बडा उत्सुक था। मैंने बचपन और जवानी की बहुत कम खुशियां देखी थीं।

मैं जानता था, परमेश्वर नहीं हैं, परन्तु मैं दुखी था कि ऐसा प्रेम का परमेश्वर क्यों नहीं है। एक दिन आत्मिक द्वन्द्व में, मैं केथोलिक चर्च में घुस गया, वहां लोगों को घुटने टेके और बोलते हुए पाया। मैंने सोचा, मैं उनके पास घुटने टेकूंगा और सुनू गा, वे क्या कहते हैं और प्रार्थना भी दोहराऊंगा, फिर देखूंगा क्या कुछ होता है। उन्होंने पवित्र कुंआरी मरियम से प्रार्थना की, "प्रणाम, मरियम, कृपा से परिपूर्ण।" उनके पीछे पीछे ये शब्द मैंने भी दोहराये, कुंवारी मरियम की मूर्ति की ओर देखा किन्तु कुछ भी नहीं हुआ। मैं बहुत दुखी हुआ।

और, एक रोज दृढ़ नास्तिक होते हुए भी मैंने परमेश्वर से प्रार्थना की। मेरी प्रार्थना कुछ इस तरह की थी। "परमेश्वर, मैं निःसन्देह जानता हूं कि तू नहीं है। यदि संयोग से तू है, तो इस पर मैं आपत्ति उठाता हूं; यह मेरा कर्तव्य नहीं कि मैं तुझ में विश्वास रखू परन्तु तेरा फर्ज है कि तू अपने आपको मुझ पर प्रकट करे।" मैं एक नास्तिक था परन्तु नास्तिकवाद में मुझे शान्ती नहीं मिली।

मेरे घबराहट के दिनों में, रूमानियां के पहाड़ों के एक गांव में, एक वृद्ध बढ़ई ने इस प्रकार प्रार्थना की। "मेरे परमेश्वर, मैंने पृथ्वी पर तेरी सेवा की है और मैं चाहता हूं, इसका फल पृथ्वी और स्वर्ग में मिले। मैं अपनी मृत्यु से पहिले एक यहूदी की आत्मा जीतना चाहता हूं क्योंकि यीशु भी यहूदियों में से था। यही मेरा इनाम है। मैं गरीब, वृद्ध और बीमार आदमी हूं, दूर जाकर यहूदी मनुष्य को नहीं ढूंढ़ सकता। तू ही कोई यहूदी मनुष्य को इस गांव में भेज। मैं उसको प्रभु यीशु मसीह के पास लाने में अपना सब कुछ लगा दूंगा।" इस प्रार्थना के बारे में मुझे बाद में मालूम हुआ।

रूमानियां में बारह हज़ार गांव हैं न जाने क्यों मैं उसी गांव में पहुंचा जहां मुझे कोई काम नहीं था। यह जानकर कि मैं यहूदी हूं, उस वृद्ध बढ़ई ने मुझसे अत्यन्त नम्रता का व्यवहार किया। उसने मुझ में अपनी

प्रार्थना का उत्तर पाया और बाइबल पढ़ने को दी। मैं सांस्कृतिक रुचियों के कारण बाइबल अनेक बार पढ़ चुका था। वृद्ध ने मुझे बताया कि उसकी पत्नी और वह घंटों मेरे और मेरी पत्नी के मन परिवर्तन के लिए प्रार्थना किया करते थे। जो बाइबल उन्होंने मुझे दी थी वह केवल शब्दों से ही नहीं परन्तु प्रार्थना द्वारा प्रेम की लौ से लिखी गई थी। मैं उसे बड़ी कठिनाई से पढ़ सका। मैंने अपने जीवन की यीशु के जीवन से तुलना की, वह कितना पवित्र मैं कितना अपवित्र, वह प्रेम करने वाला मैं कितना नफरत से भरा हुआ; और फिर भी उसने मुझे स्वीकार किया। यह सोचकर मैं बाइबल पर सिर रखकर रोया करता था।

मेरी पत्नी ने मन परिवर्तन के बाद ही मसीह के लिए आत्माएं जीतीं। इन आत्माओं ने और कई आत्माएं जीतीं इस प्रकार रूमानियां में एक नई कलीसिया तैयार हो गई।

नाजियों का समय आया। रूमानियां में नाज़ीवाद ने क्रूर तानाशाही का रूप लिया और मसीहियों व यहूदियों पर अत्याचार किया। हमें दुख भोगना था।

इसके पहिले कि मेरा अभिषेक हो और धर्म सेवा के लिए तैयार होऊं, मैं इस गिरजेघर का नेतृत्व करता था क्योंकि इसकी स्थापना मैंने ही की थी। मुझ पर इसका उत्तरदायित्व था। मेरी बीवी और मुझे कई बार बन्दी बनाया, पीटा और नाज़ी अधिकारियों के सामने घसीटा गया। नाज़ी आतंक कम नहीं था परन्तु आने वाला कम्युनिस्ट अत्याचार उससे कहीं बढ़ चढ़ कर था। मेरे बेटे मिहाई को मृत्यु से बचने के लिए गैर-यहूदी नाम रखना पड़ा।

—

इन नाज़ी यातनाओं से एक लाभ अवश्य हुआ। हमने सीखा कि शारीरिक यातनाओं को परमेश्वर की सहायता से सहन किया जा सकता है। नाज़ी आतंक के बीच रहकर हमने रहस्यमयी ढंग से मसीही कार्य

करना सीखा। आज कम्युनिस्ट आतंक के समय वह अभ्यास काम आ रहा है।

रूसियों में मेरी सेवा

मैं रूसियों की तरह ही नास्तिक था इसलिए मेरी हार्दिक इच्छा थी कि उन्हीं के मध्य रहकर मसीह का कार्य कर सकूं। मेरी रूसियों तक पहुंचने की इच्छा नाज़ी समय में ही पूरी होना आरम्भ हो गई। क्योंकि रूमानियां में हज़ारों रूसी युद्ध में बन्दी बनाकर लाये गये। रूसियों को बचपन से ही नास्तिकता का पाठ पढ़ाया जाता है। हमें उनके बीच मसीह का कार्य करने का अवसर मिला।

यह कार्य उत्साहवर्धक था। मैं उस रूसी बन्दी को जो इंजीनियर था कभी नहीं भूल सकता। मैंने उससे पूछा, क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं? उसने मेरी ओर देखा और उत्तर दिया, "मुझे कोई ऐसी आज्ञा नहीं मिली है कि मैं परमेश्वर पर यकीन करूं। अगर आज्ञा मिलेगी तो अवश्य विश्वास करूंगा।" अगर वह "नहीं" कह देता तो मुझे इतना आश्चर्य नहीं होता जितना उसके इस उत्तर से हुआ। क्योंकि विश्वास करना न करना प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है।

मैं रो पड़ा। मैंने ऐसा अनुभव किया मानो मेरा दिल टूट गया हो। मेरे सामने वह मनुष्य है जिसकी बुद्धि मर चुकी है, इस मनुष्य ने परमेश्वर का मनुष्य जाति को सबसे बड़ा दिया हुआ उपहार खो दिया है। उसमें निजत्व नहीं है। वह कम्युनिस्टों के चुंगल में ब्रेन वॉश किया हुआ खिलौना है। वह आज्ञानुसार विश्वास करने को तत्पर है। वह स्वयं कुछ नहीं सोच सकता। यह मनुष्य कम्युनिस्ट असर से तैयार किया हुआ नमूना था। कम्युनिस्टों द्वारा मनुष्य जाति की इस प्रकार दशा बनते देख, मैंने परमेश्वर से प्रतिज्ञा की: "मैं अपना जीवन इन लोगों के लिए समर्पण करता हूं। जिससे वे जानें कि उनका व्यक्तित्व क्या है, और वे परमेश्वर और मसीह यीशु पर विश्वास लायं।"

रूसियों तक पहुंचने के लिए मुझे रूस नहीं जाना पड़ा। अगस्त २३, १९४४ से रूसी सेना रूमानियां में प्रवेश होना आरम्भ हुई, लगभग दस लाख सैनिक आ गये। तत्पश्चात् हमारे देश में कम्युनिस्ट शासन हो गया। कम्युनिस्ट शासन एक भयकर सपने की तरह था, इसकी क्रूरता के सामने नाज़ी अत्याचार कुछ भी नहीं था।

उस समय रूमानियां की जनसंख्या एक करोड़ अस्सी लाख थी और कम्युनिस्ट पार्टी के केवल दस हज़ार सदस्य थे। परन्तु सोवियत संघ का विदेश सचिव, विश्इनस्की हमारे प्रिय राजा माइकल प्रथम, के कार्यालय में घुस गया और उनकी मेज पर अपना मुक्का मारकर बोला "तुम सरकार कम्युनिस्टों को सौंप दो।" हमारी सेना और पुलिस हथियार रहित थी, अत्याचार और नफरत के वातावरण में सत्ता कम्युनिस्टों के अधिकार में आ गई, यह कार्य उस समय की अमेरिंकी और ब्रिटिश सरकार की सहायता से हुआ था।

मनुष्य केवल स्वय के पापों के लिए ही उत्तरदायी नहीं परन्तु राष्ट्रीय पापों के लिए भी परमेश्वर के सामने उत्तरदायी हैं। अमेरिकी लोगों को ज्ञात रहे कि अनजाने में रूसियों की सहायता करने से हमारे यहाँ खून की नदियां बहीं और आतंक का साम्राज्य हुआ। इसलिए अमेरिकियों को चाहिये कि बन्दी लोगों को मसीह की रोशनी में लायें और प्रायश्चित करें।

प्रेम और प्रलोभन की भाषा समान हैं

एक बार कम्युनिस्ट सत्ता में आ जायें फिर वे चालाकी से चर्च के भ्रष्टीकरण में लग जाते हैं। प्रेम की भाषा और प्रलोभन की भाषा समान हैं। एक मनुष्य जो किसी लड़की से शादी करना चाहता है और दूसरा जो केवल अपनी वासना पूर्ति कर छोड़ देना चाहता है, दोनों ही एक सी भाषा का उपयोग करेंगे, "मैं तुमसे प्रेम करता हूं।" प्रभु यीशु ने हमसे कहा है कि प्रेम और प्रलोभन की भाषा में अन्तर मालूम करें और भेड़

की खाल में छिपे हुए भेड़ियों को पहिचानें। रूमानियां में जब कम्युनिस्टों के हाथ में सत्ता आयी, हजारों पादरियों और धर्म सेवकों को प्रेम और प्रलोभन की भाषा में अन्तर समझ नहीं आया।

कम्युनिस्टों ने सारे मसीहियों की संसद भवन में एक सभा बुलाई। लगभग चार हजार मसीही सदस्य जमा हुए और जोजफ स्टालिन को इस सभा का अध्यक्ष चुना। स्टालिन इसी समय में नास्तिक आन्दोलन का अध्यक्ष और हजारों मसीहियों को मार डालने का दोषी था। एक के बाद एक बिशपों और पास्टरों ने सभा में घोषणा करना आरम्भ कर दिया कि कम्युनिस्टवाद और मसीही धर्म बुनियादी तौर से एक हैं और साथ-साथ चल सकते हैं। बहुत से पादरियों ने कम्युनिस्टवाद की सराहना की और इस नई कम्युनिस्ट सरकार का समर्थन करने का आश्वासन दिया।

मेरी पत्नी और मैं इस सभा में थे। पत्नी ने मुझ से कहा : "रिचर्ड, धो दो, मसीह के ऊपर उछाली हुई गन्दगी को! वे यीशु मसीह के मुंह पर थूक रहे हैं।" मैंने अपनी पत्नी को जवाब दिया : "यदि मैं बोलता हूं, तो तुम्हें मुझसे हाथ धोना पड़ेगा।" उसने कहा : "मुझे डरपोक पति की आवश्यकता नहीं है।"

मैं खड़ा हुआ और इस सभा में मसीहियों के हत्यारों की नहीं लेकिन मसीह और परमेश्वर की प्रशंसा की। मैंने कहा, "हमारी सर्वश्रेष्ठ निष्ठा परमेश्वर में है।" इस सभा के सारे सन्देशों को रेडियो द्वारा प्रसारित किया गया था इसलिए यह मसीह का सन्देश भी पूरे देश में सुना गया। बाद में इसका नतीजा मैंने भुगता। परन्तु जो कुछ हुआ वह मिलकर सुसमाचार के लिए ठीक हुआ।

ऑरथोडोक्स और प्रोटेस्टेंट चर्च अगुवों में कम्युनिस्टवाद की ओर झुकने में होड़ सी लग गई। एक ऑरथोडोक्स बिशप ने तो यहां तक किया कि अपने चोगे पर हंसिया-हथौड़े का निशान लगाना शुरू कर दिया, और पादरियों को आज्ञा दी कि उसे "आपका अनुग्रह" कहकर नहीं परन्तु

"कामरेड बिशप" कहकर पुकारें। एक बेपटिस्ट सभा जो रीस्टा में लाल झंडे के नीचे हुई उसमें मुझे उपस्थित होने का अवसर मिला, यहां सोवियत संघ का राष्ट्रीय गीत भी हुआ और सब सिर झुकाये खड़े रहे। बेपटिस्टों के अध्यक्ष ने घोषणा की कि स्टालिन ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया है। आगे उसने कहा कि स्टालिन बाइबल का महान शिक्षक है! कुछ पादरियों ने तो यहां तक किया, वे खुफिया पुलिस में अफसर हो गये। राप, जो लूथरन चर्च का उप बिशप था, धार्मिक शालाओं में सिखाना आरम्भ किया कि परमेश्वर ने तीन प्रकाशना दी हैं: एक मूसा द्वारा, दूसरी यीशु मसीह द्वारा और तीसरी स्टालिन द्वारा, अन्तिम प्रकाशना अगली दो प्रकाशनाओं से बेहतर है।

परन्तु सच्चे बेपटिस्टों ने यह स्वीकार नहीं किया और दुख सहते हुए भी दृढ़ता से मसीह पर विश्वास जमाये रहे। कम्युनिस्टों ने अगुवे भी चुन दिये, मन मार कर बेपटिस्टों को उन्हें स्वीकार करना पड़ा। आज भी बड़े-बड़े धार्मिक अगुवों के चुनावों में कुछ ऐसा ही होता है।

जो कम्युनिस्टवाद के अनुयायी हो गये वे उन लोगों से नफरत करने लगे जिन्होंने कम्युनिस्टवाद नहीं अपनाया।

जिस प्रकार मसीहियों ने रूस में रूसी क्रान्ती के बाद गुप्त चर्च स्थापित किया था, उसी प्रकार रूमानियां में भी ऐसा ही चर्च स्थापित किया गया। कम्युनिस्टों की सत्ता और बहुत से सरकारी चर्चों के विश्वासघात के कारण गुप्त चर्च स्थापित करने पड़े। ये गुप्त चर्च सुसमाचार फैलाते और बच्चों को यीशु मसीह के बारे में बताते थे। परन्तु कम्युनिस्ट सरकार ने सुसमाचार प्रचार पर प्रतिबन्ध लगाया और सरकारी चर्च ने इसको स्वीकार कर लिया।

अन्य लोगों के साथ मैंने सुसमाचार का कार्य गुप्त रीति से आरम्भ किया। मैं प्रतिष्ठित व्यक्ति था, इस कारण सुसमाचार के गुप्त कार्य करने में सरलता होती थी। मैं नॉर्वे लूथरन मिशन का पास्टर था और

चर्च कौन्सिल रूमानियां का प्रतिनिधित्व भी करता था। रूमानियां में, हमने कभी सोचा भी नहीं था कि यह कौसिल कम्युनिस्टों के सहयोग में कार्य करेगी। हमारे देश में उन दिनों में कौसिल केवल-सहायता कार्य ही करती थी। इन दो कार्यों में होने के कारण अधिकारियों के सामने मेरी काफी प्रतिष्ठा बन गई थी। अधिकारियों को मेरे गुप्त कार्य के बारे में नहीं मालूम था।

गुप्त कार्य को दो भागों में बाँट दिया था।

एक तो दस लाख रूसी जवानों में सुसमाचार फैलाना और दूसरे रूमानियां में रहने वाले कम्युनिस्ट दासता में फंसे हुए लोगों के बीच मसीह का कार्य गुप्त रीति से करना।

प्यासी आत्मा वाले रूसी लोग

मेरे लिए रूसियों में सुसमाचार प्रचार करना पृथ्वी पर स्वर्ग का अनुभव प्राप्त करने के समान है। मैंने कई देशों में सुसमाचार सुनाया है किन्तु रूसियों की तरह सुसमाचार में आनन्द लेने वाले लोग कहीं भी नहीं देखे। उनकी आत्माएं अत्यन्त प्यासी हैं।

मेरे मित्र, परम्परा प्रेमी पादरी ने एक दिन मुझे टेलीफोन कर बताया कि उनके पास एक रूसी अफसर अंगीकार करने आया है। मेरे मित्र को रूसी भाषा नहीं आती थी इस कारण उसने यह जानते हुए कि मुझे आती है मेरे पास रूसी को भेज दिया। वह परमेश्वर से प्रेम करता था। परमेश्वर के लिए उसके दिल में उत्कंठा थी। उसने बाइबल कभी नहीं देखी थी। वह धार्मिक सभाओं में भी कभी नहीं गया था, (रूस में चर्चों की बहुत ही कमी है।) उसे धार्मिक शिक्षा नहीं मिली थी। परन्तु बिना परमेश्वर के बारे में जाने हुए भी वह उससे प्रेम करता था।

उसके लिए मैंने पहाड़ी उपदेश और मसीह यीशु के दृष्टांत बाइबल से पढ़कर सुनाये। यह सब सुनकर वह रूसी कमरे में खुश हो नाचने

लगा और कहने लगा कितना सुन्दर ! कितना सुन्दर ! इस मसीह को बिना जाने मैं कैसे रह सकता था !" यह पहिला अवसर था जब मैंने किसी को मसीह में इतना आनन्द मनाते देखा ।

मुझसे एक गलती हो गई । मैंने मसीह को क्रूस पर चढ़ाये जाने वाला अध्याय उसके लिए पढ़ दिया । उसका दिल और दिमाग़ इसके लिए तैयार नहीं था । जब उसने सुना मसीह को पीटा गया और निन्दित कर क्रूस पर चढ़ा दिया गया, और अन्त में वह मर गया था तब रूसी अफसर फूट फूट कर रोने लगा । उसने एक मुक्तिदाता में विश्वास किया और वह मुक्तिदाता अब मर गया था !

उसको इस तरह शोक करते देख मुझे अपने आप पर बहुत शर्म आई । मैं अपने आपको एक मसीही कहता था, एक पादरी और धार्मिक शिक्षक समझता था । परन्तु मसीह की यातना को इस प्रकार कभी भी अनुभव नहीं किया था । मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे मरियम मग्दिलीनी फिर से क्रूस के नीचे बैठी रो रही है, यीशु के शव को कबर में रखने के समय वह आंसू बहा रही है ।

इसके बाद मैंने पुनरुत्थान का अध्याय पढ़ा । रूसी अफसर को नहीं मालूम था कि उसका मुक्तिदाता जी उठा है । जब उसने यह सुना वह खुशी से पागल सा हो गया, वह तालियां बजा बजाकर नाचने लगा और आनन्द से चीख-चीखकर कहने लगा : वह जीवित है ! वह जीवित है !

मैंने उससे कहा, "आओ हम प्रार्थना करें ।" उसे प्रार्थना करना नहीं आता था न वह धार्मिक मुहावरे जानता था । उसने मेरी तरह घुटने टेक लिए और प्रार्थना आरम्भ की : "हे परमेश्वर, तू कितना अच्छा आदमी है ! अगर मैं तेरी जगह होता और तू मेरी जगह तो मैं कभी तेरे पापों को क्षमा नहीं करता । परन्तु तू सचमुच में बडा अच्छा है ! मैं अपने सारे दिल से तुझे प्रेम करता हूं ।"

मैं सोचता हूं, स्वर्ग में सारे फरिश्तों ने सांस रोककर इस महान

प्रार्थना को सुना होगा। यह व्यक्ति मसीह के लिए जीता जा चुका था।

एक रूसी कप्तान और महिला अफसर से एक दुकान में भेंट हुई। वे बहुत सी चीजें खरीदना चाहते थे परन्तु दुकानदार रूसी भाषा नहीं जानता था। मैंने भाषा अनुवाद करने में सहायता की और वे मेरे मित्र हो गये। मैंने उन्हें खाने पर घर बुलाया। भोजन शुरू करने से पहिले मैंने उनसे कहा : "आप लोग एक मसीही घर में हैं हम खाने से पहिले प्रार्थना करते हैं।" मैंने रूसी भाषा में प्रार्थना की। उन्होंने छुरी कांटे मेज़ पर रख दिये, और बिना खाये उठने लगे। उन्होंने परमेश्वर, यीशु मसीह और बाइबल के बारे में प्रश्न पर प्रश्न पूछना शुरू कर दिये। वे कुछ नहीं जानते थे।

उनसे बात करना आसान नहीं था। मैंने चरवाहे का दृष्टांत बताया जिसकी सौ भेड़ें थीं जिनमें से एक खो गयी थी। उनकी समझ में नहीं आया। उन्होंने पूछा : "ऐसा कैसे हो सकता है कि एक आदमी के पास सौ भेड़ें हों ? क्या कम्युनिस्ट सहकारी खेती संगठन ने इतनी भेड़ें रखने दीं ?" फिर मैंने कहा कि यीशु हमारा राजा है। उन्होंने उत्तर दिया : "आज तक सारे राजा लोग अत्याचारी ही हुए हैं अगर यीशु मसीह राजा था तो वह भी ज़ालिम होगा।" जब मैंने दाख की बारी और उसमें काम करने वालों का दृष्टांत बताया, उन्होंने कहा : "ये काम मज़दूरों ने मालिक के विरुद्ध बहुत अच्छा किया। दाख की बारी के मालिक मज़दूरों को होना चाहिये।" सब बातें उनके लिए नई थीं। जब मैंने यीशु के जन्म के बारे में बताया। उन्होंने जो पूछा अगर पश्चिम के लोग पूछते तो ईश्वर की निन्दा माना जाता। उन्होंने पूछा : "क्या मरियम परमेश्वर की बीवी थी ?" मैंने रूसियों के बीच सुसमाचार कार्य करते समय अनुभव किया और दूसरे प्रचारकों से सुना कि रूसियों के लिए कुछ अलग ही भाषा का उपयोग करना चाहिये।

कुछ प्रचारक जब मध्य आफ्रीका में सुसमाचार प्रचार करने गये तो

उन्हें यशायाह नबी की पुस्तक के इस पद का अनुवाद करने में कठिनाई हुई "तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे।" क्योंकि मध्य आफ्रीका में किसी ने हिम नहीं देखा था। उनकी भाषा में हिम के लिए शब्द नहीं है। इसलिए इस पद का अनुवाद इस प्रकार किया गया : "तुम्हारे पाप नारियल के गूदे की तरह सफेद हो जायेंगे।"

इसलिए हमें सुसमाचार मार्क्स की भाषा में अनुवाद करना पड़ा जिससे कम्युनिस्ट लोग सुसमाचार पूरी तरह समझ सकें। इस कार्य में पवित्र आत्मा ने हमारी अगुवाई की। यह कार्य हम अपनी सामर्थ से नहीं कर सकते थे।

ये रूसी कप्तान और महिला अफसर उसी दिन मसीही हो गये। बाद में, इन लोगों ने रूसियों में गुप्त मसीही सेवा में बहुत सहायता की।

हमने सुसमाचार और अन्य मसीही साहित्य छापकर गुप्त रीति से रूसियों में बाँटा। जो रूसी सैनिक मसीही बन गये उनके द्वारा कई बाइबल और मसीही साहित्य के हिस्से रूस में पहुंचाये।

परमेश्वर का वचन रूसियों के हाथ में भेजने की हमने एक और युक्ति निकाली। रूसी जवान लम्बे अरसे से लड़ाई पर रहने के कारण अपने बच्चों से बिछड़े हुए थे। रूसी लोग विशेष रूप से बच्चों से प्रेम करते हैं। मेरा बेटा मिहाई और अन्य आठ दस वर्ष के बच्चे अपनी जेबों में बाइबल और मसीही साहित्य लेकर रूसियों के पास पहुंच जाते थे। रूसी जवान प्यार से बच्चों को दुलारते और अपने बच्चों की याद ताजा करते जिन्हें उन्होंने वर्षों से नहीं देखा था। रूसी, बच्चों को मिठाई देते, इसके बदले में बच्चे उन्हें बाइबल और मसीही साहित्य देते थे जिसे वे खुशी से ग्रहण कर लेते थे। जो काम करना हमारे लिये खतरनाक था वह बच्चों के लिए बहुत आसान था। रूसियों में बच्चे "छोटे छोटे

मिशनरी" थे। परिणाम उत्तम रहा। कई रूसी जबानों तक सुसमाचार पहुंच सका जब कि कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

रूसी सैनिकों की बैरिकों में प्रचार

रूसियों में, हमने केवल व्यक्तिगत मसीही कार्य ही नहीं परन्तु छोटी छोटी सभाओं द्वारा भी काम किया।

रूसी लोग घड़ियां बहुत पसन्द करते थे। यहां तक कि वे एक दूसरे की घड़ियां चुरा लेते थे। वे लोगों को सड़क पर रोककर घड़ियां उतरवा लेते थे। आप रूसियों को एक साथ कई घड़ियां बांधे देख सकते थे। कुछ रूसी अधिकारी महिलायें अपने गले में अलारम घड़ी लटकाई रहती थीं। पहिले उनके पास घड़ियां नहीं थीं परन्तु अधिक से अधिक घड़ियां मिल जाने पर भी उन्हें सन्तोष नहीं होता था। रूमानियां के लोगों को जब घड़ियों की आवश्यकता होती वे बैरिक में चोरी की घड़ियां खरीदने पहुंच जाते थे। कभी कभी खुद की चोरी गई घड़ी दोबारा खरीदनी पड़ती। रूमानी लोगों का रूसी बैरिकों में पहुंचना आम बात थी। हमारे गुप्त चर्च के लोग घड़ियां खरीदने का बहाना कर रूसी सैनिकों से मिलने चले जाते थे।

रूसियों में प्रचार का सबसे पहिला प्रयत्न ओरथॉडोक्स भोज, संत पौलुस और संत पतरस के दिवस किया। मैं सैनिक अड्डे पर घड़ी खरीदने के बहाने से गया। एक को मंहगा और दूसरी को छोटा और तीसरी को बड़ी बताया। बहुत से जवान मेरे चारों ओर घिर आये थे और कुछ न कुछ बेचना चाहते थे। बात-बात में मैंने पूछ लिया : "क्या आप लोगों में से कोई पौलुस या पतरस नाम का है ?" कोई नहीं था। मैंने पौलुस और पतरस के बारे में बताना शुरू किया। एक रूसी जवान ने बीच में टोका और मुझसे कहा : "तुम घड़ियां लेने नहीं आये हो परन्तु विश्वास के बारे में बताने आये हो। यहां बैठ जाओ और हमें बताओ और, ज़रा संभल कर ! हम जानते हैं किन से सावधान रहना

है। अभी जो लोग हमारे साथ हैं वे सब अच्छे हैं। जब मैं तुम्हारे घुटने पर हाथ रखूं तब तुम केवल घड़ियों की बातें करना। जब मैं अपना हाथ हटा लूं तब तुम अपना सन्देश दोबारा शुरू कर सकते हो।" काफी भीड़ मेरे चारों ओर जमा हो गई थी। मैंने भीड़ को पौलुस और पतरस के बारे में बताया, प्रभु यीशु मसीह के बारे में बताया जिसकी सेवा में पौलुस और पतरस ने अपनी जान दी। कभी-कभी जब कोई ऐसा व्यक्ति आ जाता जिस पर उन्हें विश्वास नहीं था तब वह जवान मेरे घुटने पर हाथ रख देता और मैं घड़ियों के बारे में बातें शुरू कर देता था। उस व्यक्ति के जाने के बाद मैं फिर यीशु मसीह के बारे में सन्देश देने लगता था। इस भेंट के बाद मैं कई बार इन रूसी जवानों में गया। कई कामरेडों ने मसीह को ग्रहण किया। गुप्त रूप से हजारों सुसमाचार की प्रतियां बांटी गईं।

हमारे गुप्त चर्च के कई भाइयों और बहिनों को इस कारण पकड़ा और पीटा गया। परन्तु हमारे संगठन को उन्होंने धोखा नहीं दिया।

इस कार्य में हमारी रूस के गुप्त चर्च के भाइयों से मुलाकात हुई और उनके अनुभव सुनने को मिले। उन्हें हमने महान् सन्त बनने की ओर अग्रसर होते पाया। वे कई वर्ष कम्युनिस्ट शिक्षा में रह चुके थे। कुछ कम्युनिस्ट यूनीवर्सिटी में अध्ययन कर चुके थे। परन्तु जिस प्रकार मछली समुद्र के खारे पानी में रहकर भी अपना मांस मीठा रखती है उसी प्रकार इन लोगों ने कम्युनिस्ट स्कूलों में रहकर भी अपनी आत्मा को मसीह के लिए पवित्र रखा।

रूसी मसीहियों की आत्माएं कितनी सुन्दर हैं। वे कहते हैं: "हम जानते हैं कि हंसिया-हथौड़ी का तारा जो हमारी टोपी पर है वह मसीह-विरोध का प्रतीक है।" यह उन्होंने बहुत अफसोस से कहा। इन लोगों ने रूसी जवानों में सुसमाचार फैलाने में मदद की।

मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अतिरिक्त बाहरी खुशी के

मसीहियों के सारे गुण उनमें हैं। यह खुशी सिर्फ मन परिवर्तन के समय होती है फिर विलीन हो जाती है। मुझे अचरज हुआ और एक मसीही से मैंने पूछा : "आपके जीवन में प्रसन्नता क्यों नहीं दिखती ?" उसने जवाब दिया : "मैं किस प्रकार प्रसन्न रह सकता हूं जब कि मुझे चर्च के पास्टर से छिपाना पड़े कि मैं एक सच्चा मसीही हूं। मैं प्रार्थना में जीवन गुज़ारता हूं। मैं मसीह के लिए आत्मा जीतना चाहता हूं। हमारा पादरी पुलिस में सारी खबर देता है। हमारे कार्यों पर कड़ी नज़र रखी जाती है। हमारे चरवाहे ही हमारे शत्रु हैं। हमारे दिल की गहराइयों में उद्धार पाने की प्रसन्नता है परन्तु आप लोगों की तरह बाहरी प्रसन्नता हमें नहीं मिल पाती। हम इसे नहीं पा सकते।

"मसीहियत हमारे लिए प्रभावशाली है। जब आप स्वतंत्र मसीही लोग कोई आत्मा पर विजय पाते हैं, वह मनुष्य कलीसिया का एक सदस्य बन जाता है। परन्तु जब हम कोई व्यक्ति मसीह के लिए जीतते हैं तब यह जानते हैं कि उसके बच्चे अनाथ हो सकते हैं। किसी को मसीह के लिए जीतने के बाद मन में इसका मूल्य चुकाने की कल्पना अवश्य रहती है।"

गुप्त चर्च के मसीही लोगों से मिलने के बाद हमें अनुभव हुआ कि ये मसीही लोग स्वतंत्र देशों के मसीही लोगों से पूरी तरह फर्क हैं।

यहां कई आश्चर्यजनक बातें देखीं।

जिस प्रकार कई सोचते हैं कि वे मसीही हैं परन्तु वास्तव में वे नहीं होते, इसी प्रकार रूस में भी कई नास्तिक ऐसे हैं जो सोचते हैं कि वे नास्तिक हैं परन्तु वे नहीं हैं।

मैं एक शिल्पकार रूसी दम्पत्ति से मिला। मैंने जब परमेश्वर के बारे में बातें की, उन्होंने जवाब दिया : "परमेश्वर नहीं हैं। हम 'बेज़बोशनीकी' ईश्वर रहित लोग हैं। परन्तु हमारे साथ हुई एक रोचक घटना हम आपको बताते हैं।"

हम स्टालिन की प्रतिमा बना रहे थे। बनाते समय बीवी ने पूछा : "अंगूठे को किस तरह बनाना है ? अगर हम अंगूठे को दूसरी अंगुलियों के विरुद्ध न बनाएं—यदि हाथ की अंगुलियां पैर की अंगुलियों की तरह हों तो हम हथौड़ी, कोई औजार, पुस्तक या रोटी नहीं पकड़ सकते थे बिना अंगूठे के मनुष्य का जीवन बहुत कठिन हो जाता। यह अंगूठा किस ने बनाया ? हमने स्कूल में मार्क्सवाद पढ़ा था और यह सीखा था कि स्वर्ग और पृथ्वी स्वयं बने हैं। परमेश्वर ने इन्हें नहीं बनाया। वही हमने सीखा और यही विश्वास है। अगर परमेश्वर ने स्वर्ग-पृथ्वी का सृजन नहीं किया होता और केवल अंगूठा ही बनाया होता फिर भी वह प्रशंसा के योग्य होता।

"एडीसन, बैल और स्टीफनसन आदि कि प्रशंसा हम करते हैं कि इन्होंने बिजली का बल्ब, टेलीफोन व रेल और बहुत सी वस्तुओं का अविष्कार किया। परन्तु हम उसकी सराहना क्यों नहीं करते जिसने अंगूठा बनाया ! अगर एडीसन के अंगूठा नहीं होता तो वह कुछ भी अविष्कार नहीं कर पाता। इसलिए केवल परमेश्वर की उपासना करना ही उचित है जिसने अंगूठा बनाया।"

पति बहुत नाराज़ हुआ, जैसा कि पति लोग अकसर अपनी पत्नियों से समझ की बातें सुनकर हो जाते हैं। "मूर्खता की बातें नहीं करो ! तुमने सीखा है—परमेश्वर नहीं है। और तुम्हें कभी नहीं मालूम हो सकता जब तक कि हम पर मुसीबत न आये। हमेशा के लिए याद रखो—परमेश्वर नहीं है। स्वर्ग में कोई नहीं है।"

पत्नी ने उत्तर दिया : "यह तो इससे भी अधिक आश्चर्य की बात है कि स्वर्ग में सर्वशक्तिमान परमेश्वर था जिस पर मूर्खता से हमारे बुजुर्गों ने विश्वास किया। सर्वशक्तिमान परमेश्वर सब कुछ कर सकता है, इसलिए वह अंगूठा भी बना सकता है। यदि स्वर्ग में कोई नहीं है तो मैं अपनी ओर से पूरे दिल से उस "कोई नहीं" की अराधना करूंगी जिसने

अंगूठा बनाया ।'

अंत में वे दोनों उस "कोई नहीं" की अराधना करने लगे ! समय के साथ इस "कोई नहीं" में उनका विश्वास बढ़ता गया । उनका विश्वास था इस "कोई नहीं" ने केवल अंगूठे ही को नहीं परन्तु तारे, फूल, बच्चे और जीवन की सारी सुन्दर वस्तुएं बनाई हैं।

यह घटना पिछले समय की याद दिलाती है जब संत पौलुस यूनानी नगर ऐथिन्स में "अनजाने परमेश्वर" को मानने वाले लोगों से मिला था ।

रूसी दम्पत्ति यह जानकर कि उनका विश्वास सही था । स्वर्ग में वास्तव में "कोई नहीं" है, और **परमेश्वर आत्मा है** । अत्यंत प्रसन्न हुआ । परमेश्वर जो आत्मा है : वह प्रेम, ज्ञान, सत्य और शक्ति की आत्मा है । उसने हमसे ऐसा प्रेम किया कि अपना एकलौता बेटा हमारे लिए क्रूस पर क़ुर्बान कर दिया ।

बिना उसे जानते हुए भी वे परमेश्वर में विश्वास रखते थे । मुझे उनको उद्धार के अनुभव के बारे में बताने का अवसर मिला । वे परमेश्वर के विश्वास में और दृढ़ हो गये ।

एक रूसी महिला अफसर को सड़क पर जाते देखा । मैं उसके पास पहुंचा और क्षमा मांगते हुए कहा : "मैं जानता हूं किसी अपरिचित महिला को मार्ग में रोककर बातें करना ठीक नहीं होता परन्तु मैं एक प्रचारक हूं और मेरी भावनाएं शुद्ध है । मैं आपसे यीशु मसीह के बारे में बातें करना चाहता हूं ।

उसने मुझसे पूछा : "क्या आप मसीह से प्रेम करते हैं ?" मैंने उत्तर दिया : "मैं मसीह से पूरे हृदय से प्रेम करता हूं ।" यह सुनते ही वह महिला मुझसे लिपटकर बार-बार चुम्बन करने लगी । एक पादरी के लिए यह स्थिति अजीब सी थी । फिर मैंने भी उसे चुम्बन किया, यह

सोचकर कि लोग समझेंगे हम लोग रिश्तेदार हैं। महिला ने मुझसे कहा, "मैं भी मसीह से प्रेम करती हूं!" मैं महिला को अपने घर ले गया। घर में यह जानकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि यह महिला मसीह यीशु के नाम के अतिरिक्त कुछ भी उसके बारे में नहीं जानती थी। इस पर भी वह मसीह से प्रेम करती थी। वह नहीं जानती थी कि मसीह उद्धारकर्त्ता है, न उद्धार का अर्थ समझती थी। वह नहीं जानती थी कि यीशु मसीह कहां पैदा हुआ और कहां मरा। वह मसीह की शिक्षाएं भी नहीं जानती थी। मेरे लिए यह महिला रहस्य बन गई। आप किसी से कैसे प्रेम कर सकते हैं यदि उसके बारे में नाम के अलावा कुछ नहीं जानते ?

जब मैंने पूछा तब उसने समझाया : "जब मैं बच्ची थी चित्र द्वारा मुझे समझाया गया। 'ए' के लिए एपल (अनार) का 'बी' के लिए बेल (घंटी) का और 'सी' के लिए केट (बिल्ली) का चित्र था। जब मैं हाई स्कूल में आई, तो मुझे सिखाया गया कि अपने कम्युनिस्ट देश की सुरक्षा करना कर्त्तव्य है। मुझे कम्युनिस्ट नैतिकता सिखाई गई। परन्तु मुझे ज्ञात नहीं हुआ कि 'धार्मिक' और 'नैतिक' कर्त्तव्य क्या हैं। मुझे इनके चित्र की आवश्यकता थी। मैं जानती थी कि हमारे पूर्वज प्रत्येक सुन्दर, सत्य और प्रशंसा योग्य वस्तु का चित्र रखा करते थे। मेरी दादी एक तस्वीर के सामने घुटने टेका करती थी। वह यीशु नाम किसी आदमी की थी। मुझे इस नाम से ही प्रेम था। यह नाम मेरे लिए एक सत्य बन गया! इस नाम से मुझे बड़ी खुशी मिलती थी।"

इस महिला की बात सुनने के बाद, मुझे नये नियम की फिलिप्पियों की पुस्तक में लिखे वचन याद आ गये कि सब उसके (यीशु) नाम पर घुटना टेकें। हो सकता है, मसीह विरोधी कुछ समय के लिए परमेश्वर ज्ञान इस दुनियां से मिटाने में सफल भी हो जाएं। परन्तु यीशु के सरल नाम में वह ताकत है जो हमें प्रकाश तक पहुंचा देगी।

इस महिला ने मसीह को मेरे घर में पाया। जिसके नाम से वह प्रेम करती थी अब वह उस यीशु को अपने हृदय में रखती है।

रूसियों के साथ मेरा सारा समय अर्थपूर्ण भावुकता में गुजरा।

एक बहिन ने जो रेलवे स्टेशन पर मसीही साहित्य बांटती थी, एक रूसी अफ़सर को मेरे घर का पता दे दिया।

एक शाम, ऊंचा पूरा, खूब सूरत रूसी अफ़सर मेरे घर आया।
मैंने उससे पूछा : "मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं ?"
उसने उत्तर दिया : "मैं प्रकाश का अर्थ मालूम करने आया हूं।"

मैंने बाइबल के वचनों को पढ़ना आरम्भ किया। उसने मुझे रोककर पूछा : "मैं आपसे सच्चाई से पूछता हूं, मुझे धोखा न देना। मैं उन लोगों में से हूं जिन्हें अन्धकार में रखा गया। कृपया मुझे बताइये, क्या यह परमेश्वर का ही वचन है ?" मैंने उसे विश्वास दिलाया। वह घंटों सुनता रहा·····और मसीह पर विश्वास लाया।

धार्मिक बातों में रूसी कभी भी उथले नहीं होते हैं। वे धर्म विरोधी हों या धर्म और मसीह के प्रवर्तक, अपनी सारी आत्मा लगा देते हैं। यही कारण है कि रूस में हरेक मसीही एक आत्मा जीतने वाला व्यक्ति है। इसीलिए दुनियाँ में रूस जैसा कोई देश नहीं जिसमें सुसमाचार इस समय इतना आवश्यक हो। रूसी लोग दुनियां में अपने स्वभाव से ही सबसे धार्मिक लोगों में से हैं। इस दुनियां का नक्शा ही बदल जायेगा अगर हम ज़ोर शोर से रूस में सुसमाचार फैला दें।

कितने दुख की बात है, रूस के लोग परमेश्वर के वचन के लिए अत्यन्त प्यासे होते हुए भी अपनी प्यास नहीं बुझा सकते, ऐसा मालूम होता है कि सभी ने परमेश्वर के वचन से मुंह मोड़ रखा है।

रेलयात्रा में, एक रूसी अफसर से मेरी मुलाकात हुई। मैं मसीह यीशु के बारे में कुछ समय ही बोल पाया था कि वह नास्तिक वाद की

ओर से विवाद कर बैठा। मार्क्स, स्टालिन, वॉलटेर, डारविन और दूसरे विद्वानों के वचन बाइबल के विरोध में धारा प्रवाह से बोलता चला गया। उसने मुझे बोलने का अवसर नहीं दिया। लगभग एक घंटे तक वह सिद्ध करने की कोशिश करता रहा कि परमेश्वर नहीं है। जब वह चुप हुआ मैंने उससे कहा : यदि परमेश्वर नहीं है तो आप दुख-मुसीबत में प्रार्थना क्यों करते हैं ?" इस बात पर रूसी अफसर बहुत घबरा गया। वह सच न छिपा सका। उसने पूछा : "आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं प्रार्थना करता हूं ?" मैंने बात यहीं समाप्त नहीं होने दी। मैंने फिर प्रश्न किया। आप क्यों प्रार्थना करते हैं ?" उसने अपना सिर झुका कर मेरी बात को स्वीकार किया। उसने कहा : "सीमा पर जर्मन सैनिकों द्वारा घिर जाने पर हम सब ने प्रार्थना की थी ! हमें प्रार्थना करना नहीं आता था फिर भी हमने इस प्रकार कहा : 'हे परमेश्वर और मां की आत्मा'।" यह प्रार्थना परमेश्वर की नजर में बहुत अच्छी है क्योंकि वह दिल को जांचता है शब्दों को नहीं।

रूसियों में सेवा करने का अच्छा परिणाम हुआ।

मैं पतरस को याद करता हूं। कोई नहीं जानता, वह रूसी जेल में मर गया। वह छोटी उम्र का युवक था। कोई बीस वर्ष का होगा। रूसी सेना के साथ रूमानिया आया था। एक गुप्त सभा में उसने मसीह को ग्रहण किया था। और मुझ से बपतिस्मा देने को कहा था।

बपतिस्मे के बाद, मैंने पतरस से पूछा बाइबल के कौन से पदों से वह सबसे अधिक प्रभावित हुआ, जिससे उसने मसीह को उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया है।

उसने बताया कि उसने बड़ी लगन से गुप्त सभा के सन्देश को सुना। मैंने लूका २४ अध्याय पढ़ा। इस अध्याय में हम देखते हैं, दो जन इम्माऊस नाम गांव को जा रहे थे। और रास्ते में उन्हें यीशु मिला। जब वे गांव के पास पहुंचे यीशु वे और कहीं जाना चाहा। उस जवान

ने कहा : "मैं नहीं जानता यीशु ने ऐसा क्यों कहा ? वह अवश्य उन दो लोगों के साथ ठहरना चाहता था। मेरा इस बात से अर्थ यह है कि यीशु कितना नम्र है। पहिले उसने अच्छी तरह यह मालूम कर लिया कि उसका दिल से स्वागत होगा। फिर वह खुशी से उनके घर में गया। कम्युनिस्ट नम्र नहीं होते वे ज़बरदस्ती हमारे दिल और दिमाग़ में प्रवेश करना चाहते हैं। सुबह शाम और रात तक केवल उनकी ही बात सुनाने का कष्ट करते हैं। स्कूलों, रेडियो, समाचार पत्रों, पोस्टरों, सिनेमाओं, सभाओं द्वारा जहां भी जाइये कम्युनिस्ट प्रचार होता मिलेगा। आप चारों ओर लगातार नास्तिकवाद का नारा बुलन्द होता पाएंगे चाहे आपको पसन्द आये या न आये। मसीह यीशु हमारी आज़ादी को मान देता है। वह आहिस्ता से हमारे दरवाज़े पर खटखटाता है। **यीशु ने अपनी नम्रता से मुझे जीत लिया है।** मसीह और कम्युनिस्टवाद के इस महान् अन्तर ने मुझे मसीह पर विश्वास करने पर बाध्य किया था।"

केवल पतरस ही ऐसा रूसी नहीं था जो यीशु के चरित्र की नम्रता से प्रभावित हुआ हो। मैं पादरी होते हुए भी यीशु के चरित्र को इस रोशनी में नहीं देख सका था।

उसके मन परिवर्तन के बाद, पतरस ने अपनी आज़ादी और ज़िन्दगी खतरे में डालकर मसीही साहित्य को गुप्त रूप से रूमानियां और रूस के गुप्त चर्चों में पहुंचाया। और एक दिन पतरस इस अपराध में पकड़ा गया। मैं केवल यह जानता हूं कि १९५९ तक वह जेल में था। क्या वह मर गया है ? क्या वह स्वर्ग में है या इस पृथ्वी पर ही मसीह के लिए संघर्ष कर रहा है ? परमेश्वर जानता है, आज वह कहां है ?

पतरस की तरह कई और लोगों ने मन परिवर्तन किया। आत्मा जीतने के बाद हमारा कार्य समाप्त नहीं होता, इस समय तक तो कार्य अधूरा ही है। प्रत्येक जीती हुई आत्मा को दूसरों की आत्मा जीतने के लिए तैयार करना चाहिये। रूसियों ने केवल मन परिवर्तन ही नहीं

किया परन्तु वे गुप्त चर्चों के "कर्मठ सेवक" भी बन गये। वे मसीह के लिए हमेशा कार्यशील थे। वे उत्साह से कार्य करने के बाद भी सोचते कि वे मसीह के लिए कितना कम कार्य कर रहे हैं जिसने उनके लिए अपनी जान दी।

अस्वतंत्र रूमानियां में हमारा गुप्त कार्य

रूमानियां के लोगों के मध्य मसीह का कार्य हमारी गुप्त सेवा-कार्य में ही सम्मलित था।

कम्युनिस्टों ने जल्दी ही भेड़ की खाल उतार फेकी, आरम्भ में उन्होंने चर्च अधिकारियों को बहकावे से जीतने का प्रयोग किया था। परन्तु इसके बाद आतंक का युग शुरू हुआ। हज़ारों बन्दी वना लिए गये। किसी को मसीह के लिए जीतना एक महान् कार्य वन गया। रूसियों के बीच तो यह कार्य आरम्भ से ही कठिन था।

जिन आत्माओं को मसीह के लिए मैंने जीता था उनके साथ मैं जेल में रहा। एक व्यक्ति जो मसीह में विश्वास रखने के कारण जेल भुगत रहा था, मेरे साथ कोठरी में था। इस आदमी के छः बच्चे थे। बीवी बच्चे भूखे थे। शायद वह उन्हें कभी न देख सके। मैंने उससे पूछा : "क्या मेरे प्रति आपको द्वेष है कि मैंने मसीह के बारे में बताकर आपको उसके पास लाया, और इसी कारण से आपका कुटुम्ब दुःख भोग रहा है ?" उसने उत्तर दिया : **"आपने मसीह यीशु उद्धारकर्ता से परिचय करा मुझ पर ऐसा एहसान किया है जिसका आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। मैं दूसरी ओर सोच भी नहीं सकता।"**

हम कई मसीही परचे प्रकाशित करने में सफल हो गये। सेंसर से वचने के लिए नई-नई युक्तियां निकालते थे। कम्युनिस्ट सेंसर में हम कार्लमार्क्स के चित्र वाली शीर्षक की पुस्तक प्रस्तुत करते थे। **धर्म मनुष्य के लिए अफीम है,** या इसी से मिलते-जुलते पुस्तक के कम्युनिस्ट शीर्षक रखते थे। सेंसर वाले हमारी पुस्तक को कम्युनिस्ट पुस्तक समझकर

अपनी सील लगा देते थे। आरम्भ के पृष्ठों में मार्क्स, लेनिन और स्टालिन के अवतरण देखकर सेंसर प्रसन्न होता था। शेष पृष्ठों में मसीह का सन्देश रहता था।

गुप्त चर्च समुद्र की हिमशिला के तरह है जिसका कुछ हिस्सा तो दिखाता है और तीन चौथाई हिस्सा पानी में छिपा रहता है। हम कम्युनिस्ट प्रदर्शनों में जाकर मार्क्स के चित्र वाली पुस्तक बाँटते थे। कम्युनिस्ट लोग हमारी पुस्तकों को कम्युनिस्ट साहित्य समझ कर मोल लेने को उतावले हो जाते थे। जब तक वे दस पृष्ठ तक पहुंचते और परमेश्वर व मसीह के बारे में पढ़ते, हम उनसे बहुत दूर पहुंच चुके होते थे।

नई स्थिति में मसीह प्रचार आसान नहीं था। हमारे लोगों का दमन किया जाता था। लोगों से कम्युनिस्ट सब कुछ छीन ले जाते थे। किसान से ज़मीन, नाई व दर्ज़ी से दुकान छीन लेते थे। केवल पूंजी पति ही नहीं परन्तु ग़रीब से ग़रीब भी पीस दिया गया। हरेक घराने का एक न एक व्यक्ति जेल में था। दरिद्रता बहुत बढ़ गई थी। लोग पूछने लगे : "प्रेम का परमेश्वर बुराई की क्यों विजय होने देता है ?"

आरम्भ के चेलों के लिए भी 'पवित्र शुक्रवार' को प्रचार करना सरल नहीं था, यीशु क्रूस पर मरते समय स्वयं बोला : "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया ?"

परन्तु जो कार्य हुआ वह मनुष्य के द्वारा नहीं, परमेश्वर की ओर से हुआ। मसीह विश्वास इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर रखता है।

यीशु ने हमें लाजर नाम के एक कंगाल के बारे में बताया। वह एक समय इतना पीड़ित था जितना कि हम। वह भूखा था, उसके घाव कुत्ते चाट रहे थे, वह मर रहा था परन्तु अन्त में फरिश्ते उसे स्वर्ग ले गये।

गुप्त चर्च कुछ कार्य बाहर किस प्रकार करता था

गुप्त चर्च की सभाएं, घरों में, जंगलों में, सड़कों पर या जहां कहीं भी स्थान मिले होती थीं। गुप्त सभाओं में बाहर कार्य करने की योजना बनाई जाती थीं। कम्युनिस्ट राज्य में हमने सड़क पर प्रचार करने की युक्ति निकाली जो खतरे से खाली नहीं थी। परन्तु बिना सड़क-प्रचार के हम कई आत्माओं तक नहीं पहुंच पाते। मेरी पत्नी इस कार्य में चतुर थी। कुछ मसीही सड़क के किनारे जमा होकर गीत गाने लगते, गीत सुनकर कुछ भीड़ इकट्ठी हो जाती और मेरी पत्नी मसीही सन्देश दे देती थी। इसके पहिले कि पुलिस आये हम उस स्थान से जा चुके होते थे।

एक दिन, जब मैं और कहीं था, मेरी बीवी ने बुकारेस्ट की मलक्सा फैक्ट्री के गेट पर हज़ारों मज़दूरों को सुसमाचार सुनाया था। वह परमेश्वर और उद्धार पर बोली। दूसरे ही रोज़ मज़दूरों द्वारा कम्युनिस्ट अन्याय के विरुद्ध प्रदर्शन हुआ, कई मारे गये। इन लोगों ने समय पर सुसमाचार सुन लिया!

हम गुप्त चर्च से तो सम्बन्ध रखते थे, परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तरह हमने लोगों और अधिकारियों को मसीह के बारे में खुल कर बताया।

एक बार, सरकारी इमारत की सीढ़ियों पर, दो मसीही भाइयों ने हमारे प्रधानमंत्री घीओरघी देज को मसीह का सन्देश बताने का अवसर ढूंढ़ लिया। उन्होंने प्रधान मंत्री को अपने पापों से पश्चात्ताप करने को कहा। इस साहस के कार्य के कारण इन दो मसीहियों को जेल में डाल दिया गया। कुछ वर्ष बाद प्रधान मंत्री घीओरघी देज बीमार हुए। मसीही सन्देश का बीज जो उनके मन में वर्षों पहिले बोया गया था, अब फल लाया। इस आवश्यकता के समय, प्रधान मंत्री को उन दो मसीहियों के शब्द याद आये। वे शब्द, जैसा कि बाइबल कहती है: "परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत

चोखा है" परमेश्वर के वचन से प्रधान मंत्री का हृदय पिघल गया और उन्होंने अपने आप को मसीह को दे दिया, अपने पापों को स्वीकार किया, प्रभु को उद्धार कर्त्ता ग्रहण किया और बीमारी में ही परमेश्वर का सेवा कार्य आरम्भ किया। जल्दी ही प्रधान मंत्री की मृत्यु हो गई परन्तु वह अपने उद्धारकर्त्ता के पास पहुंच गया क्योंकि दो मसीही भाइयों ने साहस का कार्य कर इसकी कीमत चुकाई थी। कम्युनिस्ट देशों में इसी प्रकार के साहसी भाई हैं।

कम्युनिस्ट देशों के गुप्त चर्च के मसीही केवल गुप्त सभाएं ही नहीं करते परन्तु खुले स्थानों में साहस से सुसमाचार प्रचार भी करते हैं। वे कम्युनिस्ट नेताओं को भी मसीह का सन्देश देते हैं। इसका मूल्य था। इसके अदा करने को हम हमेशा तत्पर थे। आज भी गुप्त चर्च कोई भी मूल्य चुकाने को तैयार हैं।

खुफिया पुलिस ने गुप्त चर्च पर अत्याचार किये क्योंकि वे समझ गये कि यही एक संस्था है जिससे सुसमाचार का कार्य होता है। कम्युनिस्ट अच्छी तरह जानते थे कि मसीहियों द्वारा जो आत्मिक रोक लगती है वह नास्तिक वाद के प्रचार में बाधक होती है। वे समझ गये, जैसा शैतानी बुद्धि को समझना चाहिये कि गुप्त चर्च कम्युनिस्टों के लिए खतरे की जड़ है। वे जानते थे कि जो मसीह में विश्वास करते हैं, वे कभी भी बुद्धि रहित नहीं हो सकते। वे जानते थे कि मनुष्यों को बन्दी बना सकते हैं परन्तु परमेश्वर के विश्वास को कैद नहीं कर सकते। इसीलिए कम्युनिस्ट, गुप्त चर्च से बुरी तरह लड़े।

परन्तु गुप्त चर्च के भी सदस्य और सहायक, कम्युनिस्ट सरकार और खुफिया पुलिस विभाग में हैं।

हमने मसीहियों को आदेश दे खुफिया पुलिस विभाग में नौकरी दिलाई और उन्हें वह वर्दी पहननी पड़ी जो हमारे देश में नफरत की निगाहों से देखी जाती है। वे हमें खुफिया पुलिस की खबर देते थे।

गुप्त चर्च के बहुत से भाई यह कार्य करते थे और अपना विश्वास छिपा-कर रखते थे। खुफिया पुलिस की वर्दी पहिनने पर उनके कुटुम्बियों और मित्रों द्वारा निन्दा होती परन्तु वे अपना सुन्दर रहस्य न बताते हुए अपमान सहते थे। प्रभु यीशु मसीह से उन्हें इतना प्रेम था !

जब मुझे सड़क पर से अपहरण कर रहस्यमय स्थान पर बन्दी बना कर रखा गया। मेरा पता लगाने के लिए एक मसीही डाक्टर खुफिया पुलिस विभाग में सम्मलित हो गया। खुफिया डाक्टर होने के कारण उसे बन्दियों की कोठरी में जाने का अवसर मिलता। उसे आशा थी कि वह मुझे ढूंढ़ निकालेगा। मसीही मित्रों ने उसको कम्युनिस्ट समझ उसका तिरस्कार करना आरम्भ कर दिया। एक मसीही के लिए सताने वालों की वर्दी पहिनकर घूमना बन्दियों के कपड़े पहिनने से कहीं अधिक बलिदान की बात है।

इस डाक्टर ने एक अंधेरे-गहरे कमरे में मुझे ढूंढ़ ही लिया। और मसीही भाइयों में समाचार पहुंचा दिया कि मैं जीवित हूं। जेल में साढ़े आठ साल के अरसे में यह मेरा पहिला मित्र था जो मुझ से मिला। १९५६ के आइसनहावर-कुश्चेव वार्तालाप के बाद, मसीहियों द्वारा जोर लगाने पर मुझे कुछ समय के लिए रिहा कर दिया गया।

अगर मुझे ढूंढने के लिए मसीही डाक्टर खुफिया पुलिस में भर्ती न होता तो मुझे कभी रिहा नहीं किया जाता। मैं इस समय जेल में होता या कबर में।

खुफिया पुलिस में होने के नाते गुप्त चर्च के सदस्यों ने हमें कई बार सावधान किया। इनसे हमें बहुत सहायता मिलती थी। अब भी गुप्त चर्च के कई सदस्य खुफिया पुलिस में हैं और समय समय पर मसीहियों को सावधान करते रहते हैं। कुछ कम्युनिस्ट पार्टी में ऊंचे अधिकारी हैं परन्तु विश्वास मसीह में रखते हैं। ये लोग हमारी बहुत मदद करते

हैं। स्वर्ग में, एक दिन वे सबके सामने उनके मसीह में विश्वास की दुहाई दे सकेंगे। आज उन्हें अपना विश्वास गुप्त रखना पड़ता है।

बहुत से गुप्त चर्च के सदस्य पकड़े गये और जेल में डाल दिये गये। हमारे गुप्त चर्च में "यहूदा" भी थे। वे खुफिया पुलिस में हमारी योजनाओं का भंडाफोड़ करते थे। कम्युनिस्ट, हमारे मसीहियों को पीटते, खतरनाक दवाएं पिलाते और हर प्रकार के धोखों से गुप्त चर्च के बारे में मालूम करना चाहते थे। कम्युनिस्ट पूछते, गुप्त चर्च का पास्टर कौन है, सदस्य कौन-कौन हैं, इत्यादि ?

२

फरवरी २६, १६४८ तक मैंने बाहरी प्रचार और गुप्त रूप से भी कार्य किया। वह एक सुहावना रविवार था। मैं चर्च की ओर चला जा रहा था। रास्ते में ही, खुफिया पुलिस ने मुझे गायब कर दिया।

बाइबल में कई बार "मनुष्य चोरी" के बारे में पढ़कर मुझे आश्चर्य होता था। परन्तु कम्युनिस्टों ने मुझे पकड़कर मेरे जीवन से ही इस शब्द का अर्थ समझा दिया।

उस समय इसी प्रकार कई और मसीहियों का अपहरण किया गया। खुफिया पुलिस की गाड़ी मेरे सामने रुकी, चार आदमी कूदे और मुझे गाड़ी में ढकेल कर ले गये। मैं कई साल के लिए जेल में ठूंस दिया गया। आठ साल तक किसी को पता नहीं चला कि मैं कहां था। मर गया या जीवित था। मेरी बीवी के पास खुफिया पुलिस पहुंची। उससे कहा कि वे रिहा किये हुए लोग हैं और वे स्वयं मेरे दफन में सम्मलित थे। मेरी बीवी का दिल टूट गया।

उस समय सारी कलीसियाओं के हज़ारों मसीही जेल में डाल दिए गये। केवल पादरी लोग ही नहीं परन्तु सीधे-सादे किसान, छोटे-छोटे लड़के लड़कियां भी जो मसीह में विश्वास रखते और गवाही देते थे, जेल में डाल दिये गये। रुमानियां के जेल भर गये। हरेक कम्युनिस्ट देश के जेलों की तरह यहां भी यातना भुगतना आवश्यक था।

यातनाएं अत्यंत भयंकर थीं। मैं जिन यातनाओं को भुगत चुका हूं उनका अधिक बयान करना नहीं चाहता। जब मैं उनका बयान कर

देता हूं तो मैं रात में सो नहीं पाता। वे बड़ी दुख पहुँचाने वाली बातें हैं।

दूसरी पुस्तक "इन गॉड्स अन्डर ग्राउंड" में मैंने जेल के परमेश्वर के साथ अनुभव का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

अकथनीय यातनायें

फ्लोरिसक्यू नामक पास्टर को गर्म लोहे से दागा गया। उसको बुरी तरह पीटा गया। एक नाली द्वारा भूखे चूहे उसकी कोठरी में छोड़ दिये गये। वह सो नहीं पाया क्योंकि अपने आप को भूखे चूहों के हमलों से बचाता रहा।

उसे ज़बरदस्ती, दो सप्ताह तक रात और दिन खड़ा रखा। कम्युनिस्ट प्रयत्न कर रहे थे कि वह अपने मसीही भाइयों को धोका दे परन्तु उसने धैर्य से उनका सामना किया। अन्त में हार कर वे उसका चौदह वर्ष का बेटा ले आये और उसके सामने उसे कोड़े मारे। कम्युनिस्ट, पास्टर से कुछ कहलवाना चाहते थे। बेचारा पास्टर बहुत कुछ पागल हो गया। जब तक सहते बना उसने सहा आखिर में उसने चिल्लाकर कर अपने बेटे से कहा "अलेकज़ेंडर, मुझे अब कह देना चाहिये जो वे चाहते हैं। मैं अब तुम्हें पिटता हुआ नहीं देख सकता।" बेटे ने उत्तर दिया, "पिताजी, विश्वासघाती होकर मुझ पर अन्याय न कीजिए। परवाह नहीं अगर वे मुझे जान से भी मार दें। मैं 'यीशु और पितृभूमि' का नाम लेकर ही मरूंगा। यह सुनकर कम्युनिस्ट आग बबूला हो गये। वे बच्चे पर टूट पड़े। सारी कोठरी में खून ही खून फैल गया। वह परमेश्वर का नाम लेता हुआ मर गया। हमारा प्रिय भाई फ्लोरिसक्यू यह दर्दनाक दृश्य देखने के बाद बहुत बदल गया।

हमें इस प्रकार की हथकड़ियां पहिनाई जातीं जिसमें अन्दर कीलें होती थीं। सर्दी के कारण हाथ के थोड़े से कांपने पर चुभ जाती थीं।

मसीहियों को उलटा लटकाकर पिटाई की जाती और उनकी देह कभी आगे कभी पीछे जाती थी। मसीहियों को रिफरीजीरेटर में बन्द कर दिया गया। हमें अलमारी के अन्दर बर्फ की सिलों के बीच बिना कपड़े पहिने पटक दिया जाता था। बन्दीगृह के डाक्टर, सर्दी से जम कर मरने के चिन्हों का अध्ययन करते थे। जैसे ही हालत शोचनीय होती डाक्टर लोग जेल अधिकारियों को इशारा कर देते और वे हमें अलमारियों में से निकाल कर गर्माते थे। थोड़ी गर्माई के बाद दोबारा हमें बर्फ की अलमारियों में डाल दिया जाता था। यह सिलसिला बार-बार चलता रहता था। आज भी रिफरीजीरेटर खोलते समय मेरा मन भयभीत हो उठता है।

हमें कद से थोड़े ही बड़ी अलमारियों में रखा जाता था। अलमारी में दर्जनों नुकीली कीलें इस प्रकार लगा दी जाती थीं कि हम हिल-डुल न सकें। हमें घन्टों, इन अलमारियों में रखा जाता था। थकने पर या नींद से इधर-उधर हिलते तो तेज कीलें हमारे बदन में चुभ जाती थीं।

जो दुर्व्यवहार कम्युनिस्टों ने मसीहियों के साथ किया है, वह मनुष्य की कल्पना से परे है।

मैंने देखा है, कम्युनिस्ट, मसीहियों को यातना दे रहे हैं और मसीहियों का मुख विजय की ज्योति से दमक रहा है। कम्युनिस्ट सताते समय चिल्लाते थे "हम शैतान हैं।"

हम हाथ-पैरों की लड़ाई में नहीं परन्तु सिद्धांतों की लड़ाई में आगे हैं। हम शैतानी ताकत का सामना करते हैं। हमने पाया कम्युनिस्ट-वाद मनुष्यों की ओर से नहीं लेकिन शैतान की ओर से है। यह शैतानी शक्ति है, इस शक्ति का मुकाबला अधिक शक्तिशाली आत्मा से ही हो सकता है, केवल परमेश्वर की आत्मिक शक्ति द्वारा।

मैं प्रायः जल्लादों से पूछता, 'क्या आप लोगों के दिल में दया नहीं

है ?" वे अक्सर इस सवाल का उत्तर लेनिन के शब्दों में देते थे, "बिना अंडे को फोड़े आप उसे भोजन के रूप में उपयोग नहीं कर सकते या लकड़ी को काटने पर उसके छिलके तो बिना उड़े नहीं रह सकते।" मैंने फिर कहा, "लेनिन ने इसके आगे जो शब्द कहे हैं वे भी मैं जानता हूं। जब आप लकड़ी काटते हो तो उसे दर्द अनुभव नहीं होता। परन्तु यहां आप मनुष्य से व्यवहार करते हो। यहां अन्तर है। प्रत्येक यातना पर दर्द होता है और इस दुख पर रोने वाली माताएँ हैं।" इसका उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ।

कम्युनिस्ट भौतिकवाद में विश्वास रखते हैं। उनके लिए सामग्री के अतिरिक्त कोई वस्तु महत्त्व नहीं रखती। उनकी दृष्टि में मनुष्य लकड़ी और अंडे से अधिक नहीं है। इस दृष्टि के कारण से ही वे इतनी दुष्टता करते हैं जिस पर विश्वास नहीं हो पाता है।

नास्तिकवाद की दुष्टताओं पर यकीन नहीं होता। जब मनुष्य विश्वास करने लगता है कि अच्छाई और बुराई का फल नहीं मिलता तब उसके जीवन में मानवता का प्रश्न ही नहीं उठता। मनुष्य में जो बुराइयां भरी हुई हैं उनको रोकने की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती। कम्युनिस्ट जल्लाद प्रायः कहते रहते थे, "परमेश्वर नहीं है, न भविष्य में ही होगा, बुराइयों की सजा भी नहीं है। हम जो चाहे कर सकते हैं।" एक जल्लाद को तो मैंने यहां तक कहते सुना, "परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिसमें मैं विश्वास नहीं करता कि मैं अब तक अपने दिल की दुष्टता आप लोगों पर निकालने के लिए जीवित हूं।" उसने बन्दियों पर जो अत्याचार किये उससे आत्मा कांप उठती है उसकी दुष्टता पर विश्वास नहीं होता।

मुझे अफसोस होता है यदि मगरमच्छ किसी को खा जाये परन्तु मैं उसकी निन्दा नहीं करता। वह कोई नैतिकता को समझने वाला जीव तो नहीं है। इसी प्रकार कम्युनिस्टों से नैतिकता की आशा करने का

प्रश्न ही नहीं उठता। उन्होंने नैतिकता के भाव को अपने जीवन से हटा दिया है। वे बड़े घमन्ड से कहते हैं कि हमारे दिलों में दया नहीं है।

मैंने उनसे सीखा। मसीह के लिए उनके दिल में तिल भर भी जगह नहीं है, इसलिये मैंने भी फैसला किया कि अपने मन में शैतान के लिये तनिक भी स्थान नहीं छोड़ूंगा।

मैंने अमेरीकन सीनेट की "इनटरनल सेक्यूरिटी सब कमेटी" के समक्ष कुछ यातनाओं का वर्णन किया। वहां मैंने कम्युनिस्टों की कुछ भद्दी हरकतों का बयान किया। कम्युनिस्ट मसीहियों को क्रूस से चार-चार दिनों तक बांध देते थे। क्रूस भूमि पर लिटा दिये जाते और सैकड़ों बन्दी शौच आदि क्रिया मसीहियों के शरीर पर पूरी करते थे। इसके बाद क्रूस खड़े कर दिये जाते और कम्युनिस्ट दिल खोलकर ठट्ठा करते: "अपने मसीह को देखो! कितना सुन्दर दिख रहा है!" मैंने एक पादरी और उसके साथ किये गये ठट्ठे भरे अत्याचार का वर्णन किया। उसे गन्दी वस्तुओं द्वारा पिटस्टी जेल में बन्दियों के बीच "प्रभु भोज" संस्कार जबरदस्ती करवाया गया। मैंने सवाल किया ऐसे वातावरण में आपने जीवित रहना क्यों पसन्द किया? उसने कहा, "मेहरबानी से मुझे न परखिए! मुझे मसीह से अधिक यातनाएं दी गई हैं।" बाइबल में नरक के सारे विवरण और महान कलाकार द्वारा दुख का बयान भी कम्युनिस्ट जेलों की यातनाओं की तुलना में फीका है।

यह विवरण पिटस्टी जेल के एक रविवार का है। दूसरी कम्युनिस्ट हरकतों का तो वर्णन नहीं किया जा सकता क्योंकि वे नैतिक स्तर से गिरी हुई हैं। आपके मसीही भाइयों को ऐसी अनैतिक दुविधाओं से दिन प्रतिदिन आज भी गुजारना पड़ता है।

पास्टर मिलान हेमोविकी महान विश्वासी थे।

बन्दियों से जेल खचाखच भर चुके थे। जेलर हमें नामों से नहीं जानते थे। वे कोड़े मारने को बन्दियों को बुलाते थे। वे कहते: "जिसे

जेल का नियम तोड़ने पर पच्चीस-पच्चीस कोड़े खाने की सजा मिली है, बाहर निकलो।" पास्टर मिलान किसी को कोड़ों से बचाने के लिए अपने आप को कोड़े पड़वाते थे। इस प्रकार वह केवल स्वयं ही सम्मान का पात्र नहीं बनते लेकिन दूसरों के सामने अच्छे मसीही का नमूना पेश करते थे।

कम्युनिस्टों के अत्याचार का अंत नहीं है। अगर मैं उन सबका बयान करना शुरू कर दूं तो पुस्तक समाप्त नहीं हो सकती। कम्युनिस्टों द्वारा यातनाओं और मसीहियों के साहसी कार्य दोनों ही बातों की चर्चा रहती थी। जेल में मसीहियों के साहस की कहानियां द्वारा स्वतन्त्र मसीहियों को प्रेरणा मिलती थी। गुप्त चर्च की एक युवती जो सुसमाचार प्रचार करती थी, खुफिया पुलिस द्वारा उसको पकड़ने की योजना बनी। गिरफ्तारी कुछ समय के लिए रोक दी गई। कुछ दिन बाद यह युवती दुलहिन बनी। पुलिस को शादी की तारीख मालूम थी। शादी का दिन स्त्री के जीवन का सबसे सुन्दर दिन होता है। यह युवती दुलहिन के कपड़ों में सजी हुई, अपने आपको दुनिया में सबसे भाग्यशाली समझ रही थी। अचानक दरवाजा खोलकर पुलिस ने प्रवेश किया और दुलहिन को गिरफ्तार करने बढ़ी। युवती ने अपनी कलाईयां बढ़ा दीं। उसे हथकड़ी पहिना दी गई। उसने अपने प्रिय की ओर निगाहें फेरीं फिर हथकड़ियों को देखा और कहा : "स्वर्गीय दूल्हे को धन्यवाद, उसने मुझे यह अमूल्य उपहार मेरी शादी पर दिया। मैं मसीह को धन्यवाद देती हूँ कि उसने मुझे यातना के योग्य समझा।" रोते हुए दूल्हे और मसीहियों के बीच से दुलहिन को वे ले गये। पांच साल बाद, इस युवती को रिहा कर दिया गया। अब वह अपनी उम्र से तीस वर्ष अधिक लग रही थी। वह एक बर्बाद और लुटी हुई औरत थी। उसके दूल्हे ने उसकी प्रतीक्षा की थी। उसने कहा, "मैं मसीह की पूरी रीति से सेवा न कर सकी।" ऐसे सुन्दर मसीही होते हैं गुप्त चर्च के !

ब्रेन वॉशिंग क्या है

सब लोग कोरिया-युद्ध और वियतनाम में हुई ब्रेन वॉशिंग के बारे में सुन चुके हैं। मैं स्वयं ब्रेन वॉशिंग का अनुभव कर चुका हूं। यह सबसे भयंकर यातना है।

कई वर्षों तक प्रतिदिन लगातार लगभग सत्तरह घन्टे तक यही सुनना पड़ा :

कम्युनिस्टवाद उत्तम है !

कम्युनिस्टवाद उत्तम है !

कम्युनिस्टवाद उत्तम है !

कम्युनिस्टवाद उत्तम है !

मसीही धर्म मूर्खता है !

मसीही धर्म मूर्खता है !

मसीही धर्म मूर्खता है !

छोड़ दो !

छोड़ दो !

छोड़ दो !

छोड़ दो !

प्रतिदिन सत्तरह घंटे—वर्षों तक यही चलता रहा।

कई मसीहियों ने 'ब्रेन वॉशिंग' से संघर्ष की युक्ति पूछी। इसके मुकाबले की केवल एक ही तरकीब है। वह है "हार्ट वॉशिंग"। यदि दिल मसीह यीशु द्वारा धो दिया गया है और आपका दिल यीशु से प्रेम करता है तो आप बड़ी से बड़ी यातना आसानी से सह सकते हैं। एक प्रेम करने वाली दुलहिन अपने दुल्हे के लिए क्या नहीं कर सकती ? प्यार करने वाली मां अपने बच्चे के लिए क्या नहीं कर सकती ? अगर

आप यीशु से ऐसा प्रेम करें जैसा मरियम ने किया। अगर आप यीशु से ऐसा प्रेम करें जैसे दुलहिन अपने दूल्हे से करती है। तो आप इस प्रकार की यातनाओं का सामना कर सकते हैं।

परमेश्वर हमारा न्याय हमारी सहन शक्ति की क्षमता से नहीं परन्तु उसके प्रति हमारे प्रेम से करेगा। मैं कम्युनिस्ट जेलों में परमेश्वर से प्रेम करने की एक जीवित गवाही हूं। मसीही लोग परमेश्वर और मनुष्यों से प्रेम करते हैं।

यातनाएं बिना रोक-टोक लगातार चलती रहीं। जब मैं बेहोश हो जाता था, जल्लादों से बातों के योग्य न रह जाता था तब वे मुझे कोठरी में वापिस ले जाते थे कि मेरे होश में आने पर फिर मुझ से पूछा-ताछी कर सकें। इतनी यातनाओं पर तो बहुतों ने दम तोड़ दिया था लेकिन मैं न जाने क्यों बच गया। पिछले वर्षों में कई भिन्न-भिन्न जेलों में जल्लादों ने मेरी चार "रीढ़ की हड्डियाँ" तोड़ दीं। लगभग दर्जन भर स्थानों पर छेदा और अट्ठारह स्थानों पर गर्म लोहे से दागा और काटा।

ओसलो के एक डाक्टर ने मेरा परीक्षण कर देखा। मुझे फेफड़े का क्षय भी है। डाक्टर ने मेरा जीवत होना एक चमत्कार बताया। उनकी मेडिकल पुस्तकों के हिसाब से तो मुझे कई वर्ष पहिले ही समाप्त हो जाना चाहिये था। मैं खुद जानता हूं यह चमत्कार है। परमेश्वर चमत्कार का परमेश्वर है।

मेरा विश्वास है कि परमेश्वर ने यह चमत्कार किया कि आप गुप्त चर्च के लिए मेरी आवाज़ सुन सकें जो कम्युनिस्ट देशों में अत्याचार सह रहे हैं। परमेश्वर ने उन दुख पाने वालों में से एक को जेल से निकाला जिससे आप अपने विश्वासी भाइयों की आवश्यकताओं को जान सकें।

अल्पकालीन स्वतन्त्रता—दोबारा गिरफ्तारी

१९५६ आया। मैं जेल में साढ़े आठ साल तक रह चुका था। मेरा वज़न घट गया था। बदन पर निशान हो चुके थे। जल्लादों ने हर प्रकार की यातनाएं दीं लेकिन मैं डटा रहा। आखिर हारकर मुझे आज़ाद कर दिया। इसके बाद मुझे पकड़ने के प्रस्ताव फिर होने लगे।

मुझे आजाद कर अपनी पुरानी जगह पर भेज दिया गया। मैंने एक सप्ताह में दो सन्देश दिये। यह देखकर पुलिस ने मुझे बुलाया और उपदेश देने व धार्मिक कार्य करने से रोका। मैंने कलीसिया के लोगों से धीरज रखने की अपील की। यह सुनकर पुलिस वाले चीखे, "इसका अर्थ हुआ, धीरज रखो जब तक अमेरीकी आकर तुम्हें आजाद नहीं कर देते ?" मैंने उनसे कहा, "समय बदलेगा।" पुलिस वाले चिल्लाये, "यह कहकर तुम उन्हें यकीन दिलाना चाहते हो कि शासन खत्म हो जायेगा। यह क्रांती-विरोधी झूठ है।" और मेरी कलीसिया सेवा का अंत कर दिया गया।

शायद अधिकारियों ने समझा कि मैं डर जाऊंगा और प्रचार नहीं करूंगा। वे गलत समझ रहे थे। मैं उसी कार्य पर लौट गया जो मैं कर रहा था। मेरे घराने ने मेरी सहायता की।

मैंने फिर विश्वासियों के बीच कार्य शुरू कर दिया। इस बार मेरे बदन पर निशान थे जो नास्तिकवाद की नीचता को समझा सकते थे। ये चिह्न लड़खड़ाती आत्माओं को उत्साह दे सकते थे। मैंने रहस्यमयी प्रचारकों का जाल बिछाया और कम्युनिस्टों की आंखों में धूल झोंकी। एक मनुष्य जो इतना अन्धा है कि परमेश्वर का शक्तिशाली हाथ नहीं देख सकता वह एक प्रचारक को कैसे देख सकेगा !

अंत में, पुलिस ने यह मालूम कर ही लिया कि मैं क्या कर रहा हूं। मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। किसी कारण उन्होंने मेरे परिवार

के लोगों को नहीं पकड़ा। शायद इसलिए कि मेरी खबर काफी फैल गई थी। साढ़े आठ साल के बाद तीन माह की आजादी फिर साढ़े पांच वर्ष की कैद मिली।

मेरी दूसरी गिरफ्तारी कई प्रकार से पहिली से कहीं अधिक दुखदाई थी। क्योंकि मैं जानता था कि अब मेरे साथ क्या व्यवहार किया जायेगा। इस बार मेरी शारीरिक दशा एकदम गिर गई। परन्तु हमने गुप्त चर्च का गुप्त कार्य, कम्युनिस्टों के गुप्त जेलों में भी जारी रखा।

हम एक बात पर सहमत हुए — हम प्रचार करेंगे और वे पीटेंगे

दूसरे बन्दियों को सुसमाचार प्रचार करना मना था। यह सबको मालूम था कि प्रचार किया और बुरी तरह पिटे। हम में से कुछ ने यह सोचा कि प्रचार करेंगे। यह एक प्रकार का राज़ीनामा था; **हम प्रचार करते थे और वे पीटते थे।** हम प्रचार करने में खुश थे वे पीटने में, इसलिए हरेक खुश था।

यह प्रचार और पीटने की घटना कई बार हुई। एक भाई बन्दियों को सुसमाचार सुना रहा था। बीच में ही जल्लाद आ धमके। वे चीखते-चिल्लाते हुए "पीटने के कमरे" में उसे ले गये। फिर उस पर इस तरह टूट पड़े जैसे मार ही डालेंगे। वह खून से लिपटा हुआ कोठरी में डाल दिया गया। वह सारी शक्ति लगाकर कुछ संभला और पूछने लगा : "अच्छा भाइयो मैंने कौनसी जगह सन्देश छोड़ा था ?" उसने सन्देश शुरू किया।

मैंने ऐसी कितनी सुन्दर घटनाएं देखीं हैं।

कभी-कभी पास्टर के अतिरिक्त दूसरे व्यक्ति सन्देश देते थे। साधारण मनुष्य पवित्र आत्मा की प्रेरणा से उत्तम सन्देश देते थे। उनका दिल उनकी जबान पर आ जाता क्योंकि ऐसे वातावरण में प्रचार कोई

छोटी बात नहीं थी। क्योंकि जल्लाद प्रचारक को पकड़ते और मार-मारकर अधमरा कर देते थे।

घेरला जेल में, एक मसीही भाई ग्रीकू को धीरे-धीरे मारकर मृत्यु दंड की सजा दी गई। यह कार्यवाही कुछ हफ्तों में जाकर खतम हुई। उसे तड़पा-तड़पा कर मारा गया। रबर की लाठी से पैरों पर मारकर छोड़ दिया। कुछ और ऊपर मारकर छोड़ दिया। फिर नाजुक स्थान पर मार कर बेहोश कर दिया। डाक्टर ने सूई लगाकर होश दिलाया, अच्छे भोजन से कुछ जान डाली। इसके बाद फिर पिटाई शुरू की गई। इस तरह ग्रीकू को किस्तों में पिटाई कर मौत के घाट उतार दिया गया। जल्लादों द्वारा जो यातना दी जाती थी, उसका नेतृत्व रेक नामक व्यक्ति करता था। रेक, कम्युनिस्ट पार्टी की "सेंट्रल कमेटी" का सदस्य था।

"तुम जानते हो, मैं परमेश्वर हूं। मेरे हाथ में तुम्हारी जिन्दगी और मौत है। जो स्वर्ग में है, वह तुम्हें जीवित रखने का निर्णय नहीं ले सकता। सब मुझ पर आश्रित हैं। अगर मैं चाहूं तुम्हें अभी खतम कर दूं।" रेक ने मसीहियों का मजाक उड़ाया। यही शब्द प्रायः कम्युनिस्ट, मसीहियों से कहा करते थे।

इस भयंकर अवस्था में भी, भाई ग्रीकू ने रेक को ऐसा उत्तर दिया जिसे स्वयं रेक ने बाद में मुझे बताया। ग्रीकू ने कहा : "आप नहीं जानते आप कितनी गहरी बात कह रहे हैं। आप वास्तव में एक देवता हैं। हरेक इल्ली भी एक तितली बनती है, अगर वह उचित रीति से विकसित हो। आप यातना देने वाले और खूनी बनने के लिए नहीं उत्पन्न हुए हैं आप परमेश्वर की तरह बनने के लिए पैदा हुए हैं। यीशु ने उसके समय के यहूदियों से कहा : "तुम देवता हो" परमेश्वर की बुद्धि तुम में है। पौलुस प्रेरित की तरह बहुत से अत्याचारी, एक समय यह जान गये कि अत्याचार करना लज्जा की बात है। उन्होंने समझा वे बहुत अच्छे कार्य कर सकते हैं। वे पवित्र स्वभाव के साझेदार बने।

मुझ पर यकीन कीजिए, रेक साहब, आप को एक देवता बनने का बुलावा है, एक यातना देने वाला नहीं।"

उस समय तो रेक ने अपने बन्दी के शब्दों पर ध्यान नहीं दिया, जिस प्रकार शाऊल ने स्तिफनुस की सुन्दर गवाही पर नहीं दिया था और स्तिफनुस उसके सामने मारा गया। बाद में वही शब्द उसके दिल में काम कर गये। इसी प्रकार रेक भी बाद में ग्रीक के शब्दों से कायल हुआ। उसने जाना कि उसका यही बुलावा है।

सारी यातनाओं से एक नतीजा निकलता है : आत्मा शरीर की स्वामी है। यातनाएं सहते समय प्राय: यह लगता है कहीं दूर आत्मा में, प्रभु यीशु की महिमा और उसकी मौजूदगी में हम खो गये हैं।

जब हमें हफ़्ते में एक बार रोटी का एक टुकड़ा और प्रतिदिन गंदा सूप मिलता तब भी हम ईमानदारी से "दशवांश" देते थे। हरेक दसवें हफ़्ते हम हमारी रोटी का टुकड़ा "दशवांश" समझ, अपने कमज़ोर भाइयों को दे देते थे।

एक मसीही को मृत्यु दंड दिया गया। मृत्यु से पहिले उसको पत्नी से मिलने का अवसर दिया गया। अपनी पत्नी से उसके अन्तिम शब्द यह थे : "तुम समझ लो जो मुझे मृत्यु दंड दे रहे हैं, उनके लिए मेरे दिल में प्रेम है। वे नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं। मेरी तुमसे प्रार्थना है कि तुम भी उनसे प्रेम करो। अपने दिल में नफरत न लाओ कि उन्होंने तुम्हारे प्रिय को मार डाला। हम स्वर्ग में मिलेंगे।" इन शब्दों ने खुफिया पुलिस के अफसर के दिल में असर किया। बाद में इस अफसर ने ये कहानी मुझे जेल में बताई क्योंकि इस अफसर को मसीही बनने के दोष में बन्द कर दिया गया था।

तिरगूओकना जेल में, एक युवक बन्दी मैंचीविकी को अट्ठारह वर्ष की अवस्था में जेल में डाल दिया गया था। यातनाओं के कारण उसे

क्षय रोग हो चुका था। परिवार के लोगों ने यह मालूम होने पर उसे स्ट्रेपटोमाइसिन की सौ शीशियां भेजीं। यह दवा उसके लिए जीवन और मृत्यु का प्रश्न थी। जेल के राजनीतिक अधिकारी ने उसे बुलवाया और कहा : "तुम घर का कोई भी पार्सल प्राप्त नहीं कर सकते। यह तुम्हारे घर से आया हुआ दवाओं का पार्सल है जिससे तुम अपनी जान बचा सकते हो। तुम अभी युवक हो इसलिए मैं निजी रूप से तुम्हारी मदद करना चाहता हूं। तुम मेरी थोड़ी सहायता करो जिससे मैं भी कर सकूं। तुम्हारे साथी बन्दियों के बारे में सूचना दो क्योंकि मैं भी अपने अधिकारियों के सामने जवाब दे सकूंगा कि मैंने तुम्हें पार्सल क्यों दिया।" मैंचीविकी ने उत्तर दिया : "मैं एक विश्वासघाती की तरह जीवित रहने से मर जाना पसन्द करता हूं। मुझे आपकी शर्तें स्वीकार नहीं हैं। मुझे मर जाने दीजिए।" इस अफसर ने युवक से हाथ मिलाकर मुबारकबाद दिया। और कहा : "मुझे तुमसे यही उत्तर की आशा थी। लेकिन मेरे पास दूसरा प्रस्ताव भी है। कुछ तुम्हारे बन्दी साथी हमें समाचार देते रहते हैं। वे मसीही अब कम्युनिस्ट बन चुके हैं। वे तुम्हारे साथ धोका कर रहे हैं। वे दोहरी नीति अपनाये हुए हैं। हमें उन पर विश्वास नहीं है। हम केवल ये जानना चाहते हैं कि वे लोग किसके लिए ईमानदार हैं। तुम्हारे लिए तो वे विश्वासघाती हैं। देखो, वे लोग तुम्हें कितनी हानि पहुंचा रहे हैं। मैं यह जानता हूं कि तुम अपने कामरेडों को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते। परन्तु तुम विश्वासघातियों के बारे में हमें बताकर अपना प्राण बचा सकते हो!" मैंचीविकी ने पहिले ही की तरह सरलता से उत्तर दिया : "मैं मसीह का अनुयायी हूं। मुझे मसीह ने अपने शत्रुओं से भी प्रेम करना सिखाया है। ये लोग जो हमें धोका दे रहे हैं, वास्तव में हमारी बहुत हानि कर रहे हैं परन्तु हम बुराई का बदला बुराई से नहीं दे सकते। मैं उनकी भी खबर नहीं दे सकता। मुझे उन पर दया आती है, मैं उनके लिए प्रार्थना करूंगा। मैं कम्युनिस्टों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता।" मैंचीविकी उस

विवाद के बाद अपनी कोठरी में लौट आया। और मेरे सामने परमेश्वर की महिमा करते हुए, मर गया। **प्रेम ने जीने की स्वाभाविक इच्छा को भी जीत लिया।**

अगर कोई गरीब संगीत का प्रेमी है तो वह अपना अन्तिम रुपया भी संगीत सुनने में लगा देगा। सारा रुपया खतम होने पर भी वह निराश नहीं होता क्योंकि उसने मनपसन्द संगीत सुना है।

मैं जेल में इतने दिन रहने के बाद भी निराशा अनुभव नहीं करता। मैंने सुन्दर कार्यों को देखा है। मैं भी एक कमजोर और साधारण बंदी की तरह जेल में रहा। परन्तु मेरे साथ जेलों में महान संत और साहसी लोग भी थे जो पहिली शताब्दी के मसीही संतों के तुल्य थे। वे खुशी-खुशी मसीह के लिए जान देने जाते थे। इन महान लोगों के विश्वासों का तो बयान ही नहीं किया जा सकता।

जो घटनाएं मैंने बताई वे विचित्र नहीं हैं। गुप्त चर्च के मसीहियों के लिए अलौकिक बातें स्वाभाविक बन जाती हैं।

कलीसिया मसीह की दुलहिन है। जेल में गुप्त कलीसिया का कार्य देखकर मैंने उसे मसीह जैसा प्यार करना आरम्भ कर दिया। मैंने गुप्त कलीसिया की आत्मिक सुन्दरता और बलिदान को स्वयं परखा है।

मेरी पत्नी और बेटे का क्या हाल हुआ

मेरे जेल जाने के बाद मुझे नहीं मालूम मेरी पत्नी और बेटे का क्या हुआ ? वर्षों बाद पता चला पत्नी भी जेल में है। मसीही महिलाओं को पुरुषों से अधिक यातना का सामना करना पड़ता है। युवतियों के साथ जल्लाद बलात्कार करते थे। उपहास और अश्लीलता हद से गुजर चुकी है। महिलाओं से नहर बनवाने में पुरुषों का सा वजन लादा जाता था। सर्दी में मिट्टी खुदवाई जाती। वैश्याएं मसीही महिलाओं के काम की देख-रेख कर उन्हें पूरी तरह सताती थीं। मेरी बीवी घास खाकर जीवित रही। इस नहर बनवाने के समय भूखे मसीहियों ने चूहे और

सांप का मांस खाकर गुज़ारा किया। रविवार को जल्लाद लोग महिलाओं को डेनयूब नदी में फेंकते और मछली की तरह ऊपर खेंचते थे। मेरी पत्नी को भी इसी तरह डेनयूब में फेंका गया और जल्लादों ने मज़ाक उड़ाया।

मेरा बेटा मिहाई अकेला सड़कों पर भटकता फिरा। बचपन से ही मिहाई बड़ा धार्मिक था। जब मां-बाप उसकी नौ वर्ष की आयु में ही धर्म के कारण उससे अलग कर दिये गये तो उसके मसीही विश्वास पर संकट आया। उसने क्रोधित होकर अपने धर्म पर प्रश्न आरम्भ कर दिये। नौ वर्ष की आयु में ही मिहाई को जीविका कमाने की चिन्ता लग गई।

शहीद मसीहियों के घरानों की सहायता करना अपराध था। दो महिलाओं को मिहाई की सहायता करने के जुर्म में गिरफ्तार कर इतना पीटा गया कि आज भी पन्द्रह वर्ष बाद, वे अपाहिज हैं। एक महिला जिसने अपनी जान पर खेल कर मिहाई को शरण दी, उसे आठ वर्ष की जेल दी गई। उस महिला की हड्डी तोड़ दी और दांत निकाल लिए। सारी जिन्दगी के लिए वह बेकार कर दी गई।

मिहाई यीशु को स्वीकार करता है

ग्यारह साल की आयु में मिहाई कमाने लगा यातनाओं ने उसके विश्वास को हिला सा दिया। पत्नी के बन्दी बनाए जाने के बाद, मिहाई को अपनी माता से मिलने की आज्ञा दी गई। मिहाई अपनी माता को दुबला-पतला, बन्दियों के कपड़ों में देखकर पहिचान भी न सका। "मिहाई, यीशु में विश्वास रखो!" माता ने कहा। जल्लाद यह सुन कर आग बबूला हो गये, उन्होंने माता को धक्का देकर मिहाई से अलग कर दिया। मिहाई रोते हुए, अपनी माता का घसीटा जाना देखता रहा। उसने देखा कि मसीह को इस अवस्था में भी प्रेम किया जा सकता है, वही सच्चा उद्धारकर्त्ता है। यह घड़ी मिहाई के मन परिवर्तन की

पड़ी थी। उसने बाद में कहा : "अगर मसीही धर्म के पास अपनी सच्चाई का कोई सुबूत भी नहीं होता तब भी मेरे विश्वास के लिए इतना प्रयाप्त था कि **मेरी मां मसीह में विश्वास रखती है।**" इसी दिन से मिहाई ने मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर लिया।

स्कूल में मिहाई को हमेशा संघर्ष ही करना पड़ता था। वह एक अच्छा विद्यार्थी था उसको एक लाल टाई दी गई—यह टाई युवक कम्युनिस्ट संघ की चिन्ह थी। मेरे बेटे ने कहा : "जिन लोगों ने मेरे मां-बाप को जेल में डाल रखा है उनकी टाई मैं नहीं पहिन सकता।" इस बात पर उसे स्कूल से निकाल दिया गया। एक साल बर्बाद होने के बाद वह फिर स्कूल में दाखिल हुआ। उसने स्कूल में नहीं बताया कि वह मसीह बन्दी का बेटा है।

बाद में, मेरे बेटे को बाइबल के विरूद्ध एक लेख तैयार करना था। उसने लिखा : "बाइबल के विरूद्ध दिये गये प्रमाण झूठे हैं। और बाइबल विरोधी अवतरण भी गलत हैं। शिक्षक ने बाइबल के अध्ययन नहीं किया है। बाइबल के दावे वैज्ञानिक रूप से भी सच्चे उतरते हैं।" **मिहाई को फिर निकाल दिया गया।** उसके इस बार दो वर्ष बेकार हो गये।

अन्त में उसे सेमेंनरी में अध्ययन की आज्ञा मिल गई। यहां उसे "**मार्क्सवाद धर्म विज्ञान**" की शिक्षा मिलना आरम्भ हुई। मिहाई ने खुलकर मार्क्सवाद का विरोध किया। कुछ दूसरे साथियों ने भी उसका साथ दिया। परिणाम यह हुआ कि उसे इस सेमेंनरी से भी निकाल दिया गया।

स्कूल में, एक शिक्षक नास्तिकवाद पर भाषण दे रहा था मिहाई ने उठकर खंडन किया। उसने कहा कि आप इतने युवकों को बिगाड़ने की जिम्मेदारी ले रहे हैं। सारी कक्षा ने मिहाई का साथ दिया। किसी में शिक्षक के भाषण का खंडन करने का साहस होना आवश्यक था। सारे विद्यार्थी उसके साथ थे। शिक्षा प्राप्त करते समय उसे हमेशा सबसे छिपाना पड़ता

कि वह मसीही बन्दी का बेटा है। पता चल जाता था कि मिहाई मेरा बेटा है। उसे स्कूल के डायरेक्टर के पास ले जाया जाता और स्कूल से निकाल दिया जाता था।

मिहाई को भूखा रहना पड़ता था। कम्युनिस्ट देशों के इन मसीहियों को भूख से भी मरना पड़ता है।

मैं आपको एक मसीही घराने के विषय में बताता हूं जिसे मैं स्वयं जानता हूं। इस घर का मुखिया गुप्त चर्च में कार्य करने के अपराध में बन्द कर दिया गया। उसके बीवी और छः बच्चे बेसहारा हो गये। उसकी दो बड़ी बेटियों को, जो उन्नीस और सत्रह वर्ष की थीं, नौकरी नहीं मिल सकी। कम्युनिस्ट देशों में मसीही कार्यकर्ताओं के बच्चों को नौकरी देने का विधान नहीं है। कृपया इस कहानी को नैतिक स्तर से न परखिये! केवल घटना पर ग़ौर करिये। इस बन्दी मसीही भाई की बेटियों को अपने घराने को सहारा देने के लिए शरीर तक बेचना पड़ा। बेचारी क्या करतीं बूढ़ी-बीमार मां और छोटे भाई बहिनों को भूख से मरने देतीं? चौदह वर्ष का भाई पागल हो गया और पागल खाने में डाल दिया गया। वर्षों बाद पिता जेल से लौटा तो वह केवल यही प्रार्थना कर सका: "हे परमेश्वर मुझे वापिस जेल भेज दे। मैं ये सब नहीं देख सकता।" उसकी प्रार्थना पूरी हुई। आज वह जेल में है क्योंकि उसने अपने बच्चों को मसीह का सन्देश दिया। इस भाई की जवान बेटियां अब वेश्या नहीं हैं। उन्होंने खुफिया पुलिस में नौकरी कर ली है। हरेक घर में वे सम्मान पाती हैं क्योंकि वे मसीही बन्दी की लड़कियां हैं और वे मसीहियों की पुलिस में सारी खबर पहुंचा देती हैं। इस बात को एकदम अनैतिक कह देना न्याय संगत नहीं होगा—वैसे नैतिक स्तर से यह बात गिरी हुई है। परन्तु आप अपने आप से सवाल करके देखिए,

क्या आप इस दुखभरी घटना के जिम्मेदार नहीं ? इस प्रकार से सैकड़ों मसीही घराने कम्युनिस्ट देशों में अपने हाल पर छोड़ दिये गये हैं। आप के स्वतन्त्र मसीही के घरानों के लिये क्या ज़िम्मेदारी है ?

३

चौदह वर्ष की जेल में, मेरे सामने बाइबल या कोई पुस्तक नहीं आई। मैं लिखना भूल गया। भूख और यातनाओं ने लिखना-पढ़ना भुला दिया। मैं बाइबल के पद तक भूल सा गया। जब चौदह वर्ष पूरे हुए तब एकाएक यह पद मुझे याद आया : "याकूब ने राहेल के लिये चौदह वर्ष कार्य किया परन्तु यह समय उसे कम मालूम हुआ क्योंकि वह उससे प्रेम करता था।"

अमेरिकी जनता की भावना के प्रभाव से हमारे देश रूमानियां में सार्वजनिक रूप से क्षमा के वातावरण में चौदह वर्ष बाद मेरी रिहाई हुई।

अपनी पत्नी से मैं फिर मिला। उसने चौदह वर्ष तक मेरी प्रतीक्षा की। हमारे गिरफ्तार होने पर सब कुछ छिन गया था। हमने बड़ी गरीबी से नई जिन्दगी शुरू की।

रिहा किये गये पास्टरों और पादरियों को छोटी-छोटी कलीसिया मिलती थीं। औरसोवा शहर में एक छोटा सा चर्च मुझे भी मिला। कम्युनिस्ट अधिकारियों ने चेतावनी देते हुए कहा इस चर्च में पैंतीस सदस्य हैं, बढ़कर छत्तीस न हों। और सारी खबर मिलती रहे। युवा लोगों को चर्च से दूर रखना। इस प्रकार कम्युनिस्ट देशों के चर्च, शासन के हथियार हैं।

मैं जानता था मेरे प्रचार करने पर बहुत से लोग सुनने इकट्ठे होंगे। इसलिए सरकारी चर्च में सन्देश नहीं दिया। मैंने फिर से गुप्त चर्च में कार्य करना शुरू किया।

जिन दिनों में जेल में बन्द था परमेश्वर ने अपना कार्य किया। गुप्त चर्च को सहायता दी जाने लगी थी। अमेरीकन और दूसरे मसीहियों ने हमारी प्रार्थना सुनी और अन्य साधनों द्वारा मदद करनी आरम्भ कर दी थी।

एक दोपहर, छोटे से शहर में मसीही भाई के यहाँ मैं आराम कर रहा था। उस भाई ने मुझे जगाया और कहा : "विदेश से कुछ भाई मिलने आये हैं।" स्वतन्त्र देशों में ऐसे मसीही थे जो हमें नहीं भूले थे।

मसीहियों ने बड़े पैमाने पर शहीद मसीहियों के घरानों की सहायता का कार्य करना शुरू कर दिया था। हमें बड़ी होशयारी से मसीही साहित्य और अन्य मदद मिलती थी।

दूसरे कमरे में मैंने उन छः भाइयों से मुलाकात की जो इस कार्य को करने हमारे देश आये हुए थे। वे बड़ी देर तक मुझसे बातें करते रहे। बाद में उन्होंने पूछा इस पते पर हम उस पुरुष से मिलना चाहते हैं जिसने कम्युनिस्ट जेल में चौदह वर्ष काटे हैं। "वह आदमी मैं हूँ" मैंने बताया। "आप नहीं हो सकते क्योंकि आप तो इतने प्रसन्नचित्त हैं। उस मनुष्य को तो उदास प्रवृत्ति का होना चाहिये।" उन्होंने बड़े असमंजस से कहा। मैंने उन्हें यकीन दिलाया कि मैं ही वही आदमी हूं जिसने चौदह वर्ष जेल में कम्युनिस्ट यातनाओं का सामना किया है। इसके बाद ही गुप्त चर्च को बराबर सहायता आती रही। रहस्यमय ढंग से कई बाइबल, मसीही साहित्य और अन्य सहायतायें शहीद मसीहियों के घरानों को मिलीं। उनकी मदद के कारण हम गुप्त चर्च का कार्य और अच्छी तरह कर सके।

सहायकों ने परमेश्वर का वचन ही नहीं परन्तु प्रेम और सन्तोष भी देकर हमारे हौसले बढ़ाये।

जेलखाने के वर्षों में हमने सुना था : "अब तुमसे कोई प्रेम नहीं

करता, अब तुमसे कोई प्रेम नहीं करता, अब तुमसे कोई प्रेम नहीं करता।" हमने देखा अमेरिकी और अंग्रेज मसीही लोग अपनी जान पर खेलकर अपने प्रेम का परिचय देते थे। हमारी सलाहें लेकर उन्होंने गुप्त चर्च की सहायता की युक्ति निकाल ली थी। वे चुपचाप से पुलिस से घिरे हुए मकानों में बाइबल पहुंचा देते थे। गुप्त चर्च के मसीहियों के लिए ये बाइबल क्या कीमत रखती हैं इसको पहुंचाने वाले अमरीकी और अंग्रेज मसीही नहीं समझ सकते। मेरा घराना बिना विदेशी सहायता के जीवित नहीं रह सकता था। उनकी प्रार्थनाओं ने काम किया। गुप्त चर्च के दूसरे पादरियों और मसीही घरानों को इस प्रकार मदद दी जाती थी। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि ब्रिटेन की "यूरोपियन क्रिश्चन मिशन" ने हमारी वस्तुओं और प्रार्थना द्वारा मदद करके हमारे हौसले बढ़ाये। सहायक हमारे लिए परमेश्वर द्वारा भेजे गये फरिश्तों की तरह थे।

गुप्त चर्च का नये सिरे से कार्य आरम्भ होने के कारण मेरे पकड़े जाने की शंका लगी हुई थी। इस समय यहूदियों में कार्य शील नोर्वे मिशन और हिब्रू क्रिश्चन अलायंस ने मिलकर मेरा २५,०० पौंड रक्षा-शुल्क पटाया। मैं अब रूमानिया छोड़ सकता था।

मैंने कम्युनिस्ट रूमानियां क्यों छोड़ दिया

यदि गुप्त चर्च के अगुवों ने मुझे आज्ञा नहीं दी होती तो मैं रूमानियां नहीं छोड़ता। उन्होंने मुझे स्वतन्त्र देशों में गुप्त चर्च की "आवाज" बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने चाहा कि मैं उनकी यातनाओं और आवश्यकताओं का हाल सारी दुनियां में सुना दूं। मैं पश्चिमी देशों में आ गया परन्तु मेरा दिल वहीं रूमानियां में उन लोगों के बीच था। अगर गुप्त चर्च के कार्य और यातनाओं के वर्णन की मैं आवश्यकता नहीं समझता तो रूमानियां कभी नहीं छोड़ता। यही मेरा उद्देश्य है।

रूमानियां छोड़ने से पहिले, मुझे खुफिया पुलिस विभाग ने दो बार

बुलाया। उन्होंने कहा कि मेरे लिये उनकी सरकार को पैसा मिल चुका है। (रूमानियां में कम्युनिस्ट शासन होने के कारण पैसे की कमी है और इसलिए सरकार अपने नागरिकों को बेचकर यह कमी पूरी करती है। उन्होंने कहा, "पश्चिमी देश में जाकर मसीह का प्रचार जितना दिल चाहे करो, परन्तु हमारे बारे में बोलने की आवश्यकता नहीं है। अगर तुम बोले तो तुम्हें खतम कर दिया जायेगा। ५०० पौंड में आसानी से हमें कोई भी खूनी मिल सकता है जो तुम्हें मार सकता है या गायब कर सकता है।(मैं ऑरथोडॉक्स बिशप के साथ जेल में था जिनका ऑस्ट्रिया से अपहरण किया गया था। उनके नाखून उखाड़ दिये गये थे। कुछ और बन्दी भी थे जिन्हें बर्लिन से अपहरण किया गया था। हाल ही में इटली और पेरिस से भी रूमानियां वासियों को उड़ा दिया गया है।) उन्होंने धमकी दी कि हम तुम्हें अनैतिक भी सिद्ध कर सकते हैं। चोरी, लड़की या तुम्हारे जवानी के पापों की कहानी गढ़कर तुम्हें बदनाम कर सकते हैं।

अच्छी तरह धमकी देने और ब्रेनवॉशिंग के बाद उन्हें पूरा विश्वास था कि पाश्चात्य देशों में मैं खामोश रहूंगा। ऐसे बहुतसे लोग हैं जो कम्युनिस्ट द्वारा यातना सहने के बाद अब अन्य देशों में जाकर कम्युनिस्टों के गुण गा रहे है। इसलिए कम्युनिस्टों ने मेरे लिए भी यही सोचा।

दिसम्बर, १९६५ में परिवार के साथ, मैंने रूमानियां छोड़ दिया।

रूमानियां में अन्तिम दिन, मैं उस अधिकारी की कबर पर गया जिसने मुझे जेल और यातना की सज़ा सुनाई थी। मैंने उसकी कबर पर एक फूल रखा। मैंने, अपने को कम्युनिस्टों के लिए जो आत्मिक रूप से शून्य होते हैं समर्पण किया। मैं मसीह की प्रसन्नता उनमें देखना चाहता हूं।

मैं कम्युनिस्टवाद से नफरत करता हूं परन्तु मनुष्य से प्रेम करता

हूं। मैं पाप से नफरत करता हूं परन्तु पापी से प्यार करता हूं। मैं अपने पूरे दिल से कम्युनिस्टों से प्रेम करता हूं। कम्युनिस्ट मसीही को मार सकता है लेकिन उसके मसीही प्रेम को खतम नहीं कर सकता। कम्युनिस्टों और उनके द्वारा यातनाओं के प्रति मुझे ज़रा भी शिकायत नहीं है।

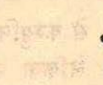

४

यहूदियों में एक दन्तकथा प्रचलित है। जब यहूदी लाल समुन्दर पार कर गये और मिस्री उसमें डूब मरे तब फरिश्तों ने मिलकर इन इस्राएली लोगों के साथ विजय गान किया। परन्तु परमेश्वर ने फरिश्तों से कहा, "यहूदी आखिर मनुष्य हैं और अपने बच निकलने पर खुशी मना सकते हैं। परन्तु तुमसे मैं और अधिक महानता की आशा करता हूं। क्या मिस्री मेरे द्वारा नहीं सृजे गये? क्या मैं उनसे प्रेम नहीं करता हूं? तुम उनके दुर्भाग्य पर मेरी तरह शोक प्रकट करने में क्यों असफल हुए?"

परन्तु मसीही केवल मनुष्य मात्र ही नहीं उससे बड़े हैं। वे परमेश्वर के बच्चे हैं, पवित्र स्वभाव में हिस्सा बटाने वाले हैं।

इसलिए कम्युनिस्ट जेलों में यातनाओं का सामना करने के बाद भी कम्युनिस्ट लोगों से मसीही नफरत नहीं करते हैं। वे परमेश्वर के बनाए हुए हैं। उनसे मैं कैसे घृणा कर सकता हूं?

मैं उनका मित्र भी नहीं बन सकता। मित्रता का अर्थ है एक जान दो शरीर। मैं कम्युनिस्टों से एक आत्मा नहीं हूं। वे परमेश्वर के नाम से भी नफरत करते हैं। मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूं।

अगर मुझसे पूछा जाय: "आप कम्युनिस्टों की तरफ हो या विरोध में? मेरा उत्तर जटिल है। कम्युनिस्टवाद, मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। मैं इसके विरोध में हूं। और इससे संघर्ष करूंगा जब तक यह उखाड़ फेंका नहीं जाये। परन्तु, आत्मा में, मैं यीशु के साथ स्वर्गीय

स्थान में बैठा हूं। कम्युनिस्टों के सारे अपराधों के अतिरिक्त भी परमेश्वर उनसे नफरत नहीं करता। उनको सहानुभूति से समझा जाता है। अच्छे मसीही मनुष्य सबके लिए हमेशा यह प्रयत्न करते रहते हैं कि मनुष्य अपने जीवन के अर्थ को समझे और मसीह जैसा बने। इसलिये कम्युनिस्टों के मध्य, सुसमाचार प्रचार मेरा लक्ष्य है।

मसीह जो मेरा प्रभु है, कम्युनिस्टों से प्रेम करता है। उसने कहा है कि वह अच्छी निन्नावे भेड़ों को छोड़कर एक भटकी हुई भेड़ को ढूंढ़ने जायेगा। प्रभु के सारे प्रेरितों और शिक्षकों ने विश्वव्यापी प्रेम का पाठ उसके नाम से पढ़ाया है। एक संत ने कहा है, "यदि मनुष्य सारे मनुष्यों से प्रेम करे और केवल एक से न करे तो वह मसीही नहीं रह जाता क्योंकि उसका प्रेम सिद्ध नहीं है।" संत अगस्तीन सिखाता है, "अगर दुनियां के सारे लोग धार्मिक हो जायें और केवल एक आदमी पापी रह जाये तो मसीह उसके लिए फिर क्रूस पर जान दे सकता है। वह प्रत्येक व्यक्ति से ऐसा प्रेम रखता है।" मसीही सन्देश सरल है। कम्युनिस्ट मनुष्य हैं और मसीह उनसे प्रेम करता है। उसी प्रकार जिस मनुष्य का मन मसीह का सा है, वह भी सबसे प्रेम करता है।

कम्युनिस्टों के लिए मसीह का जो प्रेम है वह हम करीब जानते हैं।

कम्युनिस्ट जेलों में, मसीहियों के पैरों में २५ किलो० भारी जंजीर मैंने देखी हैं। कम्युनिस्ट गर्म लाल लोहे से दागते, मुंह में नमक घुसेड़कर प्यासा रखते, कोड़े मारते, सर्दी में मारते फिर भी मसीही दिल से उनके लिए प्रार्थना करते हैं। इन्सानी समझ इसका बोध नहीं कर सकती। यह मसीह का प्रेम है जो हमारे दिल में बसा है।

कभी-कभी कम्युनिस्ट जल्लादों को भी किसी जुर्म में सजा मिलती और वे हमारे साथ कोठरी में पटके जाते थे। कम्युनिस्ट नेताओं को भी प्रायः जेल में किसी न किसी जुर्म में डाला जाता है। अब जल्लाद और

मसीही बन्दी दोनों ही एक साथ बन्द हैं। जब ग़ैर मसीही जेलरों को कोसते तो मसीही उनको ऐसा करने से रोकते थे। मसीही बन्दी अपनी रोटी (जो उस समय हफ्ते में एक बार मिलती थी) और अपनी दवा तक बन्दी जल्लादों को दे देते थे।

रूमानियां के मसीही प्रधान मंत्री ईयूलियूमनियू, जिनकी मृत्यु जेल में हुई, उनके अन्तिम शब्द थे : "यदि कम्युनिस्ट शासन उखाड़ फेंका गया तो रूमानियां के प्रत्येक मसीही का यह पहिला कर्त्तव्य है कि अपनी जान पर खेल कर कम्युनिस्टों को जनता के स्वाभाविक कोप से बचाये।"

मन परिवर्तन के बाद, आरम्भ के दिनों में मेरा जीना दुर्लभ हो गया। सड़क पर चलते हुए लोगों के लिए मुझे दुःख होता। मुझे महसूस होता जैसे मेरे दिल में बड़ी बेचैनी है। मेरे सामने हमेशा यही सवाल रहता था। क्या इनका उद्धार हो सकेगा ? अगर कलीसिया का एक व्यक्ति पाप कर देता तो मैं घंटों रोता रहता था। आत्मा बचाने का सवाल मेरे सामने रहता है जिसमें कम्युनिस्ट आत्माएं भी हैं।

पहिले की तरह अकेली कोठरी में हम प्रार्थना नहीं कर सकते थे। हमें इतना भूखा रखा जाता जिसका अनुमान नहीं किया जा सकता था। हमें इस प्रकार की दवाएं दी जातीं जिससे हमारे दिमाग़ काम न कर सकें। हम अस्ती पंजर हो गये। प्रभु की प्रार्थना भी हमारे लिए लम्बी थी। हम में इतनी शक्ति नहीं थी कि प्रभु की प्रार्थना भी कह सकें। मैं बार-बार केवल यही कह पाता "यीशु मैं तुमसे प्रेम करता हूं।"

एक महिमामय दिन यीशु ने मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया : "तुम मुझसे प्रेम करते हो ? अब मैं तुम्हें दिखाउंगा मैं कितना प्रेम करता हूं।" मेरे दिल में एक लौ जल उठी। इम्माउस से लौटते समय यीशु के चेलों ने कहा था कि उनके दिल में आग पैदा हो गई थी जब यीशु ने उनसे बात की थी। ऐसा ही मेरे साथ हुआ। जिसने हम सब के लिए

क्रूस पर जान दी उसके प्रेम को मैं जानता था। ऐसा प्रेम कम्युनिस्टों को भी नहीं छोड़ सकता। चाहे उनके पाप कितने भी संगीन क्यों न हों।

कम्युनिस्ट आतंक फैला रहे थे, अब भी फैला रहे हैं परन्तु "पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुझ सकता, और न महानदों से डूब सकता है।" ईर्षा कबर की तरह दुष्ट है। जिस प्रकार मौत—ग़रीब और अमीर, जवान और बूढ़े, सभी जातियां और देशों को गले लगाकर बराबर कर देती है, उसी प्रकार प्रेम भी सबको गले लगाता है। मसीह, का महान् प्रेम, कम्युनिस्टों को बिना जीते नहीं रह सकता।

एक पादरी को मेरे साथ कोठरी में बन्द किया। वह अधमरा था। उसे बुरी तरह मारा गया था, सारे बदन से और मुंह से खून बह रहा था। हमने उसको नहलाया। कुछ बन्दी कम्युनिस्टों को भला बुरा कहने लगे लेकिन उसने मना किया। वह कहने लगा; "मैं कम्युनिस्टों के लिए प्रार्थना करूंगा।"

जेल में भी हम प्रसन्न किस तरह रह सके

जब मैं चौदह वर्ष के बन्दी जीवन पर सोचता हूं तो कुछ सुन्दर अनुभवों का स्मरण आता है। अन्य बन्दी और जल्लाद, मसीही बन्दियों को कठिन परिस्थिति में भी प्रसन्न चित्त पाकर आश्चर्य करते थे। हमें पीटने पर भी वे लोग हमारा गीत गाना बन्द नहीं करवा सके। बुलबुल तो गायेगी यदि उसे यह मालूम भी हो कि गीत गाने से उसको मार डाला जायेगा। मसीही खुशी में नाचते थे। इस दुखमय परिस्थिति में वे कैसे प्रसन्न रहते होंगे ?

जेल में प्रायः मैं यीशु के शब्दों का ध्यान किया करता था। यीशु ने चेलों से कहा : धन्य हैं तुम्हारी आंखें जो यह सब देखती हैं।" यीशु ने ये शब्द उस समय कहे थे जब चेले पलस्तीन से आतंक देखकर लौटे थे। उस समय पलस्तीन में आतंक का साम्राज्य फैला हुआ था। चेलों ने

भूख, बीमारी और दुःख देखा था। उन्होंने लोगों को जेल जाते देखा था। साधारण शब्दों में दुनियां का रूप सुन्दर नहीं था।

यह सब जानते हुए भी यीशु ने कहा "धन्य हैं तुम्हारी आंखें जो यह सब देखती हैं।" केवल दुःख ही नहीं परन्तु चेलों ने अपने उद्धारकर्ता को भी देखा था जो सारी दुनियां का भी बचाने वाला है। जिस प्रकार आरम्भ के जीवन में इल्ली एक कुरूप वस्तु होती है और रेंग-रेंगकर दिन बिताती है परन्तु वही इल्ली रंग-बिरंगी तितली बनकर फूल-फूल पर मंडलाती है। हम भी अपने बारे में इस प्रकार सोचते थे। इसलिए खुश थे।

जेल में कुछ बन्दी मेरे साथ थे जिन्होंने अय्यूब से अधिक दुःख भोगा था। परन्तु अय्यूब का सुखद अन्त मैं जानता था; उसे पहिले से दुगना मिला। कुछ बन्दी, बेचारे लाजर की तरह दुःख बीमारी से परेशान थे। परतु मैं जानता था फरिश्ते उन्हें इब्राहिम के पास ले जायेंगे। मैंने उनके भविष्य की कल्पना की। वर्तमान गन्दे, कमजोर अवस्था के शहीदों की मैंने उनके महान भविष्य में संत बनने की कल्पना की।

ऐसे मनुष्यों के वर्तमान की नहीं परन्तु भविष्य के रूप की कल्पना करनी चाहिये। शाऊल जैसे जल्लादों में मैं संत पौलुस को पा सका। खुफिया पुलिस के कुछ अफसरों ने मसीह को ग्रहण किया। इन्हें बाद में जेल भुगतना पड़ा परन्तु वे खुश थे। फिल्लिपि का जेलर जिसने पौलुस पर कोड़े बरसाये थे, बाद में ईमान लाया। इसी प्रकार हमारे जेलरों में भी हमने यही सम्भावना देखी। हम यह सोचते थे जल्दी ही ये जेलर हमसे पूछेंगे : "उद्धार के लिये हम क्या करें ?" जो दुखी और यातना-मयी मसीही को देखकर मज़ाक उड़ाते थे उस समय हमें गुलगुता के सीना पीटते और पापों की क्षमा मांगते हुए लोग याद आते थे।

हम जेल में ही पूरी तरह मालूम कर सके कि कम्युनिस्टों के लिए उद्धार की आशा है। यही हमने कम्युनिस्टों के प्रति उत्तरादायित्व का

पाठ सीखा। उनके द्वारा यातना पाकर हम उन्हें सच्चाई से प्रेम करना सीख सके। मेरे घराने के अधिकांश लोगों को मौत के घाट उतारा जा है। वह मेरा ही घर था जहां खूनी का मन परिवर्तन हुआ। यह सबसे सही स्थान भी था। इस प्रकार, कम्युनिस्ट लोगों के बीच मसीही प्रचार की भावना ने जन्म लिया।

परमेश्वर की परख हमारी परख से फर्क होती है जिस प्रकार चोटी की परख और हमारी परख में अन्तर है। मनुष्य की दृष्टि से सलीब पर लटकाया जाना एक भयानक बात है। परन्तु बाइबल इसको "हलकी वेदना" कहती है। चौदह वर्ष का जेल हमारे लिए लम्बा अरसा हो सकता है लेकिन बाइबल इसे "परमेश्वर की महिमा का पल भर का कार्य" कहती है। इससे हम यह कल्पना कर सकते हैं कि कम्युनिस्टों की भयंकर यातनाएं हमारी नजर में भले ही क्षमा योग्य नहीं हों परन्तु परमेश्वर के सामने वे हलकी हैं। कम्युनिस्ट सरकार अत्याचार के भले ही ५० वर्ष पूरी कर चुकी हो परन्तु परमेश्वर के लिए एक हजार वर्ष एक दिन के समान है। कम्युनिस्टों के उद्धार की सम्भावना अब भी है।

स्वर्ग के द्वार कम्युनिस्टों के लिए बन्द नहीं हैं। न ही उनसे अवसर छीना गया है। वे पश्चात्ताप कर सकते हैं। हमें उन्हें पश्चात्ताप के लिए समझाना चाहिये।

केवल प्रेम ही है जो कम्युनिस्टों में परिवर्तन ला सकता है। नफरत अन्धा कर देती है। हिटलर कम्युनिस्ट विरोधी था। परन्तु नफरत करने वाला भी था। इस कारण उन पर विजय नहीं पा सका और उसके कारनामों के कारण कम्युनिस्ट एक तिहाई दुनियां जीत गये।

जेल में, अपने प्रेम के आधार पर हमने कम्युनिस्टों के बीच कार्य करने की योजना बनाई।

सबसे पहिले हमने कम्युनिस्ट शासकों के बारे में सोचा।

कुछ सन्देश वाहकों ने चर्च इतिहास पढ़ा था। नार्वे को मसीह के लिए किस प्रकार जीता गया ? नार्वे के राजा ओलेफ को जीतकर। विलाडिमिर के जीते जाने पर रूस में सुसमाचार आया। हंगरी को उसके राजा संत स्तीफान को जीतकर जीता गया। यही पोलेंड में भी हुआ। अफ्रीका में जब कबीले का सरदार जीता गया तब कबीले के सारे लोगों ने भी मसीह को ग्रहण किया। हम ऐसी संस्थाएं बनाते हैं जो मनुष्यों को मसीह के लिए जीत सकें। वे बहुत अच्छे मसीही बन जाते हैं परन्तु उनका प्रभाव इतना नहीं होता कि पूरा देश का देश बदल जाये।

हमें शासकों को अवश्य जीतना चाहिये। हमें राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और कला की विभूतियों को मसीह के लिए जीतना चाहिये। ये लोग कई मनुष्यों का नेतृत्व करते हैं। इनसे कई मनुष्य प्रभावित रहते हैं। इन विभूतियों पर विजय प्राप्त कर आप उनसे प्रभावित लोगों पर भी जीत प्राप्त कर सकते हैं।

एक सन्देशवाहक के दृष्टिकोण से कम्युनिस्ट लोगों में कार्य करना एक प्रकार से अन्य लोगों में काम करने से आसान है क्योंकि कम्युनिस्ट प्रणाली केन्द्रिय स्वभाव रखती है।

अगर अमेरिका का राष्ट्रपति बुद्ध धर्म स्वीकार कर ले तो अमेरिका बुद्ध-धर्म नहीं अपना लेगा। परन्तु माओ-तुस-तुंग या ब्रिश्नेव या किये-अएसक्यू मसीही धर्म अपना लें तो उनके सारे देश में मसीहियत पहुंच सकती है। कम्युनिस्ट देशों में नेताओं का इतना प्रभाव है।

क्या कम्युनिस्ट नेता का मन-परिवर्तन हो सकता है ? अवश्य, क्योंकि वह अप्रसन्न और असुरक्षित रहता है। लगभग सारे ही कम्युनिस्ट शासकों का अन्त उनके ही कामरेडों द्वारा या जेल में हुआ। ऐसा ही चीन में हुआ। बड़े-बड़े मंत्रिगण, इयागुडा, इयजोव, बेरिया जिनके पास ताकत थी अन्त में क्रान्ति विरोधी होकर मरे। हाल ही में शपेलिन

सोवियत संघ को मन्त्री और रेंकोविक, यूगोस्लेविया के मन्त्री को कचरे की तरह उखाड़ फेंका गया।

आत्मिक रूप से कम्युनिस्टों पर किस प्रकार आक्रमण किया जाय

कम्युनिस्ट शासन किसी को प्रसन्न नहीं कर पाता, उनको भी नहीं जिन्हें इससे फायदा पहुंचता है। सबको यही खटका रहता है न जाने कब पार्टी की नीति बदले और वे बन्द कर दिये जायें।

मैं बहुत से कम्युनिस्ट नेताओं को जानता हूं। वे बोझ से लदे हुए हैं। केवल यीशु उन्हें विश्राम दे सकता है।

कम्युनिस्ट नेताओं को मसीह के लिए जीतने का अर्थ दुनिया को परमाणु युद्ध से बचाने से हो सकता है; लोगों को भूख से बचाने से हो सकता है। परमाणु शस्त्रों में जो धन लगाया जाता है वह परमाणु युद्ध का खतरा खतम होने पर रचनात्मक कार्यों में उपयोग किया जा सकेगा। अंतराष्ट्रीय तनाव समाप्त होगा। कम्युनिस्ट शासकों के जीते जाने पर मसीह और फरिश्तों में आनन्द होगा। यह मसीह की विजय होगी।

जिन हिस्सों में सन्देशवाहकों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, जैसे न्यू गोएना और मडागास्कर आदि, उनको आसानी हो जायेगी क्योंकि कम्युनिस्ट शासकों के मन परिवर्तन से मसीह-धर्म प्रचार को नई गति मिलेगी।

मैं मन-परिवर्तित कम्युनिस्टों को जानता हूं। मैं भी एक पक्का नास्तिक था। नास्तिक और कम्युनिस्ट मन परिवर्तन के बाद मसीह से अधिक प्रेम करते हैं क्योंकि वे मसीह के विरुद्ध अधिक पाप किये हुए होते हैं।

प्रचार कार्य के लिए युद्ध की सी नीति निर्धारित होना चाहिये। उद्धार के दृष्टिकोण से सब आत्माएं बराबर हैं। परन्तु प्रचार कार्य की नीति कि नज़र में सारे स्थान बराबर नहीं हो सकते। एक प्रभाव-

शाली मनुष्य को प्रभु के लिए जीतना अधिक आवश्यक है, जो बाद में हजारों को अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के प्रभाव से जीत सकता है। जंगल में, एक मनुष्य की आत्मा के जीतने से आप केवल उसीका उद्धार करते हैं। इसलिए यीशु ने अपना कार्य केवल किसी छोटे गांव में समाप्त नहीं करते हुए उस समय की विश्व की एक धार्मिक राजधानी यरूशलेम में किया। इसी कारण पौलुस बड़े यत्न से रोम पहुचा था।

बाइबल कहती है : "स्त्री के वंश में से कोई सर्प का सिर कुचल डालेगा।" हम सर्प के पेट में गुदगुदी कर केवल हंसाते है। उसके सिर को कुचलने की उचित योजना नहीं बनाते।

युद्ध हमेशा आक्रमण से जीते जाते हैं सुरक्षा से नहीं। कम्युनिस्टों के लिए चर्च की नीति आजतक सुरक्षा नीति ही रही है। इसी कारण कम्युनिस्टवाद एक के बाद एक देश में सिक्का जमा रहा है।

चर्च की प्रचार नीति में तत्काल परिवर्तन होना चाहिये। बाइबल में एक भजन में आया है कि परमेश्वर लोहे के टुकड़े कर सकता है, तो कम्युनिस्ट देशों का लोहे का परदा उसके सामने क्या है।

प्राचीन चर्च ने भी गैरकानूनी और रहस्यमय ढंग से कार्य किया था। चर्च की विजय हुई थी। हमें भी इसी प्रकार योजना बना कर कार्य करना चाहिये।

रूमानिया में कम्युनिस्ट राज्य न आने तक, मैं नहीं समझ सका था कि "नये नियम" में कई लोगों के उपनाम क्यों हैं ? शिमौन जो नीगर कहलाता था। यूहन्ना जो मरकुस कहलाता था। हम भी कम्युनिस्ट देशों में नाम बदल कर रहते हैं।

मुझे समझ नहीं आता था कि अन्तिम भोज पर यीशु ने उपदेश न देते हुए केवल कहा, "नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना।" इसी प्रकार गुप्त चर्च में हम भी खुफिया चिन्ह रखते हैं।

यदि हम इस प्रकार कार्य करने में सहमत हो जायें। जैसा कि आरम्भ की मसीही कलीसिया किया करती थी तो कम्युनिस्ट देशों में कार्य हो सकता है।

सच्चा विश्वास, वह विश्वास है जिस पर मनुष्य प्रसन्नता से अपनी जान दे दे। गुप्त चर्च के मसीहियों ने अपने जीवन के माध्यम से सिद्ध कर दिया कि वे अपने विश्वास के लिए जान की बाजी लगा सकते हैं। मैं अब भी उस काम में लगा हुआ हूं जिससे मुझे किसी भी कम्युनिस्ट देश में फिर जेल हो सकती है। फिर से वहीं यातनाएं या मार डाला भी जा सकता हूं क्योंकि मैंने कम्युनिस्ट देशों में खतरा मोल लेकर गैर कानूनी कार्य किया है।

संयोग से मैं उस मनुष्य के साथ जेल में था जिसने रूमानियां में कम्युनिस्ट शासन की नींव रखवायी। लेकिन उसके कामरेडों ने उसे जेल में डाल कर उसके कार्य का बदला दिया। यद्यपि वह स्वस्थ चित्त था फिर भी उसे पागल घोषित कर पागलखाने में पटक दिया गया। और अन्त में वह पागल हो गया। अन्ना पौकर, भूतपूर्व, राज्य सचिव के साथ भी यही सुलूक किया। मसीहियों के साथ भी ऐसा ही किया जाता है। उन्हें बिजली के झटके दिये जाते हैं। उन्हें तंग जगह में बन्द कर दिया जाता है।

जो आंतक चीन की सड़कों पर हो रहा है उसे दुनिया जानती है। सब जानते हैं लाल सेना अत्याचार कर रही है। अब कल्पना कीजिए की चीन में मसीही लोगों को जेल में क्या-क्या यातनाएं दी जाती होंगी ?

चीन से अन्तिम समाचार द्वारा पता चला है कि चीनी प्रचारकों, लेखकों और कुछ दृढ़ मसीहियों की जीभ, कान, हाथ और पैर कटवा दिये गये हैं।

लेकिन हत्या और यातनाओं से भी बुरी बात यह है कि कम्युनिस्ट लोग बच्चों और जवानों की दृष्टि तोड़ देते हैं। कम्युनिस्ट ग़लत व्यक्तियों को चर्च का नेतृत्व देकर कलीसिया का नाश करने पर तुले रहते हैं। वे जवानों को सिखाते हैं कि परमेश्वर और मसीह पर विश्वास मूर्खता है।

उन जेल भुगते हुए मसीहियों के दुख की कल्पना कीजिए जो जेल से लौटने पर अपने बच्चों को पक्का नास्तिक पाते हैं।

यह पुस्तक स्याही से नहीं लेकिन दिल के बहते हुए खून से लिखी गई है।

जिस प्रकार दानिय्येल के समय में आग की भट्टी में डाले गये तीन युवकों का बाल-बांका नहीं हुआ, उनके शरीर से जलने की बू नहीं आई उसी प्रकार जो मसीही जेल भुगत कर आते हैं उनसे कम्युनिस्टों के प्रति नफरत की बू नहीं आती।

फूल के कुचल जाने पर फूल अपनी सुगन्ध बिखेर देता है उसी प्रकार यातनाओं के बाद भी मसीही लोग कम्युनिस्टों को यातना का जवाब प्रेम से देते हैं। कई जेलरों को हम मसीह के लिए जीते। हमें एक ही इच्छा घेरी रहती थी कि कम्युनिस्टों को मसीह के लिए जीता जाये।

इतिहास की शिक्षाओं की उपेक्षा

आरम्भ की ईस्वियों में उत्तरीय अफ्रिका में मसीहियत का ज़ोर था। यहां संत अगस्तीन, संत कायप्रियन आदि हुए। उत्तर अफ्रिका के मसीही लोगों ने मुसलमानों के बीच कार्य नहीं किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उत्तर अफ्रीका में मसीहियत सदियों के लिए उखाड़ दी गई। आज भी मसीही लोगों का प्रभाव यहां नहीं है।

हमें इतिहास से शिक्षा लेना चाहिये।

ऐसी कोई राजनीतिक शक्ति नहीं जो कम्युनिस्टवाद को उखाड़ फेंके। कम्युनिस्टों के पास परमाणु शस्त्र हैं। उन पर आक्रमण करना विश्व युद्ध आरम्भ करना है। बहुत से शासक कम्युनिस्ट शासन को समाप्त नहीं करना चाहते हैं। इसकी वह कई बार घोषणा कर चुके हैं। वे चाहते हैं केन्सर, क्षय, नशा या डकैती खतम हो जाये। परन्तु कम्युनिस्टवाद की बीमारी को वे नष्ट नहीं करना चाहते जिसने सब बिमारियों से अधिक शिकार किया है।

ईलिया इहरनबर्ग, सोवियत लेखक कहता है अगर स्टालिन अपने जीवन में कुछ न कर केवल अपने द्वारा मारे गये लोगों की सूचि बनाता तो उसके जीवन में यह कार्य पूरा नहीं कर पाता। क्रुशचेव ने कम्युनिस्ट पार्टी के बीसवें समारोह में कहा : "स्टालिन ने हज़ारों निर्दोष कम्युनिस्टों को मरवा दिया·····सेंट्रल कमेटी के एक सो उन्नीस सदस्यों में से जो सत्रहवीं काँग्रेस के लिए चुने गने थे, उनमें से अट्ठानवे सदस्यों को कैद कर मरवा डाला।"

कल्पना कीजिए उसने मसीहियों के साथ क्या बर्ताव किया होगा ?

क्रुशचेव ने स्टालिन को अस्वीकार किया लेकिन वही किया जो स्टालिन करता था। १९५७ तक रूस के आधे चर्च जो अब तक कार्य शील थे बन्द कर दिये गये।

आज चीन में स्टालिन काल से भी अधिक भयंकर बर्बरता की लहर आई है। सारे चर्च समाप्त कर दिये गये हैं। रूस और रूमानियां में नई गिरफ्तारियां हो रही हैं।

अत्याचार और छल से करोड़ों जवानों के दिलों में मसीही धर्म के लिए नफ़रत पैदा करा दी गई है।

रूस में अधिकारियों द्वारा चर्च आते-जाते बच्चो की पीटना आम दृश्य है। मसीह धर्म को नष्ट करने के लिए बड़ी सावधानी से बच्चों को मसीह विरोधी शिक्षा दी जा रही है।

कम्युनिस्टवाद समाप्त करने का केवल एक ही रास्ता है। यह शक्ति सुसमाचार में है जिसका प्रतिनिधित्व कम्युनिस्ट देशों में गुप्त चर्च कर रहा है।

इस चर्च को सहायता देनेका प्रश्न है केवल मसीही भाइयों में एकता के ही लिये नहीं है। परन्तु यह आपके देश की जिन्दगी और मौत का प्रश्न है। यह आपके चर्च का प्रश्न है। गुप्त चर्च को प्रोत्साहन केवल स्वतन्त्र मसीहियों के हित में नहीं परन्तु स्वतंत्र सरकारों को भी इनकी **'सहायता की नीति'** अपनाना चाहिए।

गुप्त चर्च कुछ कम्युनिस्ट शासकों को मसीह के लिए जीत चुका है। जार्जियूडेज, रूमानियां का प्रधान मंत्री मसीह को स्वीकार करने के बाद मरा। कम्युनिस्ट देशों में कुछ कम्युनिस्ट लोग गुप्त रीति से मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानते हैं। यह कार्य फैल सकता है। यह कार्य होने से कम्युनिस्ट देशों की नीतियों में वास्तविक परिवर्तन आने की संभावना हो सकती है। ऐसे परिवर्तन नहीं जैसे टिटो और गोमुलका लाये हैं जहां तानाशाही और नास्तिकता का साम्राज्य फैला हुआ है, लेकिन वे परिवर्तन जो मसीहियत के लिये स्वतन्त्रता लायें।

इस कार्य को आरम्भ करने का सबसे अच्छा समय अभी ही है।

कम्युनिस्ट प्रायः अपने विश्वास में उसी प्रकार दृढ़ और सच्चे हैं जिस प्रकार मसीही अपने विश्वास में। लेकिन कम्युनिस्ट बड़ी विपत्ति का सामना कर रहे हैं।

कम्युनिस्टों ने सोचा कम्युनिस्टवाद अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारा पैदा करेगा। परन्तु नतीजा इसके विपरीत निकला। हम देख रहे हैं कि कम्युनिस्ट देश एक दूसरे से किस प्रकार लड़ रहे हैं।

वे सोच रहे थे, कम्युनिस्टवाद इस पृथ्वी को स्वर्ग में बदल लेगा और आकाश में स्वर्ग की कल्पना करने वालों को एक शिक्षा देगा।

परन्तु रूस में जो अपने आप को 'पृथ्वी का स्वर्ग' मानता है हाल ही में अमेरिका से गेहूँ मांगना पड़ा ।

उन्होंने अपने नेताओं पर विश्वास किया लेकिन सभी ने कम्युनिस्टों के समाचार पत्रों में पढ़ा कि स्टालिन हजारों का हत्यारा था, क्रुशेव मूर्ख था आदि । इसी प्रकार उनकी दूसरी राष्ट्रीय विभूतियों का मज़ाक उड़ाया जैसे रकोसी, गेरो, एन पौकर और रेकोविची आदि को भी भला बुरा कहा गया । अब कम्युनिस्ट यह विश्वास करने लगे हैं कि उनके बड़े से बडे नेता भी गिर सकते हैं। वे बिना पोप के कैथलिकों की तरह है ।

कम्युनिस्ट के दिलों में शून्य हैं । यह शून्यता केवल मसीह द्वारा भरी जा सकती है । मनुष्य का दिल स्वभाव से ही परमेश्वर को ढूंढ़ना है । प्रत्येक दिल में आत्मिक शून्यता होती है जिसे केवल मसीह भर सकता है । सुसमाचार की शक्ति प्रेम में है जो उनके हृदयों को छू सकती है । मैंने ऐसा होते देखा है । मैं जानता हूं ऐसा किया जा सकता है ।

मसीही लोगों का कम्युनिस्टों द्वारा मज़ाक उड़ाया गया और यातनाएं दी गई हैं परन्तु मसीहियों ने उन्हें क्षमा कर दिया है ।

यीशु ने कहा परमेश्वर का सूर्य अच्छे और बुरे दोनों पर उदय होता है । इसी प्रकार मसीही प्रेम भी है । और यीशु ने कहा कि जाओ और दुनियां के सारे प्राणियों में सुसमाचार सुनाओ ।

उसने सबके लिए खून बहाया इसलिये सब को सुसमाचार सुनना और विश्वास करना चाहिये ।

जो कम्युनिस्ट मसीह को स्वीकार करते हैं वे प्रेम और जोश से भरे हुए होते हैं, यह हमें उनके बीच कार्य करने में उत्साह देता है । आज तक मैंने कोई रूसी गुनगुना मसीह नहीं देखा । युवक कम्युनिस्ट मसीह के असाधारण शिष्य बन सकते हैं ।

कम्युनिस्टों से मसीह प्रेम करता है और उन्हें कम्युनिस्टवाद से मुक्त

करना चाहता है। वह प्रत्येक पापी से भी प्रेम करता है और उन्हें पाप से मुक्त करना चाहता है। कुछ चर्च अगुए इस मार्ग को न बना कर कम्युनिस्टवाद के प्रति हर्ष प्रकट करते हैं। वे पाप को पलने देते हैं। वे एक प्रकार से कम्युनिस्टवाद की सहायता कर उसे विजयी बनाते हैं। कम्युनिस्टों को उद्धार से वंचित कर देते हैं।

मेरे रिहा होने पर मैंने क्या पाया

मेरी रिहाई पर पत्नी ने पूछा कि भविष्य में मेरी क्या योजना है। मैंने उत्तर दिया, "में आत्मिक एकांतवास को अपने लिये सबसे अच्छा समझता हूं।" मेरी पत्नी का भी यही विचार था।

युवावस्था मैं एक गतिशील युवक था। परन्तु जेल ने और एकांकीपन के वर्षों ने मुझे चिन्तन करने वाला व्यक्ति बना दिया। सारे तूफान दिल में ही शान्त हो गए। मुझे कम्युनिस्टवाद की कोई चिन्ता नहीं थी। मुझे उसका आभास भी नहीं था। मैं तो स्वर्गीय दूल्हे की बाहों में था। मैंने यातनाओं देने वालों के लिए प्रार्थना की ताकि अपने पूरे दिल से उन्हें प्रेम कर सकूं।

मुझे मेरी रिहाई की बहुत ही कम आशा थी। लेकिन समय-समय पर मेरे मन में विचार आता कि रिहा होने पर मैं क्या करूंगा? मैं सोचता कि कहीं एकांत में स्वर्गीय दूल्हे का ध्यान और संगीत करूंगा। परन्तु घोर यातनायों के समय में मनुष्य का पुत्र यीशु अपनी उपस्थिति से जेल की दीवारों को हीरों की तरह चमकदार कर कोठरी को प्रकाशमान कर देता था। आत्मा प्रभु में आनन्दित थी। हम महलों के लिए भी यह आनन्द नहीं तज सकते थे।

किसी के विरुद्ध युद्ध? यह बात मेरे हृदय में नहीं था। मैं किसी प्रकार का युद्ध नहीं करना चाहता था। मैं प्रभु के लिये मन्दिर निर्माण की सोचता था। मैंने शान्ति और चिन्तन की आशा में जेल को छोड़ा था।

परन्तु जेल से रिहा होते ही मुझे कम्युनिस्टों के दृष्टिकोण का सामना करना पड़ा जो मुझे सारी यातनाओं से भी अधिक घृणित लगा। एक के बाद एक मैं बड़े पादरियों, प्रचारकों और यहां तक कि बिशपों से मिला उन्होंने स्वीकार किया कि वे मसीहियों के रहस्य पुलिस में बताते हैं।

मैंने उनसे पूछा क्या वे ये कार्य बन्द कर सकते हैं, इस खतरे में भी कि उन्हें बन्दी बना लिया जायेगा। सब का उत्तर "नहीं," में था। उन्होंने कहा कि वे अपने पकड़े जाने से नहीं परन्तु चर्च के बन्द होने से डरते हैं क्योंकि शासन ने घोषणा की है कि इधर हमने खबर देना बन्द की इधर उन्होंने चर्च बन्द किये। ये स्थिति मेरे बन्दी बनने के पहिले नहीं थी।

प्रत्येक नगर में शासन का प्रतिनिधि "श्रद्धा" पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए उपस्थित होता है। यह व्यक्ति खुफिया पुलिस का कर्मचारी होता है। किसी भी पास्टर को बुलाकर पूछाताछी करने का इसे अधिकार होता है। वह पूछता है, चर्च में कौन आया, कौन गया ? कौन प्रभु भोज लेता है ? कौन अधिक धार्मिक है ? कौन आत्माएं जीतना चाहता है ? इत्यादि। अगर आप ने बताने में संकोच किया तो आपको हटाकर दूसरा पास्टर रख दिया जाता है जो उनको बराबर खबर देता रहे। अगर किसी स्थान पर शासन उनके मन पसन्द व्यक्ति नहीं ढूंढ पाता तो चर्च में ताला लगा दिया जाता है।

अधिकांश पादरी खुफिया पुलिस को खबर पहुंचाते हैं। कुछ भारी मन से, कुछ अपना हृदय कठोर बना लेते हैं और कुछ आवश्यकता से अधिक झूठी-सच्ची खबर देते हैं।

कुछ बच्चों ने मेरे सामने स्वीकार किया कि वे पुलिस में मसीही शहीदों की खबरें दिया करते थे यद्यपि इन घरों में इन बच्चों को बड़े प्रेम से रख जाता था। बच्चों पर दबाव डालकर पूछ लिया जाता था

वरना उनका शिक्षा अध्ययन समाप्त करने की धमकी दी जाती थी।

मैं एक बेपटिस्ट समारोह में पहुंचा। यह समारोह लाल झंडे के नीचे हुआ। यहां कम्युनिस्टों ने निश्चित किया कि "निर्वाचित नेता" कौन हों।

मैं जानता था कि प्रत्येक सरकारी चर्च का मुख्य अगुवा कम्युनिस्टों द्वारा निर्वाचित किया हुआ है। मैंने जाना कि मैं पवित्र स्थानों में उन घृणित वस्तुओं को देख रहा हूँ जो नष्ट कर देती हैं।

हमेशा ही अच्छे और बुरे पास्टर और प्रचारक हुए हैं। परन्तु चर्च के इतिहास में नास्तिक संघ का चर्च के नेतृत्व में प्रभुत्व पहिली बार देखने में आया है। नास्तिक संघ जिसका 'धर्म को उखाड़ फेंको' नारा है। उन्होंने इसी अभिप्राय को पूरा करने के लिए चर्च का नेतृत्व अपने हाथ में लिया है। लेनिन लिखता है : "प्रत्येक धार्मिक विचार, प्रत्येक परमेश्वर का विचार, परमेश्वर का झूठे मुंह विचार ही, बहुत खतरनाक बात है, सबसे घृणित छूत की बीमारी है। लाखों पाप, गन्दे कार्य, हिंसा और छूत की बीमारियां, परमेश्वर के विचार मात्र से कम खतरनाक हैं।"

सोवियत क्षेत्र की सारी कम्युनिस्ट पार्टियां लेनिनवाद पर ही चलती हैं। उनके लिए धर्म कैंसर से भयंकर है। कम्युनिस्ट ही चर्च के अगुवे चुनते हैं। और ये अगुवे उनके पिट्ठू बने रहते है।

मैंने बच्चों और जवानों को नास्तिकवाद की बीमारी में ग्रस्त देखा है। सरकारी चर्च इस बात को रोकने की आवश्यकता महसूस नहीं करते। हमारी राजधानी बुकारेस्ट में किसी भी सरकारी चर्च में संण्डें स्कूल नहीं होता। मसीहियों के बच्चे नफरत सिखाने वाले स्कूलों में शिक्षा पाते हैं।

यह सब देखकर मैंने कम्युनिस्टवाद से इतनी नफरत की जितनी यातनाओं के दिनों में भी नहीं की थी।

मैं नफरत इसलिए नहीं करता था कि कम्युनिस्टों ने मुझे यातनाएं दीं परन्तु इसलिए कि उन्होंने परमेश्वर की महिमा के विरूद्ध कार्य किया, मसीह के विरूद्ध कार्य किया और करोड़ों अनुचरों के विरूद्ध कार्य किया।

देश भर के बहुत से किसान मेरे पास दूर दूर से आये और बताया कि किस प्रकार से सामूहिक खेती की जा रही है। वे अपने ही खेत और बागों में भूखे दासों की तरह हैं। उनके पास रोटी नहीं है। उनके बच्चों के लिए दूध नहीं है। फल नहीं हैं। यह उस देश का हाल है जो खनिज से इस तरह भरपूर है जैसे प्राचीन कनान देश।

बन्धुओं ने स्वीकार किया कि कम्युनिस्ट शासन में उन्हें चोरों और झूठों का सा जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। भूख के कारण खुद के खेतों में से चुराना पड़ता है क्योंकि सारे खेत सहकारी खेती की योजना में आ गये हैं। फिर उन्हें यह कार्य छिपाना पड़ता है।

मजदूरों ने बताया कि फ़ैक्टरी में शोषण किया जाता हैं। ऐसा अत्याचार स्वतंत्र आर्थिक व्यवस्था में सोचा भी नहीं जा सकता था। और मजदूरों को प्रदर्शन करने का अधिकार नहीं हैं।

बुद्धिवादी लोगों को अपने विवेक के विरुद्ध कहना पड़ता है कि परमेश्वर नहीं हैं। प्रत्येक वस्तु व विचार झूठा और गन्दा है।

इस के बाद मैं गुप्तचर्च के कार्यकर्त्ताओं से मिला। मेरे पुराने कामरेडों से। उनमें से कुछ पकड़े जाने से बच गये थे और कुछ रिहा होने के बाद फिर मसीही कार्य में लग गये थे। उन्होंने मुझे संघर्ष के लिये निमत्रंण दिया। मैंने उनकी गुप्त सभा में हिस्सा लिया। उन्होंने हाथ से लिखी हुई गीत पुस्तकों में से भजन गाये।

मुझे सन्त अन्तोनी महान का स्मरण हुआ। वे तीस वर्ष मरुस्थल मैं रहे। उन्होंने दुनियां छोड़ दी थी। अपनी जिन्दगी प्रार्थना और उपास में लगाई। परन्तु जब उन्हें मालूम हुआ कि संत अथानसियस और

अरियस में मसीह पवित्रता पर लड़ाई हो रही है तो उन्होने चिन्तन त्याग और अलेक्सजेंडरिया में आकर सत्य को विजय दिलाई। मुझे संत बरनार्ड क्लेरवॉक्स स्मरण आये। वे भी पहाड़ों की ऊंचाइयों में रहते थे। जब उन्होंने धर्म युद्ध की मूर्खता को सुना तो वे अपने मठ से उतर कर लोगों मे धर्म युद्ध के विरुद्ध प्रचार करने आये।

मैंने वह करने का निश्चय किया जो सारे मसीहियों को करना पड़ता है कि अपने मसीह के पीछे चलूं। संत पौलुस और महान संतों के पीछे चलूं। आराम का विचार छोड़कर संघर्ष में जुट जाऊं।

यह किस प्रकार का संघर्ष होगा ?

मसीहियों ने हमेशा दुश्मनों के लिए प्रार्थना की है और सदा उनके सामने सुन्दर साक्षी रखते हैं। हमारी दिली इच्छा रहती है कि उनकी आत्माएं बचाई जायें। उनके मनपरिवर्तन पर हम लोग आनन्द मनाते थे।

परन्तु मैं कम्युनिस्टवाद से नफरत करता था और गुप्त चर्च को मजबूत बनाना चाहता था। **कम्युनिस्टवाद को समाप्त करने का उपाय केवल सुसमाचार है।**

मैं केवल रूमानियां के लिए नहीं परन्तु सारे संसार के कम्युनिस्ट देशों के लिए सोचता हूं।

परन्तु स्वतंत्र देशों को इसकी परवाह नहीं है।

जब रूसी लेखकों सिनयावस्की और डेनिएल को रूस में गिरफ्तार किया तो दुनियां भर के लेखकों ने विरोध प्रदर्शन किया। परन्तु कोई चर्च मसीहियों के जेल जाने पर प्रदर्शन नहीं करता।

मसीही साहित्य रूस में बांटने पर यदि कुज्यक बन्दी बनाया गया तो किस को फिकर है कौन जानता है प्रॉकॉफिएव को मसीही सन्देश बांटने पर पकड़ा गया था। कौन जानता है इब्रानी मसीह ग्रुन-वाल्ड को साहित्य वितरण के जुर्म में पकड़ा गया और छोटे बेटे को

जीवन भर के लिए छीन लिया ? मैं जानता हूं मुझ पर क्या गुजरी जब मिहाइ मेरे बेटे से मुझे अलग कर दिया गया। इस सदी से मुझे कई और संतों के साथ यातना भोगनी पड़ी। मैंने उनकी हथकड़ियों को झुककर चुम्बन लिया जिस प्रकार आरम्भ के मसीहियों ने खूंखार जानवरों के सामने जाने से पहिले किया था।

परन्तु बहुत से चर्च के अगुवे इसकी कोई परवाह नहीं करते। शहीदों के नाम उनकी प्राथनाओं की सूची में नहीं हैं। जब मसीहियों को यातनाएं दी जा रही थीं और सजा सुनाई जा रही थी उस समय रूसी बेपटिस्ट और ऑरथोडोक्स सरकारी अगुवों का जिनीवा विश्व सम्मेलन में सत्कार हो रहा था। वास्तव में इन सरकारी पिठुओं ने मसीही लोगों और मसीहियत को धोखा दिया था। इन्होंने सारी दुनियां को यकीन दिलाया कि सोवियत संघ में पूरी धार्मिक स्वतंत्रता है। परन्तु यह सच नहीं है

विश्वचर्च संघ के अगुवे ने बोलश्विक आर्चबिशप का चुम्बन लिया जब उसने धार्मिक स्वतंत्रता की बात कही। इसके बाद उन्होंने विश्व चर्च संघ के नाम पर भोज किया जब कि संत लोग जेल में सड़ी गोभी और गन्दी अतड़ियां खा रहे थे।

ऐसी स्थिति हमेशा नहीं रह सकती। गुप्त चर्च ने फैसला किया कि मुझे रूमानियां छोड़ देना चाहिये। और स्वतंत्र मसीहियों में कम्युनिस्ट आंतक का भंडा फोड़ करना चाहिये।

मैंन कम्युनिस्टों से प्रेम करता हूँ। में नहीं समझता कि बिना कम्युनिस्टवाद की भर्त्सना किये सुसमाचार प्रचार संभव है।

कुछ मुझसे कहते हैं "केवल सुसमाचार प्रचार करो!" यह सुनकर मुझे कम्युनिस्ट खुफिया पुलिस की धमकी याद आती है : "मसीह प्रचार करो परन्तु कम्युनिस्टवाद का नाम न लो।" क्या वास्तव में, जो लोग मुझ से "केवल सुसमाचार प्रचार" की बात करते हैं, क्या कम्युनिस्टों की तरह ही प्रेरणा पाते हैं ?

मैं नहीं जानता "केवल सुसमाचार" से क्या अभिप्राय है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सन्देश कैसा था ? उसने केवल **"पश्चाताप करो क्योंकि प्रभु का राज्य निकट है"** ही नहीं कहा। उसने कहा : तुम हेरोदेस नीच हो" उसका सिर काट डाला गया क्योंकि उसने पेचीदा उपदेश नही दिया लेकिन सीधे-साधे शब्दों में हेरोदेस जैसा था वैसा ही कहा। यीशु ये केवल पहाड़ी उपदेश ही नहीं दिया लेकिन वह कहा जिसे कई चर्च अगुवे निषेधात्मक कहेंगे "तुम पर हाय सदूकियों और फरीसियों·····हे सांप के बच्चो !" इस प्रकार के शब्दों के कारण उसे क्रूस पर चढ़ाया गया। फरीसियों ने यीशु के पहाड़ी उपदेश की परवाह नहीं की।

पाप का नाम साफ साफ लेने में संकोच नहीं होना चाहिये। दुनियां में कम्युनिस्टवाद सब से महान पाप है। सुसमाचार जो आज कम्युनिस्ट-वाद की भर्त्सना नहीं करता वह सुसमाचार नहीं है। गुप्त सदस्य अपनी आज़ादी और जीवन को दाँव पर लगाकर कम्युनिस्टवाद की भर्त्सना करते हैं फिर स्वतंत्र देशों में रहने वाले ऐसा करने से क्योंकर संकोच कर सकते हैं ?

मुझसे बार बार कहा जा रहा है : कम्युनिस्टों को भूल जाओ। केवल आत्मिक कार्यों में लग जाओ।"

मैं एक मसीही से मिला जिसने नाजियों के समय में दुख सहे हैं। उसने कहा कि पूरी तरह से वह मेरे साथ सहमत है अगर मैं कम्युनिस्ट-वाद के विरुद्ध कुछ न कहूं। मैंने उससे पूछा कि वे मसीही जो हिटलर से संघर्ष कर रहे थे केवल बाइबल के शब्दों से ही हिटलर का विरोध करते थे ? "परन्तु हिटलर ने साठ लाख यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया था, उसके विरुद्ध तो बोलना ही था", उसने कहा। "कम्यु-निस्टों ने तीन करोड़ रूसी मार डाले और लाखों चीनी व अन्य लोगों को समाप्त कर दिया। कुछ यहूदियों को भी मार डाला है। क्या जब यहूदी मारे जायें उसी समय विरोध करना चाहिये, रूसी लोगों के

मरने पर नहीं ?" मैंने कहा। इसका जवाब वह मसीही नहीं दे सका।

मुझे हिटलर और कम्युनिस्ट काल दोनों ही समय पीटा गया और मेरे लिए तो दोनों ही दुखदायी थे।

मसीही धर्म को पाप के कई रूपों से संघर्ष करना पड़ता है केवल कम्युनिस्टवाद से ही नहीं। हमारे सामने केवल कम्युनिस्टवाद ही समस्या नहीं है।

परन्तु कम्युनिस्टवाद मसीही धर्म का सबसे बड़ा और खतरनाक शत्रु है। कम्युनिस्टों के विरोध में हमें एक हो जाना चाहिये।

हमारा लक्ष्य मसीह जैसा बनने का होना चाहिये और इससे रोकना कम्युनिस्टों का हमारे लिए मुख्य कार्य है। वे धर्म विरोधी हैं। वे सोचते हैं मरने के बाद मनुष्य मिट्टी हो जाता है, बस। वे चाहते हैं कि जीवन का लक्ष्य केवल पदार्थ ही माना जाये।

उन्होंने एक मनुष्य को जेल दे दिया क्योंकि उसके पास ऑलफ्रेड अडलर की मनोविज्ञान की पुस्तक मिली।

यीशु हमें व्यक्ति विशेष के रूप में देखना चाहता है। इसलिए हमारे और कम्युनिस्टों के बीच समझौते का सवाल ही नहीं उठता। कम्युनिस्ट इस बात को अच्छी तरह जानते हैं। "विज्ञान और धर्म" पत्रिका में वे लिखते हैं, "धर्म और कम्युनिस्टवाद परस्पर विरोधी हैं···

कम्युनिस्टों की योजना धर्म को हमेशा के लिए समाप्त करने की है। कम्युनिस्ट चाहते हैं कि नास्तिक समाज की सृष्टि हो और लोग धर्म के बन्धनों से मुक्त हो जायें।"

क्या मसीही धर्म और कम्युनिस्टवाद एक साथ रह सकते हैं ? तो यहाँ कम्युनिस्टों का उत्तर सुनिये···"कम्युनिस्टवाद धर्म के लिये मौत की घंटी है।"

५

अब मैं फिर से गुप्त चर्च का वर्णन करूंगा

गुप्त चर्च बहुत कठिन परिस्थिति में काम करता है। नास्तिकवाद सब कम्युनिस्ट देशों का मत है। कम्युनिस्ट बूढ़ों को थोड़ी बहुत आजादी उनके विश्वास के लिए दे देते हैं परन्तु जवानों और बच्चों के **विश्वास पर प्रतिबन्ध** लगाया जाता है। इन देशों के सारे यातायात माध्यमों पर कम्युनिस्टवाद का प्रसार और परमेश्वर की भर्त्सना होती है। उसके बाद रेडियो टेलिविजन, सिनेमा, थियेटर, प्रेस और प्रकाशन कार्य धर्म विरोधी और कम्युनिस्टवाद का प्रसारण करते हैं।

गुप्त चर्च माध्यम की कमी के कारण सर्वाधिकारी देश की शक्ति का सामना नहीं कर सकता रूस में गुप्त चर्च के पास्टरों को धर्म ज्ञान पूरी रीति से नहीं होता। रूस में बहुत से पास्टर पूरी बाइबल नहीं पढ़ सकते हैं।

रूस में मसीही सेवकों का अभिषेक कैसे होता है? हम एक गुप्त चर्च के पादरी से मिले उसने बताया, "हमारे गुप्त चर्च में कोई विशेष नहीं हैं जो अभिषेक करे। सरकारी बिशप उन्हें ही अभिषेक करते हैं जो कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा मंजूर किये जाते हैं। इसलिए हम में से दस युवक मसीही एक बिशप की समाधि पर गये जो शहीद हुए थे। दो युवकों ने समाधि पर हाथ रखा और शेष ने घेरे में खड़े होकर पवित्र आत्मा से अभिषेक की आशिष ली। हमें विश्वास है कि यीशु के छिपे हुए हाथों ने हमारा अभिषेक किया।"

मेरे लिए इस युवक का अभिषेक परमेश्वर के सामने मान्य है।

इस प्रकार के अभिषेक किये हुए व्यक्ति, जिन्हें धार्मिक शिक्षा नहीं मिली, बाइबल अच्छी तरह नहीं जानते, मसीह के कार्य में लगे हैं।

यह पहिली ईस्वी के चर्च के समान हैं जिन मसीही लोगों ने मसीह के लिये दुनियां उलट पुलट कर दी, वे किस धर्म स्कूल में पढ़े थे? उनके पास तो बाइबल नहीं थी! परमेश्वर ने उनसे बातें कीं।

हमारे गुप्त चर्च की इमारतें और केथीडरल नहीं हैं। परन्तु क्या नीले आकाश से सुन्दर कोई केथीडरल हो सकता है जिसके नीचे जंगल में हम गुप्त कलीसिया के लोग इकट्ठे होते थे। चिड़ियों का चहकना हमारा बाजा था। फूलों की खुशबू हमारा लोबान था। जेल से आये हुए मसीही के फटे पुराने कपड़े पादरियों के लिबास से कहीं अच्छे प्रतीत होते थे। चान्द और तारे हमारी मोम बत्ती थे। फरिशते उनको जलाते थे।

मैं गुप्त कलीसिया की सुन्दरता बयान नहीं कर सकता।

प्रायः खुफिया पुलिस मसीहियों को पकड़ ले जाती, और जेल में बन्द कर देती है। जेल में मसीही हथकड़ी इतनी खुशी से पहिनते हैं जैसे प्रेमिका द्वारा दिया हुआ कीमती उपहार हो। बन्दीगृह में शान्ति होती है। आप को प्रभु गले लगाता, चुम्बन करता है। आप राजाओं से भी स्थान परिवर्तन करना नहीं चाहेंगे। वास्तव में आनन्दित मसीही मैंने बाइबल में पाये हैं या गुप्त कलीसिया में या जेल में।

गुप्त चर्च दबा हुआ है परन्तु इसके मित्र भी हैं। कुछ तो खुफिया पुलिस में हैं कुछ सरकारी कर्मचारी हैं। समय समय पर ये मित्र गुप्त कलीसिया की सहायता करते रहते हैं।

हाल में एक रूसी समाचार पत्र ने मसीहियों के "बढ़ते हुए सदस्यों" की खबर छापी थी। रूसी प्रेस ने बताया कि ये बढ़ते हुए मसीही, विश्वासी, स्त्री और पुरुष चारों तरफ फैले हुए हैं यहां तक कि कम्यु-

निस्ट सरकार के कार्यालय, प्रसारण और कई स्थानों पर बराबर अपना कार्य कर रहे हैं। बाहर से ये अपने आप को कम्युनिस्ट बताते हैं परन्तु वास्तव में ये लोग मसीह विश्वासी हैं और गुप्त कलीसिया के सदस्य हैं।

कम्युनिस्ट प्रेस ने एक युवती की कहानी छापी जो कम्युनिस्ट प्रचार विभाग में काम करती थी। नौकरी के बाद, प्रेस ने लिखा, वह घर लौटती अपने पति से मिलती। दोनों रात का भोजन करके कुछ जवान लोगों के गुप्त झुंड में जाकर बाइबल अध्ययन और दुआ प्रार्थना करते हैं **सारे कम्युनिस्ट देशों में ऐसा हो रहा है**। कम्युनिस्ट देशों में लाखों मसीह विश्वासी हैं जो अपने आपको "बाहर से अविश्वासी" दिखाते हैं। वह जानते हैं कि दिखावे के सरकारी चर्चों में जाना कोई अर्थ नहीं रखता। जहां उन पर निगाह रखी जाती है और मनुष्य द्वारा बना हुआ सुसमाचार सुनाया जाता है। इसके अतिरिक्त बाहरी रूप से कम्युनिस्ट बने रहने से रूसी अधिकारी बने रहते हैं। समय आने पर शान्ति से और सही रीति से वह मसीह की साक्षी देते रहते हैं।

गुप्त कलीसिया के हज़ारों सदस्य जिम्मेदार अधिकारी हैं। वे गुप्त रीति से तलघरों और मकानों में प्रार्थना सभा करते रहते हैं।

सोवियत संघ में मसीही लोग बच्चों और जवानों के बपतिस्मे के प्रश्न को लेकर वाद विवाद नहीं करते बैठते। वे पोप के सवाल पर बहस नहीं करते वे सतयुग के पहिले या बाद के लोग नहीं हैं। वे भविष्यवाणियों का अर्थ नहीं निकाल सकते इसलिए इस प्रश्न पर झगड़ते भी नहीं। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि वे नास्तिकों को परमेश्वर के अस्तित्व का कैसे विश्वास दिलाते हैं!

नास्तिकों के लिये उनके उत्तर सीधे सच्चे हैं: यदि आप सब प्रकार का भोजन करते समय यह विश्वास करें कि यह अपने आप बन गया है, इसे रसोइये ने नहीं बनाया परन्तु स्वाभाविक ही तैयार हो गया है! क्या टमाटर, सेब, दूध और शहद जो बहुतायत से हैं और

हमारे लिए पौष्टिक हैं यदि परमेश्वर ने नहीं बनाये तो क्या नेत्र-हीन प्रकृति बना सकती है।

वे लोग नास्तिकों को यह सिद्ध कर देते हैं कि जीवन अनन्त काल तक है। मैंने विवाद सुना जो एक नास्तिक और मसीही के बीच हुआ। "यदि हम गर्भ में रहने वाले बच्चे से बात कर सकते और कहते कि गर्भ में रहने का समय अल्पकालीन है, इसके बाद दुनियां में जीवन आरम्भ होता है। इस बात का गर्भ का बच्चा क्या उत्तर देता ? वह तो यह कहता "गर्भ का जीवन ही सब कुछ है और सब धार्मिक बातें मूर्खता हैं।" इसी प्रकार का उत्तर आप नास्तिक लोग हमें देते हैं जब हम आप से स्वर्ग और नरक के बारे में बात करते हैं। यदि गर्भ का बच्चा सोच सकता तो वह अपने बढ़ते हुए हाथों को बेकार भार ही समझता। बढ़ते हुए पैरों के लिए सोचता इनकी क्या आवश्यकता थी जब मुझे सदैव ही इन्हें अपने सीने की ओर मोड़ कर रखना पड़ता है। आंखें क्यों बन रही हैं जब कि चारों ओर अंधेरा है और मुझे इनकी आवश्यकता नहीं है ? शायद प्रकाश और रंगों वाली दुनियां इसके बाद आये ? इसलिये, गर्भ में बच्चा अगर अपने अन्दर बढ़ते हुए अपने अंगों का रहस्य जान जाये तो वह गर्भ के बाहर के जीवन को बिना देखे समझ सकता है। हमारी भी यही स्थिति है। जब हमारी आयु कच्ची होती है हमारे हाथ पैरों में अच्छी जान होती है परन्तु हमारे पास बुद्धि की कमी होती है। धीरे-धीरे बढ़ती हुई उम्र के साथ अनुभव हमारी बुद्धि बढ़ाते हैं तब हमारी आयु पूरी हो जाती है हम मर जाते हैं। ज्ञान की क्या आवश्यकता है जब हम उसे मिलने पर उपयोग नहीं कर पाते और मर जाते हैं ? यह स्थिति गर्भ में बढ़ते हुए बच्चे की तरह है। हमारा ज्ञान और अनुभव भी हमारी आने वाली जिन्दगी के लिए है। मृत्यु के बाद के उच्च जीवन के लिए हम इस दुनियां में अनुभव और ज्ञान द्वारा तैयार किये जाते है।

कम्युनिस्ट सिद्धान्त यीशु के लिए यह है कि वह हुआ ही नहीं। गुप्त कलीसिया के सदस्य इसका उत्तर सरलता से दे देते हैं : आपकी जेब में कौन सा समाचार पत्र है ? 'प्रवदा'। केवल उसकी तारीख बताइये। जनवरी १४, १९६४। कब से १९६४ का हिसाब लगाया जाता है ? क्या उस समय से जो पैदा ही नहीं हुआ और न इस दुनियां में कुछ कार्य ही किया? आप फिर भी उसके जन्म से ही तारीखों का हिसाब लगाते हैं। समय यीशु के पहिले भी था। परन्तु जब वह आया तब मनुष्य को ज्ञान हुआ कि पिछला सब निरर्थक था, अब समय आरम्भ हुआ है। आपका कम्युनिस्ट अखबार स्वयं इस बात का प्रमाण है। यीशु एक कल्पना नहीं ऐतिहासिक सत्य है।

कुछ पादरी समझते हैं कि जो लोग उनकी कलीसिया में हैं वे ही वास्तव में मसीही धर्म की बुनियादी सच्चाइयों पर विश्वास करते हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। शायद ही आपको ऐसा सन्देश सुनने को मिले जिसमें अपने विश्वास के ऐसे ठोस प्रमाण दिये गये हों। कम्युनिस्ट देशों में मसीही मन परिवर्तन करने वाले गैर मसीहियों को बड़े ठोस प्रमाण देते हैं।

वैसे गुप्त कलीसिया और सरकारी चर्च दोनों ही मसीही धर्म के प्रतिनिधित्व करते हैं परन्तु गुप्त कलीसिया मुख्य है। सरकारी चर्च के कई पादरी कम्युनिस्ट प्रतिबन्ध की चिन्ता न करते हुए गुप्त कलीसिया की सहायता करते हैं।

सरकारी चर्च, जिसने कम्युनिस्टों से सांठ-गांठ कर रखी है, उसका लम्बा इतिहास है।

यह रूसी क्रांति के समय ही आरम्भ हो गया था। सरजियस नाम का एक पादरी उस समय की कलीसिया का नेतृत्व करता था उस समय की कलीसिया ने मास्को में आम घोषणा की :"हमारा लक्ष्य कलीसिया को

दोबारा बनाना नहीं, परन्तु उसको समाप्त करना है। सारे धर्मों की समाप्ति करना है।" कितनी सुन्दर योजना !

प्रत्येक देश में अपने अपने सरजियस हैं।

हंगरी में, केथोलिक फादर बेलॉग ने सरजियस का काम किया। बेलॉग और प्रोटेस्टेंट पादरियों ने कम्युनिस्टों को देश का नियंत्रण सौंपने में पूरी पूरी सहायता की।

रूमानियां में, एक ऑरथोडोक्स पादरी ने कम्युनिस्टों को शक्ति में आने की पूरी मदद की। यह पादरी पहिले फासिस्ट था। इसने कम्युनिस्टों को प्रसन्न करने के लिए चर्च के विरोध में कम्युनिस्टों से अधिक प्रदर्शन किया। यह पादरी सोवियत सेक्रेटरी विश्इनस्की के साथ खड़ा हुआ और मुस्कुराते हुए उसके कथनों की सहमति दी। विश्इनस्की ने नई कम्युनिस्ट सरकार की घोषणा करते हुए कहा : "हमारी सरकार इस पृथ्वी पर स्वर्ग बनायेगी तब हमें आकाश में स्वर्ग की आवश्यकता नहीं होगी।"

रूस का आर्चबिशप निकोदिम, सभी जानते हैं कि वह सरकार को सन्देश पहुंचाता है। मेजर डेरियाविन जो रूस की खुफिया पुलिस से निकल आया उसने बताया कि निकोदिम खुफिया पुलिस का कार्यकर्त्ता था।

सारी कलीसियाओं में यही स्थिति थी। रूमानियां की बेपटिस्ट कलीसिया का नेतृत्व भी शक्ति के ज़ोर से सौंपा गया। सच्चे मसीहियों की ये सरकारी कलीसियाएं निन्दा करती हैं। रूस में बेपटिस्ट अगुवे भी यही करते हैं। रूमानिया के "आगमन में विश्वास करने वालों" के अध्यक्ष टाचीसी, ने मुझे बताया कि वह आरम्भ से ही कम्युनिस्ट खुफिया पुलिस का सन्देशवाहक था।

कम्युनिस्टों ने सारे चर्च न बन्द करते हुए यह चालाकी की, कुछ चर्च अपने नियत्रंण में चलने दिये जिससे वे मसीहियत का उलटा-सीधा रूप दिखा, मसीहियत और मसीहियों को सदा के लिए समाप्त कर दें।

उन्होंने यह तरकीब निकाली कि चर्च को कम्युनिस्टों का हथियार बना भ्रमण करने वाले विदेशियों की आंख में धूल झोंकते रहें। मुझे भी इस प्रकार के चर्च का पास्टर बनने के लिए कम्युनिस्ट सरकार ने कहा और चर्च सदस्यों के सारे समाचार खुफिया पुलिस में देने का आदेश भी दिया। जो साहित्य कम्युनिस्ट लोग निकालते हैं उससे विदेशी लोग सच्चाई पर नहीं पहुंच सकते। गुप्त चर्च कम्युनिस्टों द्वारा नियंत्रित चर्च को कभी भी मान्यता नहीं दे सकता। गुप्त चर्च के सदस्य जानते हैं कि सरकारी चर्च की असलियत क्या है! सरकारी कलीसिया नकली है। अर्थपूर्ण और सुसमाचार प्रचार करने वाली कलीसिया का स्थान यह कम्युनिस्टों द्वारा चलाये जाना वाला चर्च ले सकता है, इसका प्रश्न ही नहीं उठता।

फिर भी, इस सरकारी चर्च में अधिकतर नकली अगुवे होते हुए भी कुछ सच्चे आत्मिक सदस्य होते हैं। (मेरा विचार है कम्युनिस्ट देशों के अतिरिक्त भी कई देशों में नेतृत्व बुरे व्यक्तियों के हाथ में होते हुए भी कलीसिया के सदस्य सच्चे विश्वासी रहते हैं।)

कम्युनिस्ट आंतक के अतिरिक्त भी ओरथोडोक्स उपासना वही पुरानी रीति पर है, और सदस्यों के दिलों को शांति पहुंचाती है। चाहे यहां सन्देश कम्युनिस्टों को प्रसन्न करने के लिये क्यों न होते हों! लूथरन, प्रिसबायटेरियन और अन्य प्रोटेस्टेंट वही पुराने भजन गाते हैं। कम्युनिस्टों से मिले हुए पास्टरों के सन्देशों में भी कुछ न कुछ सुसमाचारहोता है। लोगों का मन परिवर्तन ऐसे व्यक्तियों से भी हुआ है जो धोकेबाजी में प्रसिद्ध थे। मन परिवर्तित लोग जानते भी थे कि पास्टर खुफिया पुलिस विभाग में खबर कर देगा। इन मसीहियों को अपना विश्वास इस नकली पास्टर से छिपाना पड़ता था। परमेश्वर का यह चमत्कार है, इसके बारे में लैव्यव्यवस्था ११वें अध्याय की ३७ वीं आयत में आया है: "और यदि इनकी लोथ में का कुछ किसी प्रकार के बीज पर जो बोने के लिय हो पड़े, तो वह बीज शुद्ध रहें।"

हम जानते हैं कि सरकारी चर्चों के सारे के सारे अगुवे कम्युनिस्टों के खुफिया विभाग में सन्देश नहीं देते।

गुप्त चर्च के बहुत से सदस्य सरकारी चर्च में भी क्रियाशील होते हैं। वे देखते हैं कि मसीहियत केवल ढुलमुल धर्म न बना रहे परन्तु संघर्षमय धर्म हो। एक बार जब पुलिस कम्पानियां में मसीही मठ बन्द कराने आई तो कुछ पुलिस वालों को जान से हाथ धोना पड़ा।

सरकारी चर्च दिन पर दिन कम होते जा रहे हैं। मैं ठीक से नहीं जानता परन्तु अनुमान है पूरे सोवियत संघ में लगभग पांच छै हजार चर्च हैं। (संयुक्त राज्य अमेरिका में इतनी ही जनसंख्या में लगभग तीन लाख चर्च हैं।) सोवियत संघ के बहुत से चर्च छोटे-छोटे कमरों में हैं। मास्कों में आये हुए पर्यटक जब मास्को का प्रोटस्टेंट चर्च (केवल एक ही प्रोटस्टेंट चर्च है) खचाखच भरा हुआ देखते हैं तो सोचते हैं रूस में धर्म की पूरी आजादी है! यही इधर उधर कहते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि सत्तर लाख आत्माओं के बीच केवल एक चर्च कितने दुख की बात है! अस्सी प्रतिशत लोगों के समीप तो एक कमरे वाला आराधना-लय भी पहुंचने लायक दूरी पर नहीं है। इन लोगों में प्रार्थना-प्रचार भूल जाना चाहिए या गुप्त प्रचार का ढंग अपनाना चाहिये। इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं है।

जैसे जैसे कम्युनिस्टवाद देश में बढ़ेगा वैसे वैसे चर्च को गुप्त रीति से चलाने की आवश्यकता बढ़ेगी।

गुप्त चर्च किस प्रकार नास्तिक साहित्य से लाभ उठाता है

गुप्त चर्च जानता है कि इस साहित्य को किस प्रकार उपयोग किया जाय। जिस प्रकार एलिया नबी को कौवों ने रोटी खिलाई उसी प्रकार नास्तिक साहित्य से गुप्त चर्च भोजन प्राप्त करते हैं। नास्तिक बड़ी तरकीब से बाइबल के पदों का ठट्टा करते हैं।

वे हास्य बाइबल और विश्वासी अविश्वासी की बाइबल आदि पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। वे बताने की कोशिश करते हैं कि बाइबल के पदों में कितनी मूर्खता भरी है। परन्तु उनकी आलोचना इतनी मूर्खतापूर्ण होती है कि कोई उसे गम्भीरता से नहीं लेता। परन्तु ये बाइबल-विरोधी पुस्तकें लाखों की तादात में छपती हैं। इनमें बाइबल के पद लिखे रहते हैं जो सुन्दर हैं चाहे कम्युनिस्ट उनका कितना ही मज़ाक क्यों न उड़ायें। धर्म विश्वासियों को कम्युनिस्ट धर्म परीक्षकों ने उपहासपूर्ण वस्त्र पहिना कर सड़क पर जुलूस निकाला। उनके कपड़ों पर नरक की ज्वाला और शैतान के चित्र बनाये। ये विश्वासी कितने संत लगते थे। अगर शैतान के मुंह से बाइबल के वचन निकलें तब भी सच हैं।

कम्युनिस्ट छापेखाने नास्तिक पुस्तकों को दोबारा प्रकाशित करने के आग्रह पर बड़े खुश होते हैं। इन पुस्तकों में बाइबल के पद होते हैं जिनका उपहास किया जाता है। कम्युनिस्ट नहीं जानते कि ये आग्रह भरे खत गुप्त चर्च के लोग पहुंचाते हैं, क्योंकि बाइबल तो क्या उसके पद मिलना भी कम्युनिस्ट देश में मुश्किल है। इस प्रकाशन के द्वारा कम से कम उन्हें बाइबल के पद तो मिल ही जाते हैं।

कम्युनिस्टों की नास्तिक सभा का हम सुसमाचार प्रचार के लिये उपयोग भी खूब जानते हैं। एक प्रोफेसर कम्युनिस्टवाद और मसीही धर्म की तुलना करते हुए बोला कि यीशु एक जादूगर के अलावा कुछ नहीं था। प्रोफेसर अपनी बात की पुष्टि के लिए प्रयोग का सामान भी साथ रखे हुए था। एक पानी से भरे कांच के बरतन में रासायनिक पाउडर डालते हुए बोला : "यीशु अपनी आस्तीन में ऐसा पदार्थ रखे हुए था जिसके डालने से पानी इसी प्रकार लाल हो गया। और यीशु ने दर्शाया कि पानी दाखरस में बदल गया है। परन्तु मैं यीशु से बड़ा काम कर दिखाता हूं। मैं इस दाखरस को फिर पानी में बदल देता हूं।" ऐसा

कहकर उस प्रोफेसर ने फिर कोई रासायनिक पदार्थ लाल द्रव में डाल दिया और द्रव पानी के रंग का हो गया। इसके बाद कोई पदार्थ डाल कर वह द्रव फिर लाल कर दिया।

यह सुनकर एक मसीही खड़ा हुआ और कहा, "आपका कार्य देखकर हम अचम्भे में पड़ गये हैं। अब हम आपसे छोटी सी एक बात करने को और कहेंगे; आप अपनी बनाई हुई शराब में से थोड़ी सी पीकर दिखा दीजिए।" प्रोफेसर ने कहा : "यह मैं नहीं कर सकता। वह पाउडर जहर था।" "यही तो अन्तर है आप और यीशु में, उसने उस दाखरस द्वारा दो हजार वर्षों से पृथ्वी पर आनन्द पहुंचाया; इसके विरुद्ध आप, अपने दाखरस द्वारा हमारी जिन्दगी में जहर घोल रहे हैं", उस मसीही ने कहा। उस मसीही को जेल में डाल दिया गया। परन्तु यह खबर दूर-दूर फैल गई जिससे विश्वास मजबूत हुए। हौसले बढ़े।

हम छोटे दाऊद की तरह कमजोर अवश्य हैं। परन्तु नास्तिकवाद के गोलियत से कहीं शक्तिशाली हैं क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है। सच्चाई हमारे साथ है।

एक कम्युनिस्ट वक्ता नास्तिकवाद पर भाषण दे रहा था। फैक्टरी के सारे मजदूरों को उपस्थित होना आवश्यक था। कुछ मजदूर मसीही भी थे। श्रोता बड़ी खामोशी से परमेश्वर के विरुद्ध बातें सुनते रहे। वक्ता ने मसीह पर विश्वास करना मूर्खता बताया। उसने कहा : "कोई आत्मिक दुनियाँ नहीं, कोई परमेश्वर नहीं है, कोई मसीह नहीं है। केवल मनुष्य है और उसमें आत्मा नहीं होती।" वक्ता ने बार-बार जोर दिया कि केवल पदार्थ ही अस्तित्व रखता है।

एक मसीही खड़ा हुआ और कुछ बोलने की आज्ञा मांगी। आज्ञा दे दी गई। इस मसीही ने अपनी कुर्सी को भूमि पर दे मारा। वह कुछ ठहरा उस कुर्सी को देखता रहा। फिर वह वक्ता की ओर बढ़ा और उसके गाल पर जोर का चांटा मारा। वह वक्ता आग बबूला हो गया।

गुस्से में भली बुरी बातें चिल्लाने लगा । कम्युनिस्ट कामरेडों से इस व्यक्ति को पकड़ने के लिये कहा । वक्ता ने इस मसीही मनुष्य से पूछा, "तुमने मुझे चांटा क्यों मारा ?"

मसीही ने उत्तर दिया, "आपने अपने आपको झूठा सिद्ध कर दिया। आपने कहा था कि सब पदार्थ है। आपके सामने मैंने कुर्सी को फेंक दिया, वह सचमुच में पदार्थ है। कुर्सी क्रोधित नहीं हुई। परन्तु जब मैंने आपको चांटा मारा आप की प्रतिक्रिया कुर्सी से भिन्न थी। पदार्थ को क्रोध नहीं आता परन्तु आपको आया। इसलिए कामरेड प्रोफेसर साहब आप गलत हैं। मनुष्य पदार्थ से बढ़कर है। हम आत्मिक जन भी हैं !"

इस प्रकार से गुप्त चर्च के साधारण मसीहियों में नास्तिकवाद के सारे दावे झूठे सिद्ध कर दिये।

जेल में एक राजनीतिक अफ़सर ने मुझसे पूछा, "कब तक यह मूर्खतापूर्ण धर्म से चिपके रहोगे।" मैंने कहा, "मैंने कई नास्तिकों को मरते समय पछताते देखा है कि वे जीवन में क्यों परमेश्वर रहित रहे। उन्होंने मसीह को याद किया। क्या आप कल्पना कर सकते हो कि कोई मसीही मृत्यु के समय मार्क्स और लेनिन को अपने विश्वास से बचने के लिए याद करेगा ?" वह अफसर हंसने लगा : "उत्तर अच्छा है।"

मैंने आगे कहा, "जब एक इन्जीनियर पुल बनाता है तब पल की मजबूती का पता पुल पर से बिल्ली को गुज़ार कर नहीं किया जाता। एक रेलगाड़ी को पुल पर से निकालने के बाद पता चलता है कि पुल कितना मजबूत है। सच तो यह है कि सब काम ठीक ठीक चलता रहे तो आप नास्तिक बने रह सकते हैं। परन्तु संकट काल में नास्तिकता काम नहीं देती।" मैंने लेनिन की पुस्तकें खोलकर दिखाई और सिद्ध किया कि लेनिन सोवियत संघ का प्रधान मंत्री बन जाने पर भी मुसीबत में प्रार्थना करता था।

हम शान्त हैं और शान्ति से घटनाओं का विकास देखते हैं। कम्युनिस्ट ही अशान्त हैं और दिन प्रति दिन धर्म विरोधी आंदोलन किया करते हैं। ऐसा करने से वे संत अगस्तीन के शब्दों की पुष्टि करते हैं : "दिल बेचैन होता है जबतक वह तुझ में विश्राम नहीं लेता।"

कम्युनिस्टों को क्यों जीता जा सकता है

गुप्त चर्च को यदि सहायता मिली तो वे कम्युनिस्ट के दिल जीत सकते हैं जिससे सारे संसार में परिवर्तन लाया जा सकता है। कम्युनिस्ट मनुष्य जीता जा सकता है क्योंकि कम्युनिस्ट होना अस्वाभाविक है। कुत्ता भी हड्डी को अपने ढंग से उपयोग करना चाहता है। कम्युनिस्टों के दिल इनके कार्यों और विश्वास का विरोध करते हैं जिन्हें वे करते हैं।

जब कम्युनिस्ट भौतिकवाद को सब कुछ समझकर विवाद करते हैं और कहते हैं कि मनुष्य जिन रासायनिक पदार्थों का बना है मरने के बाद फिर वही पदार्थों में मिल जाता है। तब उनसे केवल यह पूछ लेना पर्याप्त होता है, "इतने देशों में कम्युनिस्टों ने अपने विश्वास के लिए क्यों जान की बाजी लगा दी।" क्या रासायनिक पदार्थों के भी विश्वास होते हैं ? क्या पदार्थ दूसरों की अच्छाई के लिए त्याग कर सकते हैं ?" इन सवालों का उनके पास कोई जवाब नहीं है।

दुष्टता ! मनुष्य को दुष्ट नहीं सृजा गया। लम्बे अरसे तक इन्सान दुष्ट नहीं बना रह सकता। नाजी लोगों ने दुष्टता का साम्राज्य फलाया, आखिर उनमें से बहुतों ने आत्महत्या की, कुछ ने अपराधों को स्वीकार किया।

न जाने क्यों कम्युनिस्ट देशों में लोग शराब का उपयोग खूब करते हैं। जीवन को विस्तारपूर्वक देखना चाहते हैं जिसे कम्युनिस्टवाद दे नहीं पाता। औसतन रूसी व्यक्ति, गहरा, महान हृदय वाला और दयालु

होता है। कम्युनिस्टवाद उथला और बाहरी है। एक रूसी जिन्दगी जीना चाहता है। यह जीवन उसे शायद शराब में मिलता हैं। शराब में वह अपनी दुष्टता और धोका देने वाले जीवन को भूल सा जाता है। कुछ समय के लिए शराब उसे इस दुख से आज़ाद कर देती है। अगर सच्चाई पर वह विश्वास करे तो उसे इस दुख से हमेशा तक के लिए आज़ादी मिल सकती है।

बुकारेस्ट में, जब रूसियों ने कब्जा किया, मेरे दिल ने कहा कि एक मधुशाला में घुस जाऊं। मैंने अपनी बीवी से भी आने को कहा। अन्दर जाने पर हमने एक फौजी अफसर को बन्दूक लिये हुए देखा। यह अफसर खूब शराब पिये हुये था फिर भी लोगों से पीने को और मांग रहा था। उसे पीने से रोका जा रहा था क्योंकि पहिले ही उसने खूब पी रखी थी। लोग परेशान थे। मैं मालिक के पास गया। वह मुझे जानता था। मैंने उससे कहा कि अफसर को कुछ शराब और दे दो। मैं उसकी देखभाल करूंगा। हमारे बीच में एक बोतल और तीन गिलास दे दिये गये। अफसर बड़ी सज्जनता से गिलास भरता फिर तीनों स्वयं ही पी जाता था। यद्यपि उसने खूब पी ली थी फिर भी उसका दिमाग काम कर रहा था। उसे पीने की आदत थी। मैंने उससे मसीह के बारे में बातें शुरू कीं। उसने बहुत ही ध्यान से सुनीं।

अन्त में उसने कहा : "आपने मुझे बता दिया कि आप कौन हैं, अब मैं बताऊंगा कि मैं कौन हूं। मैं एक औरथोडोक्स धर्म गुरु हूं। मैं उन लोगों में से हूं जिन्होंने आरम्भ में ही स्टालिन के आतंक से अपना विश्वास तज दिया था। मैं गांव-गांव यह कहता घूमा हूं कि परमेश्वर नहीं है। मैं धर्म गुरु बनकर मूर्ख बनाता रहा। सारे धर्म गुरु झूठे हैं। मेरा कार्य देखकर मुझे खुफिया पुलिस में अफसर बना दिया गया। मैंने इन हाथों से मसीहियों को यातनाएं दी हैं और मौत के घाट उतारा है। परमेश्वर की ओर से मेरी यह सजा है कि मैं अपने किये को चाह कर भी

नहीं भुला पा रहा हूं । मैं भूलने के लिये शराब का सहारा ले रहा हूं लेकिन यह शराब काम नहीं कर रही है।"

बहुत से कम्युनिस्ट आत्महत्या करते हैं। ऐसा ही कम्युनिस्ट महान कवियों एसीनिन और माइआकोवस्की ने किया। ऐसा ही कम्युनिस्ट लेखक फादीव ने किया। उसने "प्रसन्नता" नामक पुस्तक लिखी जिसमें समझाया कि सच्ची प्रसन्नता कम्युनिस्टवाद को फैलाने में ही है। परन्तु पुस्तक समाप्त करने के पश्चात् उसने आत्महत्या कर ली। उसकी आत्मा के लिए इतना बड़ा झूठ सहन करना असम्भव था। जोकी टोमकिना महान कम्युनिस्ट नेता और जार के समय के क्रांतिकारी भी कम्युनिस्टवाद की असलियत देख जीवित न रह सके। वे भी आत्महत्या से ही समाप्त हुए।

कम्युनिस्ट अप्रसन्न हैं। उसी प्रकार महान तानाशाही करने वाले नेता भी। स्टालिन भी कितना अप्रसन्न था। अपने बहुत से कामरेडों को समाप्त करने के बाद उसे भय लगा रहता था कि कहीं उसे कोई जहर न दे दे। उसके आठ सोने वाले कमरे थे जो बैंक की तिजोरियों की तरह बन्द होते थे। कोई नहीं जानता था स्टालिन कौन से कमरे में बन्द सो रहा है। बिना किसी को स्वाद कराये वह कभी भोजन नहीं करता था। कम्युनिस्टवाद सभी को अप्रसन्न रखता है, अपने नेताओं को भी। इन्हें मसीह की आवश्यकता है।

कम्युनिस्टवाद को उखाड़ फेंकने से केवल हम कम्युनिस्टों के शिकारों को नहीं परन्तु कम्युनिस्टों को भी आजाद करेंगे।

गुप्त चर्च दबे हुए अंगों का प्रतीक है। प्रत्येक रीति से उसकी सहायता कीजिये।

× × ×

गुप्त चर्च की विशेषता उसकी विश्वास में दृढ़ता है।

एक धर्म सेवक जिसका उपनाम "जार्ज" है अपनी पुस्तक में गुप्त चर्च के कार्यों के बारे में लिखता है :

"हंगरी में, एक रूसी फौजी कप्तान धर्म गुरु से अकेले में मिलने आया। वह युवक अत्यन्त कर्मशील दिख रहा था। जब वह और धर्म गुरु एक कमरे में पहुंचे जहां दीवार पर क्रूस लगा हुआ था। वह क्रूस की ओर इशारा करते हुए बोला, "तुम जानते हो कि वह झूठ है।" उसने आगे कहा, "आप धर्म गुरु लोग ग़रीब लोगों को इन बातों में विश्वास दिलाकर मूर्ख बनाते हो। इस तरह अमीर लोग गरीबों को सच्चाई से दूर रखते हैं। अब, जब कि हम अकेले हैं! स्वीकार करो कि तुमने कभी विश्वास नहीं किया कि यीशु मसीह परमेश्वर का बेटा था।"

धर्मगुरु हंसे और कहा "लेकिन मेरे प्रिय युवक, मैं मसीह में विश्वास रखता हूं। यह सब सच है।"

"मैं अपने ऊपर यह चालाकी नहीं चलने दूंगा! यह गम्भीर प्रश्न है। मुझ पर न हंसिये!," युवक कप्तान ने कहा।

उसने अपनी पिस्तौल निकाली और धर्मगुरु के सीने से लगा दी।

"अगर तुम स्वीकार नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें गोली से उड़ा दूंगा।" युवक कप्तान ने कहा।

"मैं तुम्हारी बात कैसे स्वीकार कर सकता हूं जबकि मैं जानता हूं कि मेरा विश्वास सच्चा है। हमारा प्रभु सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है," धर्मगुरु ने कहा।

युवक कप्तान ने पिस्तौल ज़मीन पर फेंक दिया और धर्मगुरु के सीने से लग गया। उसकी आंखों में आंसू झलक आये।

"यह सच है!" वह बोला। "यह सच है। मुझे भी विश्वास है। मैं नहीं जानता था कि मनुष्य इस विश्वास के लिए जान दे सकता है। अब मैंने देख लिया। आपको धन्यवाद। आपने मेरे विश्वास को दृढ़ किया

है। मैं भी मसीह के लिए जान दे सकता हूं। आपने मुझे अपने जीवन से दर्शाया है।"

मुझे इस प्रकार की और भी घटनाएं मालूम हैं। जब रूसियों ने रूमानियां पर कब्जा किया उस समय दो रूसी फौजी बन्दूक लिये एक चर्च में घुसे। उन्होंने कहा : "हम तुम्हारे धर्म में विश्वास नहीं करते। वे जो इस धर्म को इसी समय नहीं छोड़ देते उन्हें हम गोली से उड़ा देंगे। जो लोग धर्म छोड़ना चाहते हैं वे हमारे दायें हाथ की ओर चले जायें!" कुछ दायीं ओर सरक गये। इन्हें घर भाग जाने की आज्ञा दे दी गई। वे जान बचाकर भाग खड़े हुए। ये दो रूसी, बचे हुए मसीहियों के साथ चर्च में रहे, इन्होंने मसीहियों को गले से लगाया और कहा : "हम भी मसीही हैं, परन्तु हम उनके साथ संगति करना चाहते थे जो अपने विश्वास के लिए जान देने को तैयार हों।"

हमारे यहां इस प्रकार के लोग सुसमाचार के लिए संघर्ष कर रहे हैं वे सुसमाचार के लिये ही नहीं परन्तु आज़ादी के लिये भी लड़ रहे हैं।

कई लोगों के घरों में घंटों संगीत बजता है। हमारे यहाँ के घरों में संगीत की आवाज़ की जाती है जिससे घर में सुसमाचार और गुप्त चर्च की योजना का पता पड़ोसी को न चले। और वे खुफिया पुलिस तक ख़बर न पहुंचा सकें।

एक अच्छे विदेशी मसीही से मिलकर गुप्त चर्च के मसीही अत्यंत खुश होते हैं!

जो मनुष्य यह लिख रहा है वह एक साधारण सा मनुष्य है। वह उन लोगों की आवाज़ है जो आवाज़ रहित हैं। जिनकी चर्चा कहीं नहीं होती। उनके लिए मैं चाहता हूं कि मसीही धर्म को अत्यन्त गम्भीरतर से लिया जाये और धर्म की समस्या को सही ढंग से सुलझाया जाये। मैं कम्युनिस्ट देशों के गुप्त चर्चों के लिये आप से आत्मिक और आर्थिक सहायता मांगता हूं।

कम्युनिस्टों पर हमारी विजय होगी क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है।

इसके अतिरिक्त, हमारा सन्देश दिल और दिमाग़ की गहरी आवश्यकताओं के लिये उपयुक्त है।

कम्युनिस्ट, जो नाज़ी जेलों में बन्द किये गये थे उन्होंने मेरे सामने स्वीकार किया कि वे मुसीबत के समय प्रार्थना करते थे। मैंने देखा है, कम्युनिस्ट मरते समय "यीशु, यीशु", कहते मरे हैं।

हम विजयी होंगे क्योंकि अंगों की सांस्कृतिक बुनियादें मसीही हैं। रूसी चाहे सारा मसीही साहित्य समाप्त कर दें, परन्तु तोल्सतोय और दोस्तीव्स्की की पुस्तकें रहेंगी जो लोगों तक मसीह का सन्देश पहुंचाती रहेंगी। इसी प्रकार पूर्वी जर्मनी में गेते है, सिनकीविच पौलेंड में, इत्यादि। रूमानिया का सबसे महान लेखक सडोवीनू था। कम्युनिस्टों ने उसकी पुस्तक "संतों की जीवनियां" प्रकाशित की है। जिसका शीर्षक "संतों की कथाएं" रखा गया है। परन्तु इस शीर्षक परिवर्तन से पुस्तकों की प्रेरणा में अंतर नहीं आया।

रेफल, माइकलएनजलो और विन्शी की कला में बसे हुए यीशु को तो कम्युनिस्ट समाप्त नहीं कर सकते।

कम्युनिस्ट के दिल की अवस्था जिसे वह चुप रह कर छिपा सकता है परन्तु अपने जीवन से तो नहीं निकाल सकता। वह मेरे सवालों का उत्तर उसके कम्युनिस्टवाद की सहायता से नहीं दे सकता। सबसे बड़ा तथ्य कम्युनिस्ट का विवेक तो हमारी ओर है।

मैं स्वयं कई "मार्क्स" पढ़ाने वाले शिक्षकों को जानता हूं जो नास्तिकवाद पर बोलने से पहिले परमेश्वर से प्रार्थना करना आवश्यक समझते हैं। मैं ऐसे कम्युनिस्टों को जानता हूं जो कहीं दूर गुप्त चर्च की सभा में हिस्सा लेते हैं। किसी के पूछने पर वे इस सच्चाई से इंकार कर देते है। इस भीरुता पर वे रोते हैं, आखिर इंसान ही तो हैं।

यदि एक व्यक्ति धर्म में कुछ विश्वास ले आये चाहे आरम्भ में वह कितना ही अविकसित क्यों न हो धीरे-धीरे उसमें आगे बढ़ सकता है। हमें यकीन है, यह विश्वास विजयी होगा, हम गुप्त चर्च के लोगों ने ऐसा होते हुए देखा है।

कम्युनिस्टों से मसीह प्रेम करता है। उन्हें अवश्य मसीह के लिये जीता जाना चाहिये। कम्युनिस्ट राष्ट्रों अर्थात् लोह पट के पीछे केवल गुप्त चर्च ही उन पर विजय प्राप्त कर सकता है।

जो लोग मसीह को इस दुनियां की प्रत्येक आत्मा का उद्धारकर्त्ता देखना चाहते है उन्हें इन कम्युनिस्ट देशों के गुप्त चर्च की मदद अवश्य करना चाहिये। यीशु ने कहा, "सारे देशों को सिखाओ।" उसने ऐसा कभी नहीं कहा कि कम्युनिस्ट देशों में न सिखाओ। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के लिये हमें कम्युनिस्ट देशों में अवश्य पहुंचना चाहिये। तीन में से एक व्यक्ति आजकल कम्युनिस्टों का बन्दी है।

हम इन कम्युनिस्टों तक गुप्त चर्च के द्वारा पहुंच सकते हैं जो वहां मौजूद हैं।

तीन समूह गुप्त चर्च में सम्मिलित हैं :

प्रथम पास्टर और धर्म सेवक जिन्हें कम्युनिस्ट सरकार ने हटा दिया है।

हज़ारों पास्टर और धर्म सेवक उनके मसीही समूहों से निकाल दिये गये क्योंकि इन लोगों ने कम्युनिस्टों के साथ मिल कर, सुसमाचार और कम्युनिस्टवाद का बीच का मार्ग निकालने से इंकार कर दिया। कम्युनिस्टों ने इन लोगों को बन्दी बनाकर कई वर्ष तक यातनाएं पहुंचायीं। उन्हें अब रिहा कर दिया गया है। इन धर्म सेवकों और पास्टरों ने सुसमाचार कार्य फिर गुप्त चर्च के द्वारा आरम्भ कर दिया है। ये लोग चुपचाप से, रात में किसी भी स्थान पर आत्मिक सभाएं करते हैं। ये

लोग "जीवित शहीद" हैं, और किसी भी बलिदान के लिए हमेशा तत्पर हैं।

द्वितीय—चर्च के सदस्य

दूसरा समूह जो गुप्त चर्च में सम्मिलित है वह है—समर्पित स्त्री पुरुषों का दल। चीन और रूस में गुप्त चर्च के सदस्य केवल नाम के या ढुलमुल मसीही नहीं होते। मसीह होने की वे बहुत बड़ी कीमत चुकाते हैं। एक बात याद रखने योग्य है कि अत्याचार ने मसीही लोगों का निर्माण किया है। ऐसे मसीही जो गवाही देते हैं, ऐसे मसीही जो आत्माएं जीतते हैं। कम्युनिस्टों की यातनाओं ने ऐसे मसीही बनाने में सहायता की है जो आज़ाद देशों में बहुत कम ही दिखाई देते हैं। गुप्त चर्च के मसीही कल्पना भी नहीं कर सकते कि एक मसीही व्यक्ति आत्मा जीतने का प्रयत्न नहीं करता!

रूसी फौजी समाचार पत्र "रेड स्टार" ने कहा "मसीह के उपासक सारे लोगों पर अपना पंजा रखना चाहते हैं।" रूस के मसीहियों के आदर्श जीवनों को देखकर आसपास के लोग उन्हें प्रेम करते हैं, उनकी इज्जत करते हैं। जब किसी बच्चे की मां बीमार होती है तो कोई मसीही महिला उस बच्चे की देखरेख करती है। जब कोई व्यक्ति बीमार है और अपना कार्य नहीं कर सकता तो मसीही लोग आकर इस बीमार मनुष्य के कुटुम्ब की सहायता करते हैं। वे मसीही जीवन "जीते" हैं। इसलिए लोग सुसमाचार प्रचार ध्यानपूर्वक सुनते हैं। उस पर विश्वास करते हैं। क्योंकि अन्य लोग मसीह को इनके जीवनों में देखते हैं। कम्युनिस्टों की आज्ञा से सरकारी चर्च में केवल अनुमोदित आदमी ही बोल सकता है। किन्तु हज़ारों की तादाद में गावों, शहरों और ग्राम स्थानों पर, मसीही लोग प्रचार करते हैं और आत्माएं मसीह के लिए जीतते हैं। कम्युनिस्ट समाचार पत्र लिखते हैं कि मसीही दुकानदार मसीही परचों में सामान बांध कर देते हैं। वे रातों रात प्रेस में मसीही साहित्य छापते

हैं और दिन निकलने के पहिले प्रेस बन्द कर देते हैं। कम्युनिस्ट प्रेस यह भी लिखते हैं कि सुसमाचार का साहित्य बच्चों तक किसी माध्यम से पहुंचाया जाता है फिर बच्चे इसे हाथ से लिखते हैं, और चुपचाप से अपने शिक्षकों के ओवरकोट की जेबों में रख देते हैं। यह गुप्त चर्च केन्द्र सदस्यों का बडा शक्तिशाली व क्रियाशील दल है जो कम्युनिस्ट देशों में मसीह के लिए आत्मा जीतने का कार्य कर रहा है।

कम्युनिस्ट वयूबा में भी गुप्त चर्च आरम्भ हो गया है क्योंकि सारे सच्चे धर्म सेवक बन्दी बना लिये गये हैं और "नकली कम्युनिस्ट पास्टर" उनके स्थानों पर नियुक्त कर दिये गये है।

इस तरह से लाखों सच्चे विश्वासी, कम्युनिस्ट अत्याचारों द्वारा अपने विश्वास में और दृढ़ हो गये हैं। जब कि कम्युनिस्ट सोचते थे कि यातनाओं और हत्याओं द्वारा वे मसीहियों को समाप्त कर देंगे।

तृतीय—वह पास्टरों और धर्म सेवकों का समूह जो सरकारी चर्चों में धर्म सेवा करते हुए भी गुप्त चर्च से सम्बन्ध रखता है।

गुप्त चर्च का तीसरा मुख्य हिस्सा सरकारी चर्च के पास्टर और धर्म सेवक हैं। ये वे लोग हैं जो किसी भी कीमत पर भ्रष्ट नहीं किये जा सकते और न खामोश किये जा सकते हैं। गुप्त चर्च पूरी तरह से सरकारी चर्च से अलग नहीं है। कई कम्युनिस्ट देशों जैसे योगोस्लेविया, पोलेंड और हंगरी में पास्टर गुप्त रीति से गुप्त चर्चों में कार्य करते हैं। कुछ देशों में गुप्त और सरकारी चर्च मिले जुले काम करते हैं। यहां पास्टर अपने चर्च के कमरे के बाहर मसीह का नाम नहीं ले सकते और न बच्चे युवा सभा कर सकते है। गैर मसीही सभाओं में आने से डरते हैं। पास्टर चर्च के बीमार सदस्यों के लिए प्रार्थना नहीं कर सकते। चर्चों को चारों ओर से कम्युनिस्ट घेरे हुए हैं इस कारण चर्च अर्थहीन से हो गये हैं। प्रायः इन पास्टरों के सामने ऐसी रुकावटें आती हैं जिससे "धार्मिक

आज़ादी" के झूठे विधान की असलियत मालूम हो जाती है। ये पास्टर अपनी आज़ादी और आराम को खतरे में डालकर चुपचाप से बराबर का सेवा कार्य आरम्भ कर देते हैं। यहां तक कम्युनिस्टों के हाथ नहीं पहुंच सकते। ये पास्टर बच्चों और तरुणों को सुसमाचार का ज्ञान कराते है। वे साहित्य बांटते, घरों और आम स्थानों में चुपचाप से मसीह प्रचार करते हैं। कई पास्टर पकड़े गये हैं और जेल में वर्षों के लिए ठूंस दिये गये हैं।

परन्तु छिपे हुए चर्चों को "गुप्त चर्च" की संज्ञा कम्युनिस्टों और धर्म अनुसंधान करने वालों ने दी है। ये अनुसंधान संगठन धर्म की स्थिति अध्ययन करने को बनाया गया है। गुप्त चर्च के सदस्य अपने आपको गुप्त चर्च का सदस्य नहीं कहते। वे अपने आपको मसीही, विश्वासी, परमेश्वर की संतान कहते हैं। कभी कभी विदेशी भी गुप्त चर्च की सभा में हिस्सा लेते है। गुप्त चर्च की संज्ञा दुश्मनों ने और शुभ हितैषी लोगों ने बड़ी ही उपयुक्त दी है।

आप सारे देशों में घूमते रहें और कोई रूसी जासूस को न ढूंढ सकें तो इसका यह मतलब तो नहीं कि रूसी जासूस आज़ाद देशों में हैं ही नहीं।

अगले अध्याय में सोवियत प्रेस में गुप्त चर्च के बारे में छपे हुए लेखों के अवतरण दे रहा हूं।

६

मैंने मसीही प्रचार के बारे में बताया जो रूसी फौज और कम्युनिस्ट रूमानियां में हमारे द्वारा किया जा रहा है।

मैंने आप से कम्युनिस्टों में मसीही प्रचार की और कम्युनिस्ट देशों में दबे हुए लोगों की सहायता की अपील की है।

क्या मेरी चुनौती "काल्पनिक" और "अकार्यशील" है?

क्या मेरी चुनौती अर्थपूर्ण है?

क्या गुप्त चर्च वास्तव में रूस व अन्य देशों में क्रियाशील है? क्या गोपनीय रीति से वहां कार्य सम्भव है?

इन प्रश्नों का उत्तर एक खुशखबरी है।

कम्युनिस्ट लोग अपने शासन की अर्ध शताब्दी मना रहे हैं। लेकिन उनकी विजय एक हार है। मसीही धर्म की विजय हुई है—कम्युनिस्टवाद की नहीं। गुप्त चर्च बड़ी गहराई से कम्युनिस्ट प्रेस का अध्ययन करता है। कम्युनिस्ट प्रेस को गुप्त चर्च की योजनाओं का अच्छा खासा ज्ञान है। गुप्त चर्च अब इतना शक्तिशाली हो गया है कि कभी कभी बाहरी रूप से भी कार्य करता है। कम्युनिस्ट इस बात को जानते हैं।

ज्ञात रहे गुप्त चर्च हिमशिला के समान है जिसका अधिक हिस्सा पानी की सतह के नीचे होता है।

अगले पृष्ठों में कम्युनिस्ट प्रेस में छपी हुई कुछ खबरों को बताऊंगा।

हिम शिला का शीर्ष

सूहुमी (कॉकासस), नवम्बर ७,१९६६ में गुप्त चर्च की एक महान सभा सार्वजनिक रूप से हुई। कई विश्वासी दूसरे नगरों से हिस्सा लेने आये। सन्देश समाप्ति के बाद सेंतालीस युवाजनों ने यीशु मसीह को प्रभु स्वीकार किया और काले सागर में बपतिस्मा लिया। यह उसी प्रकार हुआ जैसे बाइबल के आरम्भ के दिनों में हुआ करता था।

इसके पहिले उन्हें शिक्षा का कोई अवसर नहीं मिला था। कम्युनिस्ट तानाशाही के पचास वर्षों में इन देशों में न बाइबल है और न मसीही साहित्य जिसकी सहायता से धर्म की शिक्षा दी जाये और सुशिक्षित धर्म गुरु बनाये जायें। फिलिप्पुस, जो सम्मानित प्राचीन था कोई महान धर्मगुरु नहीं था। परन्तु खोजे से घंटे भर बात करने के बाद ही खोजे ने कहा : "देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है ?" फिलिप्पुस ने कहा "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है।" इसके बाद ही वे उतर कर पानी के पास आये और इस खोजे को जिसका मन परिवर्तन हो चुका था बपतिस्मा दिया। (प्रेरितों के काम ८ : ३६-३८)।

काले सागर में पर्याप्त पानी है, गुप्त चर्च ने बाइबल के प्रारम्भ के दिनों की तरह कार्य शुरु कर दिये हैं।

शिक्षक पत्रिका, अगस्त २३, १९६६ में आया था कि रोस्टोव-ओन-डोन में बेपटिस्ट कलीसिया ने कानून के विरुद्ध कार्य किया। उन्होंने कलीसिया का नाम नहीं लिखवाया। सड़क पर कम्युनिस्टों के विरुद्ध प्रदर्शन किया।

यह प्रदर्शन मई १ को हुआ। जिसको कम्युनिस्ट "मे डे" के नाम से मनाते हैं। गुप्त चर्च बड़ी होशियारी से कम्युनिस्ट पर्वों के दिनों को अपने प्रदर्शनों के लिये चुनते हैं।

"मई दिवस" पर सारे कम्युनिस्ट बड़ा उत्सव मनाते हैं जिसमें प्रत्येक को हिस्सा लेना आवश्यक होता है। परन्तु इस समय रूस की दूसरी बड़ी ताकत (गुप्त चर्च भी) सड़क पर प्रदर्शन के लिए मौजूद थी।

पन्द्रह सौ विश्वासी आये। परमेश्वर के प्रेम ही के कारण उन्होंने अपनी आज़ादी को खतरे में डाला। वे जानते थे कि प्रदर्शन उन्हें बन्दी-गृह में पहुंचा देगा। वहां भूखे मरना और यातनाओं का सामना करना पड़ेगा।

रूस में प्रत्येक विश्वासी "रहस्यमयी घोषणा पत्र" के बारे में जानते हैं कि यह पत्र प्रचारक मसीही बरनौल से निकालते हैं। इस पत्र में निकला था कि कुलन्दा गांव की बहिन मारा के पति की जेल में मृत्यु हो गई। अब वह चार छोटे बच्चों के साथ विधवा है। विधवा ने जब अपने पति के शव को देखा। उसने उसके हाथों पर हथकड़ियों के निशान पाये। अंगुलियां और पैरों के तले बुरी तरह जला दिये गये थे। पेट के नीचे निशान थे। पूरे बदन पर पिटाई के निशान थे।

रोस्टोव-ऑन-डॉन में जितने भी विश्वासी प्रदर्शन करने आये सब जानते थे कि उनका भी यही हाल हो सकता है। फिर भी वे प्रदर्शन करने आये।

परन्तु वे ये भी जानते थे कि यह शहीद जो मन परिवर्तन के तीन माह बाद सैंकड़ों विश्वासियों के सामने दफनाया गया उसका नारा यह था:

"मसीह में जीवित रहना और उसके लिए ही मरना हमारा नारा है।"

"उनसे क्या डरना वे हमारा शरीर ही समाप्त कर सकते हैं लेकिन आत्मा को तो नहीं छू सकते।

"मैंने देखा है, वेदी के पास, परमेश्वर के वचन पर मरने वालों को।"

इस शहीद के उदाहरण से रोस्टोव-ग्रॉन-डॉन में प्रदर्शनकारियों को प्रेरणा मिली। सड़क के चारों ओर भीड़ जमा हो गई। उस घर के चारों ओर लोग जमा थे। कुछ छत पर चढ़े हुए थे और कुछ पेड़ों पर भी थे। उसी प्रकार जैसे पुराने समय में जक्कई पेड़ पर चढ़ गया था। अस्सी लोग विश्वास लाये जिनमें ज्यादा युवा थे। इसमें से तेईस युवक कम्युनिस्ट संघ के सदस्य थे।

विश्वासी पूरा नगर पारकर डोन नदी पर गये जहां सबका बपतिस्मा हुआ।

नदी के किनारे कम्युनिस्ट पुलिस ने घेरा डाला। वे विश्वासियों में से मुखिया को पकड़ना चाहते थे। (वे सारे पन्द्रह सौ को तो गिफ्तार नहीं कर सकते थे।) विश्वासी घुटनों के बल गिर कर प्रार्थना में लीन हो गये। वे नहीं चाहते थे कि उनके भाई पकड़े जायें। वे चाहते थे कि उस दिन का कार्यक्रम पूरा हो। तब भाइयों और बहिनों ने मुखियों को घेर लिया कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो गये कि पुलिस उन्हें न पकड़ सके। स्थिति गम्भीर हो गई।

रूसी अखबारों ने लिखा कि "ग़ैर कानूनी" बेपटिस्ट संघ ने रोस्टोव में एक गुप्त प्रेस लगा रखा है। (रूसी, बेपटिस्ट का अर्थ प्रचारक और पिन्तेकुस्त कलीसिया से भी लेते हैं।) साहित्य छापा जाता है जिसमें युवा लोगों को विश्वास में दृढ़ बने रहने को कहा जाता है। इस प्रेस द्वारा एक प्रकाशन में माता पिताओं से कहा गया जो मुझे अच्छा लगा: "बच्चों को किसी के दफन में ले जाना चाहिए जिससे किसी परिवर्तन से न डरने का अभ्यास करते रहें।" माँ बाप से बच्चों को मसीही शिक्षा देने को कहा जिससे वे कम्युनिस्ट शालाओं में दी जाने वाली नास्तिकवाद की शिक्षा का विरोध कर सकें।

इन अखबारों ने आखिर में कहा : "शिक्षकगण परिवारों में इतने शिथिलता से क्यों मिलते जुलते हैं कि बच्चों पर धर्म का जादू चलता है और वे मूर्खता की बातें सोचने लगते हैं।

इस शिक्षक पत्रिका में गुप्त बपतिस्मा देने वालों का क्या परिणाम हुआ, यह भी वर्णन किया गया है।

कुछ विश्वासियों ने कम्युनिस्ट अदालत का मुकाबला दृढ़ता से किया। नवयुवतियों ने जो देखने आई थीं, बड़ी रुचि से देखा। नास्तिक लोगों ने विश्वासियों को भला बुरा कहा।

रूस में कम्युनिस्ट पार्टी केन्द्र के सामने गुप्त चर्च के सदस्यों ने धार्मिक आजादी के लिए प्रदर्शन किया। उन्होंने जेल और पिटाई की परवाह न करते हुए यह किया।

हमारे पास कम्युनिस्टों का गुप्त प्रमाण पत्र है जो हमें **'गैर कानूनी'** प्रचारक बेपटिस्ट कलीसिया के द्वारा प्राप्त हुआ। यह कलीसिया कम्युनिस्टों द्वारा नियंत्रण किये जाने वाले बेपटिस्ट संगठन का विरोध करती हैं। इस भ्रष्ट संगठन का नेतृत्व कारेव करता है। कारेव कम्युनिस्ट द्वारा सैकड़ों मसीही लोगों को मौत के घाट उतारे जाने का बखान करता है। और **"आज का सोवियत जीवन"** (नं०६,१९६३) आज़ादी के बारे में बढ़ चढ़कर लिखता है। यह लेख हमारे पास गुप्त रीति से पहुंचे हैं।

नीचे मैं उस लेख का अनुवाद दे रहा हूं जिसमें मॉस्को में हुए एक साहसी कम्युनिस्ट विरोधी, मसीही प्रदर्शन का वर्णन है।

आवश्यक समाचार

"प्रिय भाइयो और बहिनों, परमेश्वर हमारे पिता और प्रभु यीशु मसीह की आशीष और शांती आप के साथ रहे।"

"हम जल्दी में आपको बताना चाहते हैं कि प्रचारक बेपटिस्ट मसीही

कमीसिया के प्रतिनिधि जो पांच सौ थे, मई १६, १९६६ को मास्को पहुँचे। कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की इमारत के सामने जमा हुए हम प्रधान सचिव से बात करना चाहते थे।"

"हमने प्रधान सचिव ब्रिजनेव के लिए आवेदनपत्र दिया।"

मुख्त चर्च द्वारा भेजे हुए घोषणापत्र में आगे यह लिखा था कि सारे दिन पांच सौ प्रतिनिधि केन्द्रीय इमारत के बाहर खड़े रहे। मास्को में कम्युनिस्टवाद के विरुद्ध यह पहिला सार्वजनिक प्रदर्शन था।

सन्ध्या के समय दूसरा आवेदन पत्र तैयार किया गया वह भी प्रधान सचिव ब्रिजनेव के लिए था। इस पत्र में इन्होंने कामरेड स्ट्रोगनेव की शिकायत की। इस कामरेड ने ब्रिजनेव तक प्रदर्शनकारियों की प्रार्थना पहुंचाने से इन्कार कर दिया और धमकी दी।

ये पांच सौ प्रदर्शनकारी रात भर सड़क पर इमारत के सामने रहे। मोटर गाड़ियां उन पर कीचड़ उछालती गुजर गयीं। उनकी खिल्ली उड़ाई गई। वर्षा हुई परन्तु वे प्रातः तक वहीं खड़े रहे।

दूसरे दिन यह सोचा गया कि पांच सौ भाई इमारत में प्रवेश करें और किसी अधिकारी से मिलें। परन्तु वे जानते थे कि पिछले समय में जो विश्वासी मिलने इमारत में गये हैं उन्हें पीटा जाता है क्योंकि वहां गवाही देने वाला कोई नहीं होता। प्रतिनिधि मंडल ने फैसला किया कि ब्रिजनेव की प्रतीक्षा करनी चाहिये।

फिर जो होना था वह हुआ।

और १ बजकर ४५ मिनट पर अट्ठाइस बसें आयीं और विश्वासियों पर भयंकर आतंक आरम्भ हुआ। "हमने एक दूसरे के हाथ पकड़े और घेरा बना लिया। हमने भजन गाया : हमारे जीवन के सबसे अच्छे दिन ये हैं तब हम मसीह का क्रूस उठा सकें। खुफिया पुलिस ने सबकी पिटाई शुरू की। पंक्तियों में से लोगों को निकाला और मुंह पर मारा। सिर पर मारा गया। उन्हें घसीट कर बस में घुसेड़ दिया गया। जो बस में

नही चढ़ना चाहते थे उन्हें इतना पीटा गया कि वे बेहोश हो गये। जब प्रदर्शनकारियों से बसें भर गई तो इन्हें अनजानी जगह पर ले जाया गया। बसों में भजन होते रहे। यह सब कुछ मास्को की भीड़ के सामने हुआ।"

पांच सौ विश्वासी पकड़े गये और यातना भी भोगी। भाई बिन्स और भाई होरेव (मसीह के झुंड के चरवाहे) ने साहस न हारा वे फिर कम्युनिस्ट केन्द्रीय दफ्तर में गये जिस प्रकार यूहन्ना के बन्दी बनाये जाने के बाद यीशु मसीह ने उसी स्थान पर उन्हीं शब्दों में कहा : "मन फिराव क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"

बिन्स और होरेव ने मसीही प्रदर्शनकारियों के बारे में पूछा और उनकी रिहाई की मांग की। इसके बाद इन दोनों को गायब कर दिया गया। कुछ दिनों बाद मालूम हुआ कि उन्हें लीफोर्टवस्किया जेल में डाल दिया गया था।

क्या गुप्तचर्च के मसीही डरते हैं? नहीं दूसरों ने भी अपनी आज़ादी खतरे में डाली। और जो लेख हमारे सामने है इसे छापा। विश्वासियों के साथ जो हुआ हमें बताया," क्योंकि मसीह के कारण तुम पर जो अनुग्रह हुआ, कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिए दुख भी उठाओ।" (फिलिप्पियों १:२९)। वे भाइयों से आग्रह करते हैं "कि कोई इन क्लेशों के कारण डगमगा न जाये, क्योंकि तुम आप जानते हो, कि हम सब इन ही के लिए ठहराए गये हैं।" (थिस्सलुनीकियों ३:३)। वे इब्रानियों १२:२ का भी हवाला देते हैं "और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहे, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा, और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।"

गुप्त चर्च ने युवा लोगों को कम्युनिस्ट शिक्षा देने की खुली खिलाफत की है। वे कम्युनिस्ट जहर को फैलने न देने की पूरी कोशिश कर

रहे हैं। चर्च के भ्रष्ट अगुवों की भर्त्सना किये बिना नही रहते। इसके बारे में वे अपने एक लेख में लिखते हैं। "आजकल, शैतान लिखवाता है और "चर्च" स्वीकार करता है जो परमेश्वर की आज्ञाओं के बिलकुल उलटा है।" ("प्रावदा डकरैनी" के अक्टूबर १९६६ के अंक में उपरोक्त कथन आया था)

"प्रावदा वोस्टोका" ने भाई एलेक्सी नैवमरोव, बोरिस ग्रामशोव और अक्ज़ेन जुबोव के विरुद्ध मुकदमे का वर्णन छापा था। इन तीन भाइयों ने अमेरिका से प्रसारित होने वाले प्रचार को टेप रिकार्ड कर लोगों को सुनवाया था।

इन तीन भाइयों पर "मनोरंजन" और "कला" की आड़ में सुसमाचार प्रचार करने का भी आरोप लगाया गया था। इस प्रकार गुप्त चर्च आरम्भ की रोम कलीसिया की तरह तहखाने में काम करता है।

"सोवितस्किया मोल्डाविया" के सितम्बर १५, १९६६ के अंक में आया था कि गुप्त चर्च छोटी पुस्तिकाएं छापता है, जगह जगह सदस्य जमा होते हैं, यह सब कानूनी आज्ञा से मना होने पर भी होता है।

इसी अखबार में आया था कि रेनी से चिसऐनी जाने वाली गाड़ी में तीन युवक और चार युवतियों ने मसीही भजन "गाया" "चलो समर्पण कर दें अपना जीवन मसीह पर।" संवाददाता स्वयं क्रोधित हुआ क्योंकि विश्वासी लोग सड़कों, स्टेशनों और बसों में प्रचार करते हैं।

जब इन मसीहियों पर अदालत में दोष लगाया गया कि सार्वजनिक स्थानों में ये लोग मसीही भजन गाते हैं ये दोषी ठहराये गये और इन्हें सजा मिली। परन्तु ये लोग घुटने टेक कर कहने लगे "अपने आपको हम परमेश्वर के हाथ सौंपते हैं। धन्यवाद करते है कि हमें प्रभु के विश्वास के कारण यातना मिली।" तब दर्शकों में से बहुतों ने अदालत के कमरे में वही भजन गाया जिस कारण इन मसीहियों को सजा मिल रही थी।

मई १ को कोपसीएग और ज़हारवोका गांवों के मसीही ने जहाँ चर्च नहीं थे, गुप्त आत्मिक सभाएं जंगल में आयोजित कीं।

जन्म दिन का बहाना करके कई मसीही घराने प्रार्थना सभा करते हैं। इस प्रकार चार-पांच सदस्य के कुटुम्बों में लगभग पैंतीस जन्म दिन मनाये जाते हैं।

प्रावदा उकरानी के अक्टूबर ४, १९६६ के अंक में भाई प्रोकोफीव गुप्त चर्च के एक अगुवे के बारे में छपा कि यह व्यक्ति तीन बार जेल जा चुका है परन्तु जैसे ही रिहा किया जाता है वैसे ही संडे स्कूल का संगठन शुरू कर देता है। अब उसे फिर गिरफ्तार कर लिया गया है।

उसने गुप्त लेख में लिखा: "कम्युनिस्ट कानूनों की पावन्दी से सरकारी चर्च पर से परमेश्वर की आशिष उठ गई है।"

रूसी मसीह जब सजा पाकर जेल में जाता है तो उसे भूख, यातना और ब्रेनवॉशिंग का सामना करना होता है।

विज्ञान और धर्म नं० ९, १९६६ के अंक में आया कि मसीही "लुक" और "टाईम" पत्रिकाओं के आवरण में सुसमाचार और अन्य साहित्य वितरण करते हैं। वे पुस्तकों के बीच में बाइबल के हिस्से रखकर बांटते हैं। "एन्ना क्रीना" तोल्सतोय की पुस्तक में वे बाइबल के हिस्से रखकर बांटते हैं।

वे "कम्युनिस्टवाद अंतर्राष्ट्रीय" की राग में मसीही गीत गाते हैं। (यह खबर "काजआक्स्टअंकिया प्रवदा" में जून ३०,१९६६ के अंक में आई)

कुलन्दा (साइबेरिया) के मसीहियों द्वारा गुप्त पत्रों में प्रकाशित किया गया कि सरकारी बेपटिस्ट चर्च के लोगों ने चर्च की आत्मा को नष्ट कर दिया है कार्यकर्त्ताओं पर दोष लगाया है जिस प्रकार महा-याजकों, फरीसियों और सदूकियों ने यीशु मसीह के ऊपर पीलातुस के सामने झूठा दोष लगाया था।

परन्तु मसीह की दुलहिन गुप्त कलीसिया, अपने कार्य में लगी हुई है। कम्युनिस्ट भी स्वीकार करते हैं कि गुप्त चर्च कम्युनिस्टों को मसीही बनाते हैं! कम्युनिस्टों को जीता जा सकता है!

"बाकू का मजदूर" पत्रिका के अप्रैल २७, १९६६ अंक में तानिया सिगुनोवा जो कम्युनिस्ट युवक संघ का सदस्य था इसकी चिट्ठी छापी। इसने मसीह पर विश्वास किया था। बाद में यह पत्र कम्युनिस्ट अधिकारियों ने जब्त कर लिया :

"प्रिय नादिया चाची, अपने प्यारे प्रभु की ओर से आशिष भेज रहा हूं। वह मुझसे कितना प्रेम करता है! हम कुछ भी नहीं हैं। चाची, मेरा विश्वास है कि आप इन शब्दों को समझती हैं : 'अपने शत्रुओं से प्रेम करो जो तुम्हें अभिशाप देते हैं उन्हें आशिष दो, जो तुमसे घृणा करते हैं उनसे अच्छाई करो और जो तुमसे बुरा व्यवहार करते हैं उनके लिए प्रार्थना करो।"

इस पत्र के जब्त होने के बाद, पीटर सेरीब्रीनकोव जो चाची और दूसरे युवक कम्युनिस्टों को मसीह के पास लाया था। जेल में ठूंस दिया गया। कम्युनिस्ट समाचार पत्रों में पीटर के उपदेशों से अवतरण लेकर छापे गये : "हमें अपने उद्धारकर्त्ता पर विश्वास करना चाहिये जिस प्रकार आरम्भ के मसीही करते थे। हमारे लिए मुख्य वाचा बाइबल है। इसके अलावा हम किसी को नहीं मानते। हमें युवा लोगों को पाप से बचाने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है।" जब उससे कहा गया कि युवा लोगों को मसीह के बारे में बताना अपराध है, उसने उत्तर दिया, "हमारे लिए केवल बाइबल ही कानून है।" यह उत्तर बिलकुल साधारण था जहां नास्तिकवाद की तानाशाही का राज्य है। इसके बाद कम्युनिस्ट समाचार पत्र एक "भयंकर" चित्र खींचते हैं : "युवा लोग आत्मिक भजन गाते हैं। वे विधिपूर्ण बपतिस्मा लेते और अर्थहीन प्रेम को महत्त्व देते हैं कि शत्रु से प्रेम करो।"

"वाकिनतसिकी राबोकी" लिखता है कि बहुत से युवक और युवतियां

जो कम्युनिस्ट युवा लीग के सदस्य बने रहते हैं वास्तव में वे मसीही होते हैं। उसने लेख में यह लिखा : 'कम्युनिस्ट स्कूल कितना शक्तिहीन है, कितना नीरस और अंधकारमय है। पास्टर इन शालाओं से शिक्षकों के हाथों से लोगों को छीन लेते हैं।"

"कजकस्तानस्किया प्रावदा" के जून ३०, १९६६ के अंक में इस पर आश्चर्य प्रगट किया गया कि प्रथम उत्तीर्ण होने वाला छात्र एक मसीही बालक था।

""किरगिज किया प्रावदा" के जनवरी १७, १९६६ के अंक में छापा गया कि गुप्त चर्च ने माताओं को मसीही परचे पहुंचाये : "आइये अपनी प्रार्थना और प्रयत्नों द्वारा अपने बच्चों का जीवन परमेश्वर के लिए समर्पित करें ! अपने बच्चों को इस दुनियां के असर से बचाइये।"

ये प्रयत्न सफल रहे हैं ! कम्युनिस्ट समाचार पत्र इसके गवाह हैं। मसीही धर्म युवा लोगों में फैल रहा है।

एक सिलिबिन्सक का अखबार बयान करता है कि एक कम्युनिस्ट लीग की बालिका नीना किस प्रकार एक गुप्त सभा में जाकर मसीही बनी।

"सोवियतस्किया अस्टटिया" नं० ९, १९६६ अंक बतलाता है कि गुप्त सभा किस प्रकार होती है। "यह मध्य रात्रि में, नीचे छोटे से कमरे में होती है। लोग से खामोशी से यहां जमा होते हैं। विश्वासी भाई लोग इस अंधेरे से कमरे में इतने हो जाते हैं कि घुटने टेकने के लिये स्थान नहीं रह जाता। ताजी हवा की कमी से पुराना गैस लेम्प बुझ जाता है। लोग पसीने-पसीने हो जाते हैं। सड़क पर कोई एक भाई पुलिस वालों को देखता रहता है।" परन्तु नीना ने बताया कि इस प्रकार की सभा में उसे सारा सुख मिला। "उनका विश्वास महान है परमेश्वर में अब यही मेरा भी विश्वास है। परमेश्वर अपनी सुरक्षा में ले लेता है। लोग जो मुझे जानते हैं, मुझे बिना सलाम किये निकल जाते

दो। उन्हें मेरी ओर घृणा से देखने दो उन्हें ऐसा करने दो! मुझे उनकी आवश्यकता नहीं।"

बहुत से युवा कम्युनिस्टों ने मसीही सेवा करने का निश्चय किया है। गुप्त चर्च के मसीही लोगों के कम्युनिस्ट अदालतों में उत्तर आत्मिक प्रेरणा देते हैं। एक न्यायधीश ने पूछा : "आप इस गैर कानूनी धर्म की ओर लोगों को किस प्रकार आकर्षित करते हैं?" एक मसीही महिला ने उत्तर दिया "हमारा लक्ष्य सारी दुनियां को मसीह के लिये जीतने का है।"

"आपका धर्म विज्ञान-विरोधी है," न्यायाधीश ने एक युवती से अन्य मुकदमे में कहा। युवती ने उत्तर दिया, "क्या आप आइंस्टिन से अधिक साइंस जानते हैं? क्या आप न्यूटन से अधिक जानते हैं? वे विश्वासी थे। हमारी दुनिया पर उनकी छाप है।

मैंने हाई स्कूल में सीखा है कि उसका नाम आइंस्टिन संसार है। आइंस्टिन लिखता है : 'यदि हम नबियों का यहूदी मत और मसीहीयत, जैसी यीशु ने सिखाई और बाद में धर्मगुरुओं द्वारा सिखाई गई अमल करें तो हमारे पास यह ऐसा धर्म है जो दुनिया को सारी सामाजिक बुराइयों से बचा सकता है।' अपने महान वैज्ञानिक पावलोव को याद करिये! क्या हमारी पुस्तकें नहीं बतातीं कि वह मसीही था। मार्क्स ने 'दास कैपीटल' की प्रस्तावना में लिखा है : 'पाप द्वारा दूषित चरित्रों के पुनर्निर्माण के लिये मसीहियत, विशेष रूप से प्रोटेस्टेंट रूप आदर्श धर्म है। मेरा चरित्र पाप से दूषित था। मार्क्स से ही मैं सीखती हूं कि चरित्र निर्माण के लिए मसीही बनना चाहिये। आप मार्क्सवादी हैं, किस प्रकार मेरा न्याय करेंगे?"

समझना सरल है, न्यायाधीश क्यों चुप रह गया।

इसी प्रकार मसीहियत को विज्ञान-विरोधी का दोष लगाने में एक विश्वासी ने अदालत में कहा : मुझे विश्वास है, माननीय न्यायधीश जी कि

आप सिम्पसन के समान महान वैज्ञानिक नहीं हो सकते, जिसने क्लोरोफॉर्म और अन्य दवाओं का आविष्कार किया। जब उससे पूछा गया कि सबसे बड़ा आपका आविष्कार कौन सा है तो उसने कहा : 'क्लोरोफार्म का आविष्कार नहीं है। परन्तु मेरी सबसे बड़ी खोज है कि मैं एक पापी हूं और केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही उद्धार पा सकता हूं।"

जीवन, आत्म त्याग, रक्त बहाने की तत्परता गुप्त चर्च की मसीहियत का सबसे बड़ा प्रमाण है। एलबर्ट सुइटज़र ने कहा "वह पवित्र भाईचारा जिसपर दुख की छाप है," इस चर्च के लोग यीशु की संगति में हैं जो दुखी पुरुष था। गुप्त चर्च, उद्धारकर्त्ता के नाम में प्रेम के बन्धन से संयुक्त हुआ है। इसलिये इसका दमन असम्भव है।

गुप्त चर्च ने अपने एक लेख में लिखकर भिजवाया : "हम केवल अच्छे मसीही होने की प्रार्थना नहीं करते, परन्तु वह मसीही बनना चाहते हैं जैसा कि परमेश्वर चाहता है। यीशु जैसे मसीही, वे मसीही जो खुशी से परमेश्वर की महिमा के लिए क्रूस उठा सकें।" गुप्त चर्च के मसीही अदालत में, अपने अगुवे का नाम नहीं बताते।

प्रावदा वोस्टोका (पूर्व की सत्यता) जनवरी १५, १९६६ के अंक में छपा था कि एक मसीही महिला मारिया सेवक्युक से अदालत में प्रश्न करने पर उसने कहा : "परमेश्वर ने मुझे कलीसिया में आकर्षित किया।" दूसरे प्रश्न पर कि उसका अगुवा कौन है उसने उत्तर दिया "कोई मनुष्य हमारा अगुवा नहीं है।"

मसीही बच्चों से पूछा जाता है, "तुम्हें कम्युनिस्ट क्लब छोड़ने और लाल टाई न पहिनने को कौन कहता है ?" बच्चे उत्तर देते हैं, "हम स्वतंत्र इच्छा से ऐसा करते हैं। किसी ने हमें नहीं सिखाया।"

मसीही अपने अगुओं को गिरफ्तार होने से बचाने के लिये गुप्त रीति से बपतिस्मा लेते हैं। कई स्थानों पर बपतिस्मा लेने और देने वाला दोनों मुखावरण का उपयोग करते हैं। जिससे कोई इनकी तस्वीर न खींच सके।

"यूम्बिटइलस्किया गेजटा" जनवरी ३०, १९६४ के अंक में, गांव वोरोनिन में, नास्तिकवाद के ऊपर हुए भाषण के बारे में छपा। जैसे ही भाषण समाप्त हुआ, "विश्वासी नास्तिकवाद पर प्रश्न करने लगे," जिसका उत्तर नास्तिकवाद के शिक्षक नहीं दे सके। उन्होंने पूछा, "आप कम्युनिस्ट लोगों को नैतिक सिद्धान्त कहां से मिलते है ? परन्तु आप उन्हें नहीं मानते जैसे चोरी न करना, खून नहीं करना ?" मसीहियों ने सिद्ध किया कि ये सिद्धान्त बाइबल के हैं जिनका विरोध कम्युनिस्ट कर रहें हैं। कम्युनिस्ट वक्ता घबरा गया, सभा समाप्त हो गई। विश्वासियों की विजय हुई।

गुप्त चर्च पर अत्याचार बढ़ रहा है

गुप्त चर्च के मसीही आजकल पहिले से अधिक यातना भुगत रहे हैं। सारे धर्मों का रूस में दमन किया जा रहा है। मसीहियों के लिए, यहूदियों पर कम्युनिस्टों द्वारा अत्याचार की खबर दिल तोड़ने वाली होती है। परन्तु गुप्त चर्च कम्युनिस्टों का मुख्य लक्ष्य है। सोवियत प्रेस में हजारों बन्दी बनाये जाने और मुकदमें चलाये जाने की खबरे छपती हैं। एक स्थान पर बयासी मसीहियों को पागलखाने में डाल दिया गया। जिसमें से चौबीस तो कुछ दिनों बाद प्रार्थना करते हुए मर गये।

सबसे कठोर सजा उस समय दी जाती है जब सरकार को यह मालूम हो जाये कि मां-बाप अपने बच्चों को मसीही धर्म की शिक्षा देते हैं। बच्चों को इन माता-पिताओं से अलग कर दिया जाता है और वे बच्चों से मिल नहीं सकते।

सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्र की घोषणा पत्र पर जिसमें "शिक्षा में पक्षपात न हो" हस्ताक्षर किये। इस घोषणा पत्र में लिखा है : "माता पिता अपने विश्वास के अनुसार अपने बच्चों को धार्मिक और नैतिक शिक्षा देने का अधिकार रखते है।" विश्वासघाती, कारेव जो सोवियत संघ में सरकारी वेपरिस्ट संगठन का नेता है, उसका कहना है कि उसमें अधिकार एक स्वभाविक बात है। जो असलियत नहीं जानते इस पर विश्वास कर लेते हैं। अब सुनिये सोवियत प्रेस क्या कहती है।

"शावेटस्किया रूस" के जून ४, १९६३ के अंक में छपा कि मकरिनकौवा नाम की स्त्री से सरकार ने किस प्रकार छै बच्चे छीन लिये क्योंकि इस स्त्री ने कम्युनिस्ट टाई पहिनने से अपने बच्चों को मना किया था। और मसीही धर्म की शिक्षा दी थी।

जब उसने अदालत का फैसला अपने बारे में सुना तो उसने कहा : "मुझे मेरे विश्वास के लिये दुख उठाना पड़ रहा है।" इस वृद्धा को बच्चों का खर्चा भी उठाने को कहा गया। उन बच्चों का मन नास्तिक-वाद के जहर से भ्रष्ट कर दिया गया। मसीही माताओ, इस मां के दुख की कल्पना कीजिये !

"यूसिटएलसकिया गजट" में छपा कि इसी प्रकार की घटना इगनाती म्यूलिन और उसकी पत्नी के साथ हुई। न्यायालय ने इस दम्पति से उनके विश्वास और उनकी बेटी में से, किसी एक को चुनने को कहा। और इन्होंने अपने विश्वास को नहीं छोड़ा।

पौलुस ने कहा : "सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं.....।" मैंने देखा है कि बच्चे जो मसीही शिक्षा अपने माता-पिता से प्राप्त करते थे उन्हें कम्युनिस्ट शालाओं में डाल दिया गया। इन शालाओं में मसीही बच्चों ने नास्तिकवाद न सीखते हुए मसीही धर्म दूसरे बच्चों तक पहुंचाया।

बाइबल कहती है जो यीशु मसीह से अधिक अपने बच्चों से प्रेम करता है वह मसीह के योग्य नहीं है। कम्युनिस्ट देशों में इन शब्दों का अर्थ पूरी रीति से समझ में आता है।

केवल प्रोटेस्टेंट गुप्त चर्च नहीं परन्तु ऑरथोडॉक्स मसीही भी रूस में समय के अनुसार परिवर्तित हो गये हैं। उनमें से हजारों रूसी जेल भुगत चुके हैं। वहां उनके पास मालायें, क्रूस, मूर्तियां, सुगन्ध, मोमबत्तियां नहीं होती और न कोई प्रार्थना पुस्तक पढ़ने के लिये होती। उन्होंने यह जान लिया है कि परमेश्वर से प्रार्थना द्वारा सीधा सम्पर्क साधा जा सकता है। उन्होंने प्रार्थना आरम्भ की और परमेश्वर ने

अपनी आशिष उन पर उंडेली। एक सच्ची आत्मिक जागृति जो बुनियादी मसीहियत के समान है, ऑरथोडॉक्स मसीहियों में आ रही है।

रूस और अन्य योरोपीय कम्युनिस्ट देशों में ऑरथोडॉक्स मसीही गुप्त चर्च भी हैं, जो स्वभाव से प्रचारक कलीसियाओं के तुल्य हैं। ये चर्च नाममात्र की चर्च विधियां पूरी करते हैं। इस कलीसिया में से कई शहीद हुए हैं। कोई नहीं जानता कलुगा के वृद्ध आर्चबिशप यरमोजन कहां हैं? इस वृद्ध पुरुष ने पित्र प्रणाली में सरकारी घुसपेठ के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी।

आधी शताब्दी तक कम्युनिस्ट शासन होने के बाद भी प्रेस पर गुप्त चर्च की विजय का झंडा लहराता है। गुप्त चर्च को जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है उनका वर्णन नहीं हो सकता परन्तु इनका विश्वास दृढ़ है···बढ़ रहा है।

हमने रूमानियां में, रूसी फौज में मसीही बीज बो दिया है। रूस और अन्य कम्युनिस्ट देशों में भी रहस्यमयी ढंग से बीज बो दिया गया है।

कम्युनिस्ट देश मसीह के लिये जीते जा सकते हैं। कम्युनिस्ट भी मसीही बनाये जा सकते हैं।

मैं ठीक कह रहा हू इसका प्रमाण यह है कि गुप्त चर्च रूस, चीन और लगभग सारे कम्युनिस्ट देशों में पनप रहा है।

गुप्त चर्च की आत्माओं की सुन्दरता का वर्णन करने के लिये मैं कुछ चिट्ठियों को देता हूं। हाल ही में रूसी बन्दीगृहों से आई हैं।

वारिया, एक कम्युनिस्ट युवती ने मसीह को स्वीकार किया, गवाही दी और कड़ी मजदूरी की दास्ता में बन्ध गई।

मारिया द्वारा लिखित तीन पत्र जो उसने वारिया को लिखे जिससे वह मसीह को उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर सकी।

पहिला पत्र

"···मैं यहां रह रही हूं। मुझे सब चाहते हैं। कोमसोल (कम्युनिस्ट युवक संघ) की एक सदस्य वारिया भी मुझसे प्रेम करती है। वारिया ने मुझसे कहा; 'मैं नहीं समझ सकती, तुम कैसी लड़की हो। यहां कई व्यक्ति तुम्हारी निन्दा करते हैं, तुम्हें दुख देते हैं इसके अतिरिक्त भी तुम उनसे स्नेह रखती हो।' मैंने उसे बताया कि परमेश्वर ने हमें केवल अपने मित्रों को ही नहीं परन्तु शत्रुओं को भी प्रेम करना सिखाया है। इससे पहले इस युवती ने मुझे कई प्रकार से नुकसान पहुंचाया। मैंने विशेष रूप से इसके लिये प्रार्थना की थी। उसने मुझसे पूछा क्या मैं उससे भी प्रेम कर सकती हूं। मैंने उसे गले लगा लिया। हमारे आंसू निकल आये। अब हम दोनों साथ प्रार्थना करते हैं।

कृपया वारिया के लिये प्रार्थना कीजिये।

जब आप लोगों द्वारा परमेश्वर का खुला विरोध देखते हैं तो लगता है कि सचमुच में वे ऐसा ही सोचते हैं। परन्तु उनका जीवन दिखाता है कि उसमें से बहुत से दिल में परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं। आप दिल की आह पहचान लेते हैं। ये मनुष्य कुछ चाहते हैं और अपनी शून्यता को परमेश्वर का विरोध करके प्रगट करते हैं।

मसीह में आपकी बहिन, **मारिया**"

दूसरा पत्र

"मेरे इससे पहिले पत्र में मैंने नास्तिक लड़की वारिया के बारे में बताया। मेरे स्नेहियो, अब मैं अपने बड़े आनन्द के बारे में बताऊंगी। वारिया ने मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार कर लिया है और आजादी से इसकी गवाही देती है।

जब उसने मसीह को स्वीकार किया और उद्धार को जाना वह

प्रसन्न होने के अतिरिक्त अप्रसन्न भी हुई क्योंकि पहिले वह कहा करती थी परमेश्वर नहीं है, अब वह इसके विपरीत गवाही देगी।

हम वारिया के साथ नास्तिकों की सभा में गये। सभा से पहिले मैंने उसे शान्त रहने को कहा था परन्तु मेरी बात पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। कम्युनिस्ट गीत समाप्त होने के बाद (जिसमें वारिया ने हिस्सा नहीं लिया।) उसने कुछ बोलने की आज्ञा माँगी। वह सभा के सामने पूरे साहस से खड़ी हुई और मसीह उसका उद्धारकर्त्ता है, इसकी गवाही दी। अपने कामरेड साथियों से क्षमा मांगती हुई बोली कि उसकी आत्मिक आँखें बन्द थीं और वह अपने साथ दूसरों को भी विनाश की ओर ले जा रही थी। उसने सारे उपस्थित लोगों से पाप का मार्ग छोड़कर प्रभु यीशु के पास आने का आग्रह किया।

सब शान्त हो गये किसी ने उसका विरोध नहीं किया। बोल चुकने के बाद उसने अपनी सुरीली आवाज से मसीही भजन गाया: 'मुझे शर्म नहीं मसीह के नाम लेने में, जिसने क्रूस में शक्ति के लिये अपनी जान दी।'

इसके बाद वे वारिया को न जाने कहाँ ले गये। आज मई की ८ तारीख है। हमें उसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम। परन्तु परमेश्वर महान है उसकी सुरक्षा करेगा। उसके लिये प्रार्थना कीजिये!

आपकी मारिया"

तीसरा पत्र

"कल, अगस्त २, को जेल में मेरी वारिया से बात हुई। जब मैं वारिया के बारे में सोचती हूं मेरा मन बहुत दुखी होता है। वह उन्नीस वर्ष की भोली सी बच्ची है। विश्वास में भी बच्ची ही है। परन्तु प्रभु से प्रेम करती है और आरम्भ में ही उसे कठोर अवस्था से गुज़रना पड़ रहा है। हमने उसे कुछ पार्सल भेजे परन्तु उसे उनमें से बहुत कम मिले।

उसे जब मैंने कल देखा वह दुबली पतली पीली पड़ गई है। परन्तु उसकी आंखों में परमेश्वर की शांति दिखाई पड़ती है।

मेरे स्नेहियो, यह बात केवल वे ही समझ सकते हैं जो मसीह यीशु की शान्ति का अनुभव कर चुके हैं। वे कितने प्रसन्न हैं जो मसीह यीशु की शांति का अनुभव कर रहे हैं। हम जो मसीह में हैं उन्हें निराशा और यातना हमारे विश्वास से नहीं डिगा सकती।

मैंने वारिया से जेल में पूछा, जो कुछ तुमने किया उस पर तुम क्या पछताती हो ?" 'नहीं' उसने उत्तर दिया। यदि वे मुझे रिहा कर देंगे तो फिर से उसी प्रकार कहूंगी कि मैं मसीह के महान प्रेम में हूं। मत सोचिये कि मैं दुखी हूं। मैं खुश हूं कि प्रभु ने मुझसे इतना प्रेम किया कि यातनाओं में भी मैं उससे प्रेम करना नहीं भूली।'

मैं दिल से यह आग्रह करती हूं कि आप वारिया के लिए विशेष रूप से प्रार्थना कीजिये। शायद उसे साइबेरिया भेज दिया जायेगा। उसका सारा सामान कपड़े आदि उन्होंने छीन लिये हैं। जो वह पहनी हुई है वही कपड़े हैं, बस। उसके निकट सम्बन्धी भी नहीं हैं, उसके लिये आवश्यक सामग्री हमें ही जुटाना है। जो सहायता आपने मुझे उसके लिये भिजाई थी वह मैंने उसे दे दी है। अगर वह बाहर भेजी गई तो मैं उसे सारी वस्तुएं दे दूंगी। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर उसे भविष्य में भी यातना सहने की शक्ति देगा। परमेश्वर उसे अपने में रखे !

आपकी मारिया"

चौथा पत्र

"प्रिय मारिया, आखिर मैं इस योग्य हो ही गई कि मैं तुम्हें लिख सकूं। हम···पहुंच गये। हमारा केम्प शहर से लगभग दस मील पर है। मैं अपने यहां के जीवन का वर्णन करने में असमर्थ हूँ। तुम जानती हो। कुछ थोड़ा ही लिख सकूंगी। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने मुझे

शारीरिक रूप से सही सलामत रखा है कि मैं परिश्रम कर सकू । मैं और मेरी बहिन···को वर्कशाप में मशीनों पर काम करना पड़ता है। बहिन का स्वास्थ्य ठीक नहीं है इसलिये मेरा और उनका दोनों के काम मुझे करने पड़ते हैं। हम बारह तेरह घंटे काम करते हैं। हमें उतना ही कम खाना मिलता है जितना तुम्हें।

मेरा मन परमेश्वर की स्तुति करता कि उसने तुम्हारे द्वारा उद्धार का मार्ग दिखाया। इस मार्ग पर मैं जानती हूं कि मेरे जीवन का एक अर्थ है। मैं जानती हूं मुझे कहां जाना है मैं किसके लिये यातना भोग रही हूं। मैं अधिक से अधिक लोगों के सामने उद्धार के आनन्द की चर्चा करना चाहती हूं। हमारे मसीह में परमेश्वर के प्रेम को कौन समाप्त कर सकता है ? कोई नहीं, कुछ भी नहीं। जेल भी नहीं, यातनाएं भी नहीं। जो यातनाएं परमेश्वर हमारे ऊपर भेजता है उससे हमारा विश्वास उसमें और दृढ़ होता है। मेरा मन परमेश्वर की महिमा से भरा हुआ है। वे मुझे बुरे शब्द, सजा और अधिक कार्य करने को देते हैं क्योंकि मैंने गवाही देनी बन्द नहीं की है। जब मैं सर्वनाश की ओर चली जा रही थी, प्रभु ने मुझे नया बना दिया। इसके बाद क्या मैं खामोश हो सकती हूं। नहीं, कभी नहीं। जब तक मुझ में बोलने की शक्ति है तब तक मैं उसके महान प्रेम की गवाही देती रहूंगी।

केम्प जाते समय, हमें बहुत से भाई बहिन जो मसीह में विश्वास रखते हैं मिले। कितने आश्चर्य की बात है कि हम उन्हें देखते ही पहिचान गये कि ये लोग विश्वासी हैं। एक स्टेशन पर, कोई महिला आई हमें कुछ खाने की सामग्री दी और केवल ये शब्द कह कर चली गई : "परमेश्वर जीवित है।"

कैम्प में हम रात में पहुंचे। हमें तहखाने में ले जाया गया। जो लोग वहां पहिले से ही थे उन्होंने हमें 'आत्मिक शांति आप के साथ बनी रहे' शब्दों से स्वागत किया। पहिली ही शाम से हमें लगा जैसे

हम एक ही परिवार के सदस्य हैं।

कैंम्प में बहुत से सदस्य हैं जो मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता मानते हैं। आधे से अधिक बन्दी विश्वासी हैं। हमारे बीच में बहुत अच्छे वक्ता और गाने वाले हैं। कठोर परिश्रम के बाद जब हम सब विश्वासी प्रार्थना में सिर झुकाते हैं तब हमारे आनन्द की सीमा नहीं होती। मसीह पर विश्वास प्रत्येक स्थान पर स्वतंत्र रखता है। यहाँ पर मैंने बहुत से मसीही गीत सीख लिये हैं। प्रति दिन परमेश्वर के वचन में से सुनने को मिलता है। उन्नीस वर्ष की अवस्था में पहिली बार मैंने यीशु का जन्म दिन मनाया। इस दिन को मैं कभी नहीं भूल सकती। हम में से कुछ भाई दिन में नदी पर गये बर्फ तोड कर स्थान बनाया और परमेश्वर के वचन के अनुसार सात भाइयों को और मुझे रात में बपतिस्मा दिया गया। मैं कितनी प्रसन्न हूं, इसकी कल्पना करना कठिन है! मारिया, काश तुम यहां देखतीं और मैंने जो तुम्हारे विरुद्ध अनुचित बातें की थीं उसका प्रायश्चित मैं किसी हद तक कर सकती। परमेश्वर हमें चाहे जिस भी स्थान पर रखे हमें उसमें दृढ़ रहना चाहिये।

मसीही परिवार को शुभ कामनाएं दो। परमेश्वर हमारे कार्य पर आशिष दे। वह मुझे भी आशिष देता है। कृपया इब्रानियों १२ : १-३ पढ़िये।

यहाँ से सारे भाई बहिन भी शुभकामनाएं भेज रहे हैं। और प्रसन्न हैं कि आपका परमेश्वर में इतना दृढ़ विश्वास है कि हजार मुसीबत झेलने पर भी आपके मुंह से प्रभु की प्रशंसा निकलती है। अगर आप दूसरों को लिखें तो हमारी शुभ कामनाएं भी दें।

आपकी, वारिया"

पांचवां पत्र

"प्रिय मारिया, आखिर मुझे तुम्हें कुछ लिखने का अवकाश मिल ही गया। परमेश्वर की कृपा से हम और वह बहिन सही सलामत हैं।

अब हम···में हैं। वे लोग हमें यहां ले आये हैं।

तुम्हारे मेरे प्रति माता जैसे प्रेम के लिये मैं धन्यवाद देती हूं। जो सामान भेजा था वह मिल गया। सब से अमूल्य भेंट बाइबल के लिये धन्यवाद। जिन्होंने मेरी सहायता की थी उन्हें मेरी ओर से शुभ कामनाएं देना।

जब से प्रभु का पवित्र प्रेम का गहरा रहस्य मुझे ज्ञात हुआ तब से अपने आपको दुनिया में सबसे प्रसन्न प्राणी समझती हूं। जो अत्याचार मुझे सहने पड़ते हैं वे केवल दया समझती हूं। मैं खुश हूं कि विश्वास लाने के पहिले ही दिन से मुझे उसके लिये दुख सहना पड़ा। मेरे लिये आप सब लोग प्रार्थना कीजिये कि अन्त तक प्रभु की विश्वासी बनी रहूं।

आत्मिक संघर्ष के समय में प्रभु आपको सामर्थ दे।

हमें अब···भेजा जा रहा है। शायद अवसर मिलेगा, फिर लिखूंगी। हमारे बारे में चिन्ता न कीजिये। हम प्रसन्न और मगन हैं क्योंकि हमारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। मत्ती ५ : ११-१२

आपकी वारिया"

यह वारिया का अन्तिम पत्र था। इस जवान कम्युनिस्ट लड़की ने प्रभु को स्वीकार किया था, उसकी गवाही दी। उसे दासता श्रम में डाल दिया गया। इसके बाद उसकी कोई खबर नहीं है। इस युवती का प्रभु के लिये प्रगाढ़ प्रेम, कम्युनिस्ट देशों के ईमानदार गुप्त चर्च की सच्चाई का सबूत है।

७

गुप्त चर्च की ओर से मेरा सन्देश

मुझे "गुप्त चर्च की आवाज कहा गया।" मैं नहीं सोचता कि मैं मसीह की देह की आवाज कहलाने योग्य हूं।

कम्युनिस्ट देशों में गुप्त चर्च के कुछ हिस्सों का वर्षों तक मैंने नेतृत्व किया। चौदह वर्षों तक जिसमें दो वर्ष "मृत्यु कक्ष" के भी शामिल हैं, मैंने क्रूर यातनाओं का बन्दी जीवन व्यतीत किया। बड़े चमत्कार से, परमेश्वर ने मुझे बन्दीगृह से बाहर निकाला। मुझे पश्चिमी देशों में भेजा ताकि मैं आजाद देशों के चर्च से सच्चाई कह सकू।

रूमानियां के गुप्त चर्च ने निर्णय किया कि मुझे रूमानियां के बाहर निकलना चाहिए ताकि मैं आजाद देशों की कलीसियाओं में उनका सारा वर्णन करूं। कम्युनिस्ट देशों के मसीहियों को किस प्रकार सताया जाता है। गुप्त चर्च के मसीही किस प्रकार जान पर खेल कर प्रचार कर रहे हैं। यातना सह रहे हैं, और मारे जा रहे हैं।

मैं गुप्त चर्च से यह सन्देश लाया हूं।

"हमें न भूलिये!"

"हमें न छोड़िये!"

"हमें धकार न समझिये!"

"हमें उपयोगी हथियार दीजिये! हम उनकी कीमत चुका देंगे।"

यह सन्देश है जिसे मुझे आपको देना था। मैं उस बेआवाज और खामोश करा दिये गये गुप्त चर्च की ओर से आपसे बोल रहा हूं।

कम्युनिस्ट देशों में अपने सताये जाने वाले भाइयों और बहिनों की दर्द भरी पुकार सुनिये। वे वहां से न भाग निकलना, न सुरक्षा और न ही आराम चाहते हैं परन्तु वे अपने जवानों के मनों को कम्युनिस्ट विष से बचाना चाहते हैं। आने वाली पीढ़ी को नास्तिकवाद से सुरक्षित रखना चाहते है । वे बाइबल चाहते हैं जिससे प्रचार कर सकें। वे बिना बाइबल के किस प्रकार परमेश्वर का वचन फैला सकते हैं।

गुप्त चर्च उस डाक्टर के समान है जो रेलयात्रा कर रहा था। वह रेलगाड़ी दूसरी रेलगाड़ी से टकरा गई। हजारों बुरी तरह घायल हो गये, कई शोचनीय अवस्था में थे। वह डाक्टर घायल लोगों के सामने चिल्लाता फिरा, यदि मेरे पास मेरे यंत्र होते। उन उपयोगी यंत्रों द्वारा बहुतों की जान बचा सकता था। वह जानें बचाना चाहता था परन्तु उसके पास यंत्र नहीं थे। गुप्त चर्च का भी यही हाल है। वे अपना सर्वस्व देने को तैयार हैं। वे शहीद होने के लिये भी तैयार हैं। वे कम्युनिस्ट जेलों में जाने को तैयार हैं। परन्तु केवल इच्छा होने से कुछ नहीं हो सकता जब तक उनके पास यंत्र न हों जिनसे वे कार्य कर सकें। आज़ाद देशों के लोगों से साहसी और दृढ़ विश्वासी गुप्तचर्च का केवल यही आग्रह है : हमें यंत्र दीजिए—सुसमाचार, बाइबल, साहित्य और अन्य सहायता—शेष हम स्वयं देख लेंगे।

आज़ाद मसीही किस प्रकार सहायता कर सकते हैं

प्रत्येक मसीही इस प्रकार की सहायता कर सकता है :

नास्तिक अदृश्य स्रोत की शक्ति को नहीं मानते। इस जगत और जीवन के रहस्य को नहीं जानते। मसीही अपनी आँख से देखकर ही नहीं विश्वास पर भी चल कर उनकी सहायता कर सकते हैं। मसीही लोग अच्छे त्यागी और साहसपूर्ण जीवन बिताकर हमारी सहायताकर सकते हैं। जब जब मसीहियों पर अत्याचार हों तब तब आप प्रदर्शन करके सहायता कर सकते हैं।

आजाद मसीही कम्युनिस्टों की आत्माओं के लिये प्रार्थना द्वारा सहायता कर सकते हैं। ऐसी प्रार्थना अजीब सी प्रतीत हो सकती है। हमने कम्युनिस्टों के लिये प्रार्थना की परन्तु दूसरे दिन उन्होंने हमें और यातना पहुंचाई। परन्तु मसीह की प्रार्थना भी ऐसी ही थी क्योंकि प्रार्थना के बाद उसे क्रूस पर चढ़ाया गया। लेकिन कुछ समय बाद ही उन्होंने छाती पीट-पीट कर शोक मनाया और उसी दिन विश्वास लाये। दूसरों के लिये प्रार्थना बेकार नहीं गई। आपकी प्रार्थना जो आप दूसरों के लिये करते हैं और वह इसे कुछ नहीं समझते, वह प्रार्थना आपके लिये महान आशीषका कारण होती है। कई मसीही लोगों और मैंने हिटलर के लिए प्रार्थना करने में समय लगाया। मेरा विश्वास है कि जितना अलाईड फौज की गोलियों ने हिटलर को हराने में मदद की उतनी ही हमारी प्रार्थनाओं ने भी।

हमें अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करना चाहिये। कम्युनिस्ट हमारे पड़ोसी हैं।

कम्युनिस्ट, मसीह का वचन स्वीकार नहीं करते : "मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।" मसीही लोगों ने अब तक प्रत्येक को बहुतायत का जीवन समझाने का प्रयत्न नहीं किया है। मसीहियों ने बहुतों को थोड़ा सा ज्ञान करा कर छोड़ दिया है। इनमें से बहुतों ने बगावत कर कम्युनिस्ट संघ बना ली। प्रायः ये सामाजिक अन्याय के भी शिकार हैं। अब वे दुष्टता से भर गये हैं। हमें उनसे संघर्ष करना है। परन्तु मसीही लोग किसी से संघर्ष करते हुए भी प्रेम पर से अपनी दृष्टि नहीं हटाते। वे उसे दयापूर्ण दृष्टि से समझने का प्रयत्न भी करते हैं।

जो लोग कम्युनिस्ट बन गये हैं इसका उत्तरादायित्व हम पर भी है। हमने अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं किया।

इसलिये कम्युनिस्टों के सिद्धांत न मानते हुए भी हम मसीही उनसे प्रेम रख सकते हैं। प्रार्थना कर सकते हैं।

मैं नहीं सोचता कि केवल प्रेम से ही कम्युनिस्ट समस्या सुलझ सकती है। चोरी और डकैती के लिये मैं अधिकारियों से कभी नहीं कह सकता कि केवल प्रेम से इस समस्या का हल ढूंढिये। इन अपराधियों के लिये पुलिस, न्यायाधीश और जेल भी होना चाहिये, केवल पास्टरों से ही काम नहीं चल सकता। अपराधी यदि नहीं मानते हैं तो उन्हें जेल भेज देना चाहिये। मैं कम्युनिस्टों को अपराधी ही कहूंगा। एक अपराधी कुछ पैसे की चोरी करता है और कम्युनिस्ट संघ समूचे देश को हड़प जाता है। इसलिये कम्युनिस्टों को अपराधी जानते हुए हम केवल पास्टरों द्वारा ही उन्हें मार्ग पर नहीं ला सकते।

पास्टर और एक मसीही को अपनी सारी शक्ति से कम्युनिस्टों को मसीह के समीप लाना चाहिये। वे कुछ भी अपराध करें परन्तु कम्युनिस्टों और उनके भोले अनुचरों के लिए हमें प्रार्थना की आवश्यकता होती है।

बाइबल और मसीही साहित्य की आवश्यकता है

मसीही जो आज़ाद देशों में है, वे बाइबल और मसीही साहित्य कम्युनिस्ट देशों में पहुंचाकर मदद कर सकते हैं। कम्युनिस्ट देशों में इस साहित्य को सही हाथों मे पहुंचाने के साधन मौजूद हैं। मैं जब से कम्युनिस्ट देशों से बाहर आया हूं, बहुत सा साहित्य भेज चुका हूं। साहित्य सुरक्षित पहुंच चुका है। इसलिये, कैसे पहुंचायें का प्रश्न तो हल हो चुका है परन्तु साहित्य की कमी है। जब मैं रूमानियां में था मैंने स्वयं साहित्य और बाइबल पाई।

कम्युनिस्ट देशों में, कई मसीहियों ने कई वर्षों से बाइबल की प्रतियां भी नहीं देखी हैं।

एक दिन दो देहाती मेरे घर आये। वे सड़क पर जमे हुए बर्फ को साफ़ करने आये थे जिससे कुछ रुपया कमायें और उस रुपये से अपने गांव के लिए एक पुरानी बाइबल मोल ले जायें। मेरे पास अमेरिका से कुछ बाइबल आई थीं, उनमें से एक बाइबल उन्हें दे दी। अपनी आंखों पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने मुझे उसकी कीमत देने की कोशिश की जो उन्होंने बर्फ हटाकर कमाई थी। मैंने कीमत नहीं ली। वे बाइबल लेकर गांव लौट गये। कुछ दिनों बाद मुझे उनका धन्यवाद से भरा हुआ पत्र प्राप्त हुआ। उस पत्र पर तीस गांव वालों के हस्ताक्षर थे। उन्होंने बाइबल को तीस हिस्सों में बांट लिया था और आपस में एक दूसरे से अदला-बदली कर लेते थे।

कितनी मार्मिक बात होती है जब एक रूसी बाइबल का एक पृष्ठ मांगे। उसकी आत्मा को वचन के पढ़ने से शांति मिलती है। वे बाइबल के बदले में अपनी बकरी या गाय दे देते हैं। मैं एक व्यक्ति को जानता हूं जिसने नये नियम की पुस्तक मोल लेने के लिये अपनी शादी की अंगूठी बेच दी। हमारे बच्चों ने बड़े दिन के कार्ड भी नहीं देखे हैं। अगर उनके पास एक कार्ड आ जाये तो गांव के सारे बच्चे जमा हो जायें। और कोई बूढ़ा मनुष्य उन्हें बालक यीशु, पवित्र कुंवारी और उद्धार के बारे में समझा सकता है। केवल बड़े दिन के कार्ड से यह हो सकता है। हम बाइबल और मसीही साहित्य उन्हें भेज सकते हैं।

हम युवा लोगों के लिये विशेष रूप से नास्तिक विरोधी साहित्य तैयार कर सकते हैं जिसे स्कूल और कालिजों के विद्यार्थियों तक पहुंचाया जा सकता है और उन्हें नास्तिकता के जहर से बचाया जा सकता है। कम्युनिस्टों ने "नास्तिक दर्शिका" तैयार की है। जो उनकी बाइबल है। प्रारम्भिक सिद्धान्त बच्चों को और गूढ़ सिद्धान्त जवानों को समझाये जाते हैं। इसलिये हमें मसीही साहित्य प्रकाशित कर उस नास्तिक साहित्य का प्रभाव रोकना चाहिये। यह कार्य हमें तुरंत आरंभ

कर देना चाहिये क्योंकि बिना साहित्य के गुप्त चर्च के हाथ बंधे हुए हैं।

जिन युवा लोगों को भ्रष्ट किया जा रहा है उन्हें हमारा मसीही उत्तर मिलना ही चाहिये। आप लोगों को उस "नास्तिक दर्शिका" का उत्तर तैयार करना चाहिये। साथ में बच्चों की बाइबल और चित्रित साहित्य भी तैयार करना चाहिये।

हमें रेडियो के लिये भी कार्यक्रम प्रसारित करना चाहिये इस प्रकार आज़ाद देशों से हम गुप्त चर्च को आत्मिक भोजन पहुंचा सकते हैं। कम्युनिस्ट सरकार भी छोटे-छोटे स्टेशन बनाकर अपना प्रचार करती है। लाखों रूसियों के पास ये कम्युनिस्ट प्रचार सुनने के साधन हैं। कम्युनिस्ट देशों में यह प्रसारण का द्वार खुला हुआ है। यह एक और मदद का मार्ग आप के लिये खुला हुआ है।

शहीदों के मसीही परिवारों का दुख

हमें शहीदों के परिवारों की सहायता करना चाहिये। हजारों परिवारों को कम्युनिस्ट यातना पहुंचा रहे हैं। किसी मसीही घराने में से एक सदस्य के बन्दी बनाये जाने के बाद, उस घराने की कम्युनिस्टों द्वारा बहुत बुरी दशा की जाती है। इस घराने की सहायता करना गैर कानूनी समझा जाता है। यह कम्युनिस्टों की योजना है कि इस प्रकार के मसीही परिवार को सताया जाये। जब किसी मसीही मनुष्य को जेल में डाला जाता है--यातनाएं दी जाती हैं और वह यदि मर भी जाता है तो यह केवल आरम्भ ही है क्योंकि इसके बाद घराने की पारी आती है। एक के बाद एक घराने के प्रत्येक सदस्य को यातना दी जाती है। मैं एक सत्य आपको बताता हूं कि स्वतंत्र देशों के लोगों की सहायता के के बिना मैं इस समय जीवित नहीं होता और न यह लिखता हुआ होता!

आजकल रूस और कई देशों में मसीही लोगों के विरुद्ध आतंक की लहर सी आई है। मसीहियों को बन्दी बनाया जा रहा है। बहुत शहीद

हो रहे हैं। शहीद तो अपना फल पा जाते हैं परन्तु उनके परिवारों को बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। हम उनकी सहायता कर सकते हैं। हमें अवश्य भूख से पीड़ित सारी पृथ्वी के लोगों की सहायता करना चाहिये। परन्तु उनके लिये सहायता की कल्पना कीजिये जिनके परिवार का सदस्य मसीह के लिये शहीद हो चुका हो या कम्युनिस्ट जेल में बन्द हो ?

उन पास्टरों के दिल में प्रेरणापूर्ण मसीही संदेश हैं उनके दिल में डूबती हुई आत्माओं के लिये प्रगाढ़ प्रेम है परन्तु उनके पास इतने साधन नहीं कि अपना संदेश गांव गांव में पहुंचा सकें। इसलिये इसमें से बहुत से पास्टर अपने तक ही सीमित रह गये हैं क्योंकि लोगों तक पहुंचने के लिये और भोजन आदि के लिये पैसा नहीं है। समीप के देहातों में जो बीस तीस मील पर ही हैं वे आवश्यकता के समय नहीं पहुँच सकते। हमारे पास जब इतना है कि हम उनकी सहायता कर सकते हैं तब क्यों नहीं करते और उन्हें कम्युनिस्ट बन्धन से छुड़ाते। ये पास्टर अपनी आज़ादी को खतरे में डालकर युवा और प्रौढ़ों में सुसमाचार प्रचार करने को तैयार हैं। केवल गुप्त सभाएं ही काफी नहीं हैं। इनके पास साधन अवश्य होने चाहिये जिससे वे सफलतापूर्वक लोगों तक सन्देश पहुंचा सकें।

मसीही स्त्री और पुरुषों की अवश्य सहायता करनी चाहिये। क्योंकि वे मसीही हैं इसलिये बहुत ही कम कमा पाते हैं। जीविका के लिये कमाई पर्याप्त नहीं क्योंकि एक गांव से दूसरे गांव तक जाने में काफी व्यय हो जाता है। हमारी सहायता उनके जीवन निर्वाह में "चमत्कार" का कार्य करेगी।

मेरी रिहाई के बाद योरोपियन मसीही संघ ने शहीदों के घरानों की सहायता की है। जितनी हम सहायता कर सकते हैं उसकी तुलना में अभी कम मदद हुई हैं।

गुप्त चर्च के सदस्य होने के नाते मुझे आप से जो कहना था वह कहा और यातना की छाया में रहने वाले भाइयों की सहायता के लिये अपील की है जिन्होंने मुझे यहां भेजा है।

आपको मैंने कम्युनिस्ट देशों में सुसमाचार पहुंचाने की आवश्यकता

को बताया मैंने आपको मदद करने के ढंग भी बताये जिससे गुप्त चर्च सुसमाचार कार्य पूरी रीति से कर सके।

जब मेरे पैरों में मारा गया तब मेरी जीभ ने आवाज की। क्यों ? जीभ को तो नहीं पीटा गया था। जीभ ने आवाज की क्योंकि जीभ और पैर एक ही देह के अंग हैं। और आप आजाद मसीही लोग उसी मसीह की देह के अंग हैं जिसे कम्युनिस्ट जेलों में पीटा जा रहा है और जान से भी मारा जा रहा है।

क्या आप हमारा दर्द अनुभव नहीं करते हैं ?

आरम्भ के दिनों की कलीसिया आज फिर कम्युनिस्ट देशों में अपनी पूरी सुन्दरता और त्याग के साथ जीवित हो गई है।

गेतसमनी बाग में जब यीशु मसीह दर्द भरी प्रार्थना कर रहा था, तब पतरस, याकूब और यूहन्ना उस महान स्थल के समीप थे। परन्तु वे गहरी नींद में सो रहे थे। आपकी मसीही संस्था उन शहीदों की मसीही कलीसिया की सहायता के लिए क्या-क्या साधन जुटा रही है ? अपने पास्टर से पूछिये कि आपकी कलीसिया कम्युनिस्ट देशों के लिये क्या सहायता पहुँचा सकती है ?

मसीहियों के साथ कम्युनिस्ट देशों में जो अत्याचार हो रहा है और इसका ये मसीही साहस से मुकाबला कर रहें हैं परन्तु क्या आजाद देशों की मसीही कलीसिया सो रही है ?

हमारे गुप्त चर्च के भाई कम्युनिस्टों से साहस पूर्ण संघर्ष कर रहें हैं जैसा कि आरम्भ की कलीसिया ने किया था परन्तु आजाद कलीसिया, पतरस, याकूब यूहन्ना की तरह सो रही है।

क्या आप चैन की नींद सो सकते है जबकि आपके गुप्त चर्च के मसीही भाई सुसमाचार के लिये यातना सह रहे हैं।

क्या आप हमारा संदेश सुनेंगे : हमें याद रखिये हमारी सहायता कीजिये।" ?

"हमें न छोड़िये !"

अब मैंने गुप्त चर्च के भाई बहिनों की ओर से आपको सन्देश दे दिया जो कम्युनिस्ट देशों में नास्तिकता के बन्धन में पिस रहे हैं।

हमारी मुक्त पत्रिका और अधिक जानकारी के लिये कृपया नीचे लिखे पते पर लिखें।

पोस्ट बाक्स ४५३२ नई दिल्ली-१६

यातना पर विजय

लेखक का कहना है, "मैंने कम्युनिस्ट जेलों में मसीहियों के पैरों को २५ किलोग्राम भारी बेड़ियों से जकड़े देखा है। वे उन्हें गर्म लोहे से दागते, मुंह में जबरदस्ती नमक ठूंसकर प्यासा रखते, कोड़े मारते और भूखा रखते हैं। सर्दी में तड़पते हुए भी बन्दी मसीही, कम्युनिस्टों के लिए प्रार्थना करते हैं। मनुष्य की बुद्धि इसे नहीं समझ सकती यह केवल प्रभु यीशु मसीह का प्रेम है जो उनके दिलों में भरा है।"